E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 125 प्रयागराज, गुरूवार 27 अगस्त, 2026 पृष्ठ- 8 मूल्य : 3.00 रूपये

दुनिया का सबसे बड़ा रॉकेट लॉन्च कॉम्प्लेक्स बनाएंगे मस्क,हर साल हजारों स्टारशिप रॉकेट लॉन्च होंगे,मैनहट्टन शहर से 8 गुना बड़ी जमीन पर बनेगा

लुइसियाना। इलॉन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स अमेरिका के दक्षिणी लुइसियाना में दुनिया का सबसे बड़ा रॉकेट लॉन्च कॉम्प्लेक्स बना रही है। इस प्रोजेक्ट पर कंपनी 100 बिलियन डॉलर यानी करीब रु9.50 लाख करोड़ का निवेश करेगी। 'स्टारबेस, लुइसियाना' स्पेसएक्स का दूसरा 'स्टारबेस' कैंपस होगा। यह नया स्पेसपोर्ट लुइसियाना के पिकान आइलैंड पर 1.25 लाख एकड़ में फैला होगा, जो कि न्यूयॉर्क के मैनहट्टन शहर से भी आठ गुना बड़ा है। यहां से स्पेसएक्स के नेक्स्ट-जनरेशन रॉकेट 'स्टारशिप' और ब्रॉडबैंड सैटेलाइट्स को अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। कंस्ट्रक्शन साल 2029 से शुरू होने की उम्मीद है। 3,000 नई नौकरियां मिलेंगी, औसत सैलरी रु88 लाख सालाना होगी-लुइसियाना के गवर्नर जेफ लैंड्री ने इसे राज्य की इकोनॉमी के लिए बड़ा कदम बताया है। लैंड्री के मुताबिक, इस स्पेसपोर्ट से क्षेत्र

में कम से कम 3 हजार से ज्यादा डायरेक्ट नौकरियां पैदा होंगी। यहां काम करने वाले कर्मचारियों की औसत सालाना सैलरी 92,600 डॉलर यानी करीब 88 लाख रुपए होगी, जो वर्मिलियन पैरिश की मौजूदा औसत इनकम से लगभग दोगुनी है। गवर्नर ने कहा, 'यह प्रोजेक्ट रोजगार, समुदायों के लिए प्रगति और हमारे तटीय इलाकों के लिए सुरक्षा लेकर आएगा।' 'सेल्फ-सस्टेनिंग' होगा कैंपस, खुद बनाएगा ईंधन और बिजली- स्पेसएक्स की प्रेसिडेंट ग्विन शॉटवेल ने बताया कि यह कैंपस पूरी तरह 'सेल्फ-सस्टेनिंग' होगा। खुद का ईंधन और बिजलीः कॉम्प्लेक्स के भीतर ही रॉकेट प्रोपेलेंट के लिए मीथेन गैस का उत्पादन होगा और इलेक्ट्रिसिटी जनरेशन फैसिलिटी लगाई जाएगी। शिपिंग और ट्रांसपोर्टः स्टारशिप रॉकेट्स को लाने-ले जाने के लिए डीप-वॉटर शिपिंग पोर्ट और व्हीकल प्रोसेसिंग यूनिट्स बनाई जाएंगी।

एक डेडिकेटेड एयरपोर्ट भी बनाया जा सकता है। शॉटवेल ने कहा कि इस फैसिलिटी का लक्ष्य हर साल स्टारशिप के हजारों उड़ानों को सपोर्ट करना है, हालांकि यह इंजीनियरिंग और रेग्युलेटरी अप्रूवल पर निर्भर करेगा। रॉकेट मैन्युफैक्चरिंग नहीं सिर्फ लॉन्चिंग होगी-यह लुइसियाना कैंपस स्पेसएक्स के टेक्सास स्थित 'स्टारबेस' से काफी अलग होगा। टेक्सास में रॉकेट्स का निर्माण और असेंबली की जाती है, जबकि लुइसियाना फैसिलिटी में रॉकेट की मैन्युफैक्चरिंग नहीं होगी।इसका मुख्य फोकस केवल हाई-फ्रीक्वेंसी यानी तेज गति से लॉन्चिंग पर रहेगा।

'लेक ओंटारियो' का नाम 'लेक अमेरिका' करने की सोच रहा-ट्रम्प, कनाडा से जुड़ी झील का नाम बदल सकते हैं

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कनाडा से जुड़े लेक ओंटारियो का नाम बदलने की बात कही है। उन्होंने मंगलवार को सोशल मीडिया पर लिखा कि वे इसका नाम बदलकर 'लेक अमेरिका' रखने पर विचार कर रहे हैं। लेक ओंटारियो अमेरिका और कनाडा की सीमा पर स्थित है। ट्रम्प का यह बयान ऐसे समय आया है, जब दोनों पड़ोसी देशों के बीच टैरिफ को लेकर तनाव बढ़ा हुआ है। दोनों ने एक-दूसरे पर 50फीसदी टैरिफ लगा दिया है। न्यूज एजेंसी एपी के मुताबिक, लेक ओंटारियो का नाम बदलने को लेकर फिलहाल कोई आधिकारिक आदेश जारी नहीं हुआ है और न ही औपचारिक प्रक्रिया शुरू की गई है। डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिकी राष्ट्रपतिः- 'अमेरिका लेक ओंटारियो का नाम बदलकर लेक अमेरिका करने पर गंभीरता से विचार कर रहा है, क्योंकि अब

हमें उम्मीद नहीं है कि हम ओंटारियो के साथ ज्यादा कारोबार करेंगे।' क्यों अहम है लेक ओंटारियो? लेक ओंटारियो उत्तरी अमेरिका की पांच बड़ी झीलों यानी ग्रेट लेक्स में से एक है। यह अमेरिका के न्यूयॉर्क राज्य और कनाडा के ओंटारियो प्रांत के बीच स्थित है। झील के एक तरफ अमेरिकी क्षेत्र है, जबकि दूसरी तरफ कनाडा का ओंटारियो प्रांत है। कनाडा का बड़ा शहर टोरंटो भी इसी झील के किनारे बसा है। यह झील दोनों देशों के लिए पीने के पानी, सामान की आवाजाही, मछली पालन और पर्यटन के लिहाज से महत्वपूर्ण है। सेंट लॉरेंस नदी के जरिए यह अटलांटिक महासागर से जुड़ती है, इसलिए यह बड़े जलमार्ग और व्यापारिक नेटवर्क का भी हिस्सा है। झील की देखभाल और पानी की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए अमेरिका और कनाडा लंबे समय से मिलकर काम करते हैं। दोनों देशों के बीच ग्रेट लेक्स वाटर क्वालिटी एग्रीमेंट भी है, जिसके तहत ग्रेट लेक्स के पानी और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए दोनों देश सहयोग करते हैं। लेक ओंटारियो को उसका नाम कैसे मिला? 'ओंटारियो' नाम मूलनिवासी ह्यूरॉन लोगों की भाषा से आया माना जाता है। इसका अर्थ 'सुंदर झील' है। बाद में यूरोपीय लोगों ने भी इस नाम का इस्तेमाल शुरू किया और यही नाम प्रचलित हो गया।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

इस्लामाबाद के अस्पताल में लगी आग- 15 नवजातों की मौत, सिर्फ 1 को बचाया जा सका

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद के एक

अस्पताल में बुधवार को आग लगने से 15 नवजात बच्चों की मौत हो गई। हादसा पाकिस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) अस्पताल में स्त्री रोग वार्ड की नर्सरी में हुआ। अस्पताल अधिकारियों के मुताबिक, हादसे के वक्त नर्सरी में 16 नवजात बच्चे मौजूद थे। इनमें से सिर्फ एक बच्चे को बचाया जा सका। रेस्क्यू अधिकारियों के मुताबिक, नर्सरी के अंदर एयर कंडीशनर के कंप्रेसर में विस्फोट हुआ। इसके बाद आग लग गई और तेजी से पूरे वार्ड में फैल गई। आग की जानकारी मिलते ही रेस्क्यू टीमें मौके पर पहुंचीं और बचाव अभियान शुरू किया। अधिकारियों के मुताबिक, आग पर काबू पा लिया गया है। आग की जांच के लिए कमेटी बनेगी-जिला प्रशासन ने घटना की जांच के लिए अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर की अध्यक्षता में कमेटी बनाने का फैसला किया है। कमेटी यह पता लगाएगी कि आग कैसे लगी और हादसे के पीछे क्या वजह थी। जांच के बाद ही आग लगने की सही वजह और हादसे के लिए जिम्मेदार परिस्थितियों का पता चल सकेगा। पीआईएमएस इस्लामाबाद का सबसे बड़ा अस्पताल-पीआईएमएस इस्लामाबाद का सबसे बड़ा अस्पताल है। करीब 140 एकड़ में फैले इस अस्पताल में लगभग 1,300 बेड हैं। यहां 27 से ज्यादा तरह की बीमारियों के इलाज की सुविधा है। पीआईएमएस में कई बड़े मेडिकल सेंटर शामिल हैं। इनमें इस्लामाबाद अस्पताल, चिल्ड्रन्स अस्पताल, मदर एंड चाइल्ड हेल्थ सेंटर, बर्न केयर सेंटर और कार्डियक सेंटर शामिल हैं।अस्पताल के चिल्ड्रन्स अस्पताल में नवजात बच्चों के इलाज और एनआईसीयू की सुविधा है। वहीं मदर एंड चाइल्ड हेल्थ सेंटर में गर्भवती महिलाओं और नवजात बच्चों के लिए अलग व्यवस्था है।

हादसे के बाद अस्पताल की फायर सेफ्टी और नवजातों की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठ रहे हैं।

इमरान के बेटे का दावा-पाकिस्तान तानाशाही की ओर बढ़ रहा

पिता के साथ जेल में बुरे बर्ताव का आरोप लगाया, कहा- सेना की इसमें बड़ी भूमिका

इस्लामाबाद। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के बेटे सुलैमान ईसा खान ने दावा किया है कि

पाकिस्तान तानाशाही की तरफ बढ़ रहा है। उन्होंने अपने पिता के लंबे समय से जेल में होने को इसका उदाहरण बताया। न्यूज एजेंसी एएनआई के साथ वर्चुअल प्रेस कॉन्फ्रेंस में सुलैमान ने कहा कि पिछले कई साल से उनके पिता के साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है और इसमें सेना की बड़ी भूमिका है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में इमरान खान की स्वास्थ्य स्थिति को लेकर चर्चा की गई। सुलैमान के साथ उनके भाई कासिम खान, अंतरराष्ट्रीय वकील जेरेड जेनसर और अंतरराष्ट्रीय मामलों तथा मीडिया के सलाहकार सैयद बुखारी भी शामिल हुए। इमरान के बेटे बोले-पिता से नहीं मिल पा रहेः- इमरान के बेटों ने कहा कि वे जेल में बंद अपने पिता से मिलने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उनकी कोशिशें लगातार नाकाम हो रही हैं। उनका कहना है कि पाकिस्तानी अधिकारियों ने उनके वीजा आवेदन को बार-बार टाला या खारिज किया है।कासिम खान ने कहा, 'उन्हें देखने का कोई भी मौका मिले तो हम तुरंत जाना चाहेंगे। हम पाकिस्तान आना चाहते हैं, लेकिन अब हालात और निराशाजनक होते जा रहे हैं। हमारे वीजा आवेदन खारिज किए गए, टाले गए और बार-बार अटकाए गए।' कासिम ने कहा, 'मेरे पिता को लगातार एकांत कारावास में रखा जा रहा है। उन्हें 6 बाई 8 फुट की एक ऐसी कोठरी में 23 घंटे तक बंद रखा जाता है, जिसमें न खिड़की है और न ही रोशनी। उनकी उम्र 73 साल है और उनकी एक आंख की 85 फीसदी नजर जा चुकी है।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

अमेरिका के मोंटाना में परिवार के 8 लोगों की हत्या-मृतकों में 4 बच्चे, आरोपी ने सबको गोली मारी और फिर खुद को भी शूट किया

बिलिंग्स। अमेरिका के मोंटाना के बिलिंग्स शहर में रविवार शाम एक परिवार के 8 लोगों की हत्या कर दी गई।

मरने वाले लोग एक ही परिवार की चार पीढ़ियों से थे। इनमें 4 बच्चे भी शामिल हैं। पुलिस के मुताबिक, उन्हें रविवार शाम करीब 6 बजे घर से गोली चलने की सूचना मिली थी।पुलिस मौके पर पहुंची तो घर के पीछे से गोलियों की आवाज आ रही थी। घर के बाहर एक व्यक्ति घायल मिला। उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां उसकी मौत हो गई। वही इस घटना का संदिग्ध माना जा रहा है। पुलिस को बच्चे के बेहोश होने की सूचना मिली थी-घटना के दौरान 911 पर पुलिस को घर में गोली चलने और एक बच्चे के बेहोश होने की सूचना मिली थी। इसके बाद मौके पर दमकल की गाड़ियां भेजी गईं। कुछ देर बाद एक और फायर इंजन भेजने को कहा गया। डिस्पैचर ने पूछा कि क्या बच्चे को गोली लगी है। पुलिस ने बताया कि इसकी पुष्टि नहीं हुई थी। सिर्फ इतना पता था कि बच्चा बेहोश है और यह भी साफ नहीं था कि वह सांस ले रहा है या नहीं। पुलिस पहुंची तो फायरिंग की आवाज आ रही थी-इमरजेंसी टीमें रविवार शाम करीब 6:10 बजे मौके पर पहुंचीं। पुलिस ने घर के बाहर एक व्यक्ति को देखा। इसी दौरान घर के अंदर से गोलियों की आवाज भी आ रही थी। आग तेजी से फैल रही थी, इसलिए दमकलकर्मी तुरंत घर के अंदर नहीं जा सके। फायर चीफ मैट हॉपेल ने बताया कि आग तेजी से फैली और घर का बड़ा हिस्सा जल गया। आग बुझाने के लिए डाला गया पानी और जला हुआ मलबा जांच में परेशानी पैदा कर रहा है। इससे पुलिस को मौके से सबूत जुटाने में समय लग रहा है। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

अमेरिकी इंटेलिजेंस एजेंसी के चीफ की रूस में अचानक सीक्रेट लैंडिंग, ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट से पहुंचे

मॉस्को। अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए के डायरेक्टर

जॉन रैटक्लिफ मॉस्को पहुंचे हैं। अमेरिकी मीडिया के मुताबिक, वह अमेरिकी वायुसेना के सी-17 ग्लोबमास्टर से मॉस्को गए और वहां अधिकारियों के साथ बैठकें कर रहे हैं। यह सीआईए चीफ बनने के बाद रैटक्लिफ की रूस की पहली यात्रा है। रैटक्लिफ के रूस दौरे की पहले कोई घोषणा नहीं की गई थी। अमेरिकी सैन्य विमान के मॉस्को पहुंचने के बाद उनकी यात्रा की खबर सामने आई। इससे पहले रूसी अधिकारियों ने कहा था कि उन्हें सी-17 ग्लोबमास्टर की मॉस्को यात्रा की जानकारी नहीं है। अमेरिकी सरकार ने भी अभी इस दौरे पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। अमेरिका से लातविया और फिर मॉस्को पहुंचा सी17ः-फ्लाइट-ट्रैकिंग डेटा के मुताबिक, अमेरिकी वायुसेना का सी-17 पहले अमेरिका से लातविया की राजधानी रीगा पहुंचा। इसके बाद विमान मंगलवार सुबह करीब 9 बजे मॉस्को के लिए रवाना हुआ और व्नुकोवो एयरपोर्ट पर उतरा।

यह विमान आरसीएच4555 कॉल साइन से उड़ रहा था। इसकी उड़ान की एक खास बात यह थी कि विमान रूस के हवाई क्षेत्र से होकर मॉस्को पहुंचा। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

तिब्बत की बाढ़ से नेपाल की भोटेकोशी नदी उफान पर, 9 पुलिसकर्मी हुए लापता, लोगों को सुरक्षित जगह जाने की सलाह

काठमांडू। चीन के तिब्बत से आई अचानक बाढ़ का पानी नेपाल के रसुवा जिले में पहुंच गया है। इससे भोटेकोशी नदी का पानी तेजी से बढ़ गया और आसपास के इलाकों में नुकसान की खबर है। खतरे को देखते हुए त्रिशूली नदी के किनारे बसे रसुवा, नुवाकोट, धादिंग, गोरखा और चितवन में हाई अलर्ट जारी किया गया है। रसुवा के टिमुरे बॉर्डर पोस्ट पर तैनात 9 पुलिसकर्मी लापता हो गए हैं। अधिकारियों के मुताबिक, बाढ़ के बाद से इनसे संपर्क नहीं हो पा रहा है। हालांकि, बॉर्डर पोस्ट पर मौजूद 25 से 30 दूसरे लोग सुरक्षित बताए जा रहे हैं। नदी किनारे रहने वाले लोगों से सावधान रहने और पानी बढ़ने पर तुरंत सुरक्षित जगह जाने को कहा गया है। मुग्लिन समेत त्रिशूली नदी के आसपास के लोगों को नदी के पास न जाने की सलाह दी गई

है। पीएम बालेन ने सेना तैनात करने के आदेश दिए- नेपाल के प्रधानमंत्री बालेन शाह ने रसुवा के बाढ़ प्रभावित इलाकों में बचाव और राहत के लिए नेपाली सेना, सशस्त्र पुलिस बल और नेपाल पुलिस को तैनात करने के निर्देश दिए हैं। प्रभावित इलाकों में दूसरे जिलों से भी अतिरिक्त सुरक्षाकर्मी भेजे गए हैं। शाह ने कहा कि राहत और बचाव का काम तेजी से चल रहा है। आपदा प्रबंधन एजेंसी के साथ मेडिकल टीमें, स्काउट्स और रेड क्रॉस की टीमें मिलकर काम कर रही हैं। प्रभावित इलाकों में अतिरिक्त एंबुलेंस और मेडिकल स्टाफ भी भेजा जा रहा है। बालेन ने नदी किनारे के निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को तुरंत सुरक्षित जगह पहुंचाने के निर्देश दिए हैं। प्रधानमंत्री ने हाई लेवल बैठक बुलाई-बालेन शाह के मुताबिक प्राइवेट हेलीकॉप्टर कंपनियों से भी विमानों को स्टैंडबाय पर रखने के लिए कहा गया है। वहीं कुछ हेलीकॉप्टर पहले ही प्रभावित इलाकों में तैनात किए जा चुके हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि स्थिति का जायजा लेने और आगे जरूरी कदम उठाने के लिए एक उच्च-स्तरीय बैठक भी बुलाई गई है।

बीजेपी महंगाई रोकने में नाकाम, प्याज के दाम 59फीसदी बढ़े, जनता माफ नहीं करेगी- मल्लिकार्जुन खड़गे

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भाजपा सरकार पर

महंगाई रोकने में नाकाम रहने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सरकार को 12 साल हो गए हैं, लेकिन अच्छे दिन नहीं आए। एक साल में प्याज की कीमतें 59फीसदी बढ़ी हैं, जबकि चीनी रु60-70 और सरसों का तेल करीब रु200 किलो पहुंच गया है। खड़गे ने कहा कि खाने-पीने की चीजों की महंगाई 5.52फीसदी और थोक महंगाई 9.78फीसदी हो गई है। उन्होंने कहा कि सरकार के 12 साल पूरे होने के बावजूद आम लोगों का बजट बिगड़ रहा है और जनता इसे माफ नहीं करेगी।

भागवत अमेरिका में, 29 को मेडिसन स्क्वेयर में कार्यक्रम, न्यूयॉर्क मेयर ममदानी बोले- आरएसएस की रैली को समर्थन नहीं

न्यूयॉर्क। आरएसएस चीफ मोहन भागवत मंगलवार को न्यूयॉर्क पहुंचे। यह उनके 17 दिन के तीन देशों के दौरे का पहला पड़ाव है। न्यूयॉर्क के जेएफके एयरपोर्ट पर भारतीय महिलाओं ने तिलक लगाकर उनका स्वागत किया। भागवत का यह दौरा आरएसएस के शताब्दी वर्ष के ग्लोबल आउटरीच कार्यक्रम के तहत हो रहा है। आरएसएस के 100 साल पूरे होने के मौके पर देश-विदेश में कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। अमेरिका के बाद भागवत कनाडा और ब्रिटेन जाएंगे। संघ के मुताबिक, इस दौरान वह भारतीय मूल के लोगों और स्थानीय संगठनों के प्रतिनिधियों से मुलाकात करेंगे। भागवत 29 अगस्त को न्यूयॉर्क के मेडिसन स्क्वायर गार्डन में 'यूनिवर्सल वननेस' कार्यक्रम में शामिल होंगे। न्यूयॉर्क के मेयर जोहरान ममदानी ने भागवत के दौरे को लेकर कहा कि मैं आरएसएस के कार्यक्रम का समर्थन नहीं करता। बांटने वाली विचारधारा का विरोध करता हूं।मेडिसन स्क्वायर में भारतीयों को संबोधित करेंगे भागवत-मेडिसन स्क्वायर गार्डन में 'यूनिवर्सल वननेस सेलिब्रेशन' कार्यक्रम का आयोजन अमेरिकन हिंदूज फॉर एंगेजमेंट एंड डायलॉग (एएचईएडी) फोरम कर रहा है। कार्यक्रम में भागवत का संबोधन भी होगा। यह कार्यक्रम रक्षाबंधन के मौके पर आयोजित किया जा रहा है। आयोजकों के मुताबिक, कार्यक्रम में रक्षाबंधन की पारंपरिक भावना को एकता, नागरिक जिम्मेदारी और वैश्विक सद्भाव के संदेश से जोड़ा जाएगा।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

अंतरराष्ट्रीय फर्टिलिटी टूरिज्म में सबसे बड़ा फर्जीवाड़ा,परिवारों ने यूरोपीय डोनर चुने-डीएनए मिला तुर्किये व अन्य देशों के

लंदन। ब्रिटेन से मेडिकल टूरिज्म के तहत उत्तरी साइप्रस में आईवीएफ कराने वाले ब्रिटेन के 30 परिवारों के साथ बड़ी धोखाधड़ी हुई। आरोप है कि आईवीएफ क्लिनिक ने उनकी पसंद के स्पर्म-एग डोनर इस्तेमाल करने का दावा किया था, लेकिन 11 बच्चों के डीएनए टेस्ट से पता चला कि ये उन स्पर्म-एग डोनर के नहीं हैं, जिसे उनके माता-पिता ने चुना था। आईवीएफ से पैदा इन बच्चों का डीएनए तुर्किये और अरब देशों के लोगों के डीएनए से मिल रहा है, जबकि उनके माता-पिता ने फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड्स, बेल्जियम, स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रिया जैसे पश्चिम यूरोपीय देशों के पूरी तरह से स्क्रीन किए गए और स्वस्थ डोनर्स को चुना था। बीबीसी की खोजी रिपोर्ट के मुताबिक, इस अंतरराष्ट्रीय घोटाले के लगभग आधे मामले अकेले 'डोगस आईवीएफ सेंटर' से सामने आए हैं। दुनिया के सबसे बड़े स्पर्म बैंक 'क्रायोस

इंटरनेशनल' ने स्पष्ट किया है कि उसने 2016 में ही डोगस क्लिनिक को ब्लैकलिस्ट कर दिया था और वहां कभी स्पर्म की सप्लाई ही नहीं की। इसके बावजूद क्लिनिक सालों तक क्रायोस के साथ अपने आधिकारिक जुड़ाव का झूठा विज्ञापन देकर संतान चाहने वाले जोड़ों को ठगता रहा। निजी डेटा की अनदेखी - माता-पिता ने डोनर की मेडिकल हिस्ट्री, रूप-रंग, शिक्षा और शौक के आधार पर चयन किया था, ताकि बच्चा 18 साल की उम्र में अपने जैविक मूल को जान सके। फर्जी डोनर के इस्तेमाल से बच्चों के मूलभूत मानवाधिकारों का हनन हुआ है। ब्रिटिश फर्टिलिटी सोसाइटी के अनुसाार, 30 से अधिक बच्चों के मामलों में ऐसा होना एक संगठित आपराधिक नेटवर्क, गंभीर लापरवाही और संस्थागत धोखाधड़ी है। उत्तरी साइप्रस तुर्किये के कब्जे में है और कानून लचर हैं। वैश्विक फर्टिलिटी रिपोर्ट्स और मेडिकल टूरिज्म डेटा के अनुसार, सस्ता होने से हर साल 5-8 हजार विदेशी जोड़े आईवीएफ ट्रीटमेंट के लिए नार्दन साइप्रस आते हैं और पिछले 10 वर्षों में 50,000 से 70,000 विदेशी नागरिकों ने नॉर्दन साइप्रस के क्लिनिकों में आईवीएफ ट्रीटमेंट कराया है। इनमें बड़ी संख्या ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस के लोगों की है। रैचेल का दावा - 13 साल बाद डीएनए टेस्ट से शक पक्का हुआ-रिपोर्ट में रैचेल नाम की एक मां का केस बताया गया है। रैचेल ने 2012 में डोगस में करीब 4.43 लाख रु. में आईवीएफ कराया। रैचेल ने क्रायोस वेबसाइट से डेनमार्क के एक डोनर को चुना था। प्रोफाइल में लिखा था कि 18 साल बाद बच्चा चाहे तो डोनर की पहचान जान सकता है।

डाक-टिकटों के प्रति अभिरूचि व शोध कार्य हेतु 'दीन दयाल स्पर्श योजना' छात्रवृत्ति देगा डाक विभाग- पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

'दीन दयाल स्पर्श योजना' में मेधावी छात्रों को डाक विभाग द्वारा 6000/- रूपये वार्षिक छात्रवृत्ति, आवेदन की अंतिम तिथि 10 सितम्बर- पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। डाक-टिकट संग्रह (फिलैटली) को शिक्षा प्रणाली की मुख्यधारा में लाने और प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से डाक विभाग

द्वारा विद्यार्थियों के लिए 'दीन दयाल स्पर्श योजना' (स्कॉलरशिप फॉर प्रमोशन ऑफ एप्टीट्यूड एंड रिसर्च इन स्टैम्प्स ऐज ए हॉबी) छात्रवृत्ति दी जाएगी। इस सम्बन्ध में जानकारी देते हुए उत्तरी गुजरात परिक्षेत्र, अहमदाबाद के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि वर्ष 2017 से कक्षा 6 से 9 तक के बच्चों के लिए आरम्भ इस योजना में उन मेधावी छात्रों को 6000/- रूपये वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान करने का प्रस्ताव है, जिनका शैक्षणिक रिकार्ड अच्छा है और जिन्होंने शौक के तौर पर फिलैटली को अपनाया है। इस छात्रवृत्ति योजना में लाभार्थियों के चयन हेतु आयोजित होने वाली परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन की अंतिम तिथि 10 सितम्बर निर्धारित है। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण

कुमार यादव ने बताया कि इसके तहत अखिल भारतीय स्तर पर प्रत्येक डाक परिमंडल कक्षा 6, 7, 8, और 9 के 10-10 विद्यार्थियों को, अधिकतम 40 छात्रवृत्तियाँ प्रदान करेगा। छात्रवृत्ति की राशि, 500/- रूपये प्रतिमाह की दर से 6000/- रूपये प्रतिवर्ष होगी, जो कि तिमाही आधार पर देय होगी। पोस्टमास्टर जनरल श्री यादव ने कहा कि छात्रवृत्ति की अहर्ता हेतु भारत में मान्यता प्राप्त विद्यालय का विद्यार्थी होना चाहिए। संबंधित विद्यालय का फिलैटली क्लब होना चाहिए और उम्मीदवार क्लब का सदस्य होना चाहिए। यदि विद्यालय में फिलैटली क्लब स्थापित नहीं है, तो ऐसे विद्यालय के उस विद्यार्थी के नाम पर भी विचार किया जा सकता है, जिसका अपना फिलैटली जमा खाता संचालित हो। फिलैटली डिपोजिट खाता डाकघर में न्यूनतम 200 रुपये से खोला जा सकता है। छात्रवृत्ति देने लिए चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि उम्मीदवार ने विगत अंतिम परीक्षा में कम से कम 60 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड/ग्रेड प्वांइट प्राप्त किए हों। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों के लिए 5 प्रतिशत की छूट होगी। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि छात्रवृत्ति हेतु पहले मंडलीय स्तर पर लिखित क्विज़ का आयोजन 27 सितंबर को किया जाएगा, जिसमें 50 बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाएंगे। इसमें सफल विद्यार्थियों को अंतिम चयन हेतु नवंबर माह के प्रथम सप्ताह तक 16 डाक टिकटों के साथ अधिकतम 500 शब्दों में एक फिलेटली प्रोजेक्ट जमा करना होगा। इसके लिए परिमंडल स्तर पर डाक अधिकारी और प्रतिष्ठित फिलैटलीविदों की एक समिति भी गठित की जाएगी। अंतिम रिजल्ट 01 दिसंबर, 2026 को घोषित किया जायेगा। चयनित विद्यार्थियों को, पोस्ट ऑफिस अथवा इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक में अपने अभिभावकों के साथ एक संयुक्त खाता खुलवाना होगा। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि इस छात्रवृत्ति का उद्देश्य बच्चों में छोटी आयु से ही फिलैटली के शौक को इस प्रकार बढ़ावा देना है, ताकि यह रूचिकर कार्य, उन्हें सुकून भरा अनुभव और तनाव-मुक्त जीवन प्रदान करने के साथ-साथ उनके लिए शिक्षाप्रद भी सिद्ध हो। 'दीन दयाल स्पर्श योजना' विद्यार्थियों के इस शौक को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ उनकी प्रतिभा को छात्रवृत्ति के माध्यम से सम्मानित करने का एक सार्थक प्रयास है।

गंगा नदी का जलस्तर चेतावनी बिंदु के पार, प्रशासन अलर्ट मोड पर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गंगा नदी का जलस्तर आज दिनांक

26.08.2026 को 98.400 मीटर दर्ज किया गया है, जो चेतावनी स्तर 98.360 मीटर से ऊपर है। खतरे का निशान 99.360 मीटर है। जिलाधिकारी महोदया के निर्देश पर चेतावनी बिंदु पार करते ही जनपद के सभी एसडीएम, तहसीलदार एवं राजस्व टीम मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा ले रही है। निचले इलाकों, बाढ़ प्रभावित गांवों में लगातार भ्रमण कर मुनादी कराई जा रही है। जिला प्रशासन द्वारा बाढ़ चौकियों को सक्रिय कर दिया गया है तथा नाव, गोताखोर एवं राहत सामग्री की व्यवस्था सुनिश्चित कर ली गई है। गंगा किनारे बसे गांवों में सतत निगरानी की जा रही है। जिलाधिकारी महोदया ने आमजन से अपील की है कि अफवाहों पर ध्यान न दें तथा किसी भी आपात स्थिति में जिला आपदा कंट्रोल रूम के नंबर पर संपर्क करें।

यूपी कांग्रेस ने तय किया है जिस चैनल या डिबेट में महंत राजूदास होंगे,उस डिबेट या चैनल पर कांग्रेस प्रवक्ता नही बैठेंगे!

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। दिनांक 24.08.2026 को दूरदर्शन चैनल पर डिबेट में उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता श्री कुंवर सिंह निषाद कांग्रेस पार्टी की ओर से एवं अयोध्या के महंत राजू दास डिबेट में शामिल थे। दुःखद एवं दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक संत का चोला पहने राजू दास ने मर्यादा की सारी सीमाएं लांघते हुए लाइव प्रसारण के दौरान भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में तथ्यपरक जवाब न दे पाने की स्थिति में गाली गलौच पर उतारू हो गये और कांग्रेस प्रवक्ता के विरूद्ध अपमानजनक भद्दी गालियां दीं तथा मारने की धमकी दी। डिबेट में शामिल डीडी न्यूज की दो महिला एंकर भी स्तब्ध रह गयीं और डिबेट को बीच में ही बंद करना पड़ा जो बहुत ही शर्मनाक है। अतः डिबेट के दौरान लाइव प्रसारण में राजू दास द्वारा की गयी इस शर्मनाक और अक्षम्य हरकत के चलते कांग्रेस पार्टी का कोई भी प्रवक्ता जिस चैनल पर राजू दास डिबेट में शामिल होंगे, उसमें शामिल नहीं होगा। (डॉ0 सी0पी0 राय-पूर्व मंत्री)चेयरमैन-मीडिया विभाग उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी।

एपीजे अब्दुल कलाम एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किये गए हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.मुन्ना कुमार शर्मा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। अखिल भारत हिंदू

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुन्ना कुमार शर्मा को उनकी शानदार उपलब्धियों, बेहतरीन नेतृत्व और समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पित सेवा के लिए प्रतिष्ठित 'एपीजे अब्दुल कलाम एक्सीलेंस अवार्ड' से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार उन्हें नई दिल्ली के होटल सम्राट में आयोजित राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह में ग्लोबल अचीवर्स काउंसिल द्वारा गर्व के साथ प्रदान किया गया। इस मौके पर उपस्थित ग्लोबल अचीवर्स काउंसिल के चेयरमैन आर.सेल्वम ने कहा कि डॉ.शर्मा की उत्कृष्टता की शानदार यात्रा भारत के समुदायों और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। पुरस्कार समारोह को संबोधित करते हुए डॉ. मुन्ना कुमार शर्मा ने ग्लोबल अचीवर्स काउंसिल का धन्यवाद किया और समाज व मानवता के व्यापक हित में इस पुरस्कार के महत्व पर प्रकाश डाला। इस शुभ अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में शामिल होकर उन्होंने पारंपरिक दीप प्रज्वलित करके पुरस्कार समारोह का उद्घाटन भी किया।इस अवसर पर कई सम्मानित अतिथि उपस्थित थे।

ईद मिलाद-उन-नबीः प्रयागराज के नैनी में धूमधाम से निकला जुलूस, प्रशासन और जिला अपराध निरोधक समिति ने संभाली यातायात की कमान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज (नैनी): पैगंबर मोहम्मद साहब के जन्मदिवस 'ईद मिलाद-उन-नबी' का पर्व नैनी क्षेत्र में अकीदत और धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भव्य जुलूस निकाला गया, जिसमें सुरक्षा और यातायात व्यवस्था को सुगम बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन और जिला अपराध निरोधक समिति की टीम पूरी मुस्तैदी के साथ तैनात रही। दो चरणों में निकला जुलूस-प्रथम चरण (सुबह 9:00 बजे): जुलूस का शुभारंभ शाह जी का पूरा से हुआ, जो पूरी एडीए कॉलोनी का भ्रमण करते हुए सौहार्दपूर्ण माहौल में आगे बढ़ा।द्वितीय चरण (दोपहर 2:00 बजे): दोपहर की पाली में जुलूस शाह जी का पूरा से शुरू होकर कर्बला (अरेल) होते हुए कसाई मोहल्ले तक पहुंचा और शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ।प्रशासन और यूथ टीम का रहा सराहनीय सहयोग-यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने और भीड़ को नियंत्रित करने के लिए नैनी थाना प्रभारी बृज किशोर गौतम के नेतृत्व में विभिन्न चौकी प्रभारियों और पुलिस बल ने कमान संभाली। वहीं, जिला अपराध निरोधक समिति की यूथ टीम ने भी पुलिस-प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर यातायात संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौरान समिति के प्रमुख सदस्य उपस्थित रहेः?क्षेत्रीय नेतृत्वः क्षेत्रीय कमेटी प्रभारी विमल सक्सेना, मोहम्मद अरशद, मोहम्मद इमरान और औद्योगिक क्षेत्र से मोहम्मद अरशद। प्रतिनिधि व टीमः जनसंपर्क अधिकारी तौसीफ खान, सदस्य समीर खान और यूथ टीम प्रभारी मनीष विश्वकर्मा के कुशल नेतृत्व में पूरी टीम सेवा में डटी रही। स्थानीय निवासियों और आयोजकों ने जुलूस के शांतिपूर्ण व व्यवस्थित समापन पर पुलिस प्रशासन और अपराध निरोधक समिति का आभार व्यक्त किया।

पंकज झा को श्री मैथिल ब्राह्मण महासभा का जिला सचिव बनाया गया, समाजहित में पूरी निष्ठा से कार्य करने के लिये कृत संकल्प - पंकज झा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। श्री मैथिल ब्राह्मण

महासभा (भारत) द्वारा जिला गौतम बुद्ध नगर के सचिव पद की जिम्मेदारी पंकज झा को दी गई। यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी पंकज झा को सौंपे जाने पर नवनियुक्त सचिव ने संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय कुमार झा, प्रदेश अध्यक्ष जे.डी. शर्मा, जिला पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि यह जिम्मेदारी उनके लिए केवल सम्मान का विषय नहीं, बल्कि समाज के प्रति एक महत्वपूर्ण दायित्व है। उन्होंने इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक झा एवं महासचिव महेश मिश्रा का हृदय से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया।नवनियुक्त सचिव ने कहा कि वह संगठन के उद्देश्यों, समाज की एकता और समाजहित को सर्वोपरि रखते हुए अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ करेंगे। उन्होंने कहा कि संगठन की प्रगति तथा समाज के उत्थान के लिए वह सदैव तत्पर रहेंगे। उन्होंने विश्वास जताया कि सभी पदाधिकारियों एवं समाज के लोगों के सहयोग और मार्गदर्शन से संगठन को और मजबूत किया जाएगा तथा समाज के हित में सकारात्मक एवं रचनात्मक कार्यों को आगे बढ़ाया जाएगा। पंकज झा के सचिव बनने पर लोगों भीड जमा हो गई और बधाइयों का तांता लग गया। फोन पर सोसल मीडिया पर और उनके निज निवास पर भी लोगों का आना सुबह से शुरू हो गया। पंकज झा ने दिल से सभी को धन्यवाद दिया। एकजुट होकर संस्था में काम करने का भी आह्वान किया।

नई दिल्लीः योगी सरकार का बड़ा फैसला, मां-बाप से बदतमीजी की तो संपत्ति से हाथ धोएंगे बच्चे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। सीएम योगी

आदित्यनाथ की अध्यक्षता में आयोजित उत्तर प्रदेश कैबिनेट बैठक में 'उत्तर प्रदेश माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण नियमावली-2014' में संशोधन का ऐतिहासिक फैसला लिया गया. वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने जानकारी दी कि नियमावली के नियम 22 के तहत नए प्रावधान नियम 22क, 22ख और 22ग जोड़े जाएंगे. यह निर्णय बुजुर्गों को दुर्व्यवहार से बचाने, उनके अधिकारों की सुरक्षा करने और सम्मानजनक जीवन देने के उद्देश्य से किया गया है. अब अगर संतान या आश्रित रिश्तेदार बुजुर्गों का भरण- पोषण नहीं करते, तो वे जिला मजिस्ट्रेट के पास शिकायत दर्ज कराकर स्पष्ट लीगल कार्रवाई द्वारा अपनी संपत्ति से उन्हें बेदखल कर सकेंगे. सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों को त्वरित न्याय दिलाने के लिए शिकायत निस्तारण की प्रक्रिया को समयबद्ध किया है. पीड़ित बुजुर्ग अपनी शिकायत सीधे जिला मजिस्ट्रेट (डीएम) के समक्ष दर्ज करा सकेंगे. जिला मजिस्ट्रेट को इन शिकायतों पर 30 दिनों के भीतर सुनवाई पूरी करनी होगी. इसके अलावा, जिला मजिस्ट्रेट को हर महीने ऐसे सभी मामलों और उन पर की गई कार्रवाई की एक मासिक रिपोर्ट राज्य सरकार को सौंपनी होगी. जो बुजुर्ग खुद चलकर कार्यालय जाने और शिकायत दर्ज कराने की स्थिति में नहीं हैं,

उनके लिए सरकार जल्द ही एक टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबर जारी करेगी. इस हेल्पलाइन के जरिए असमर्थ बुजुर्गों को शिकायत दर्ज कराने और आवश्यक प्रक्रिया पूरी करने में मदद पहुंचाई जाएगी. सरकार को उम्मीद है कि संपत्ति से बेदखली के इस नए नियम से बुजुर्गों पर होने वाले अत्याचारों में कमी आएगी और उन्हें सुरक्षा मिलेगी.

लोकमाता अहिल्याबाई मातृशक्ति यात्रा योजना से 60 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं को मिलेगी निःशुल्क बस यात्रा की सुविधा

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर माताओं, बहनों एवं बेटियों को सहयात्री सहित निःशुल्क बस यात्रा का भी शुभारंभ,महिलाओं के सम्मान और सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल-उद्यान मंत्री,प्रदेश सरकार ने महिलाओं को दिया सम्मान और सुरक्षा का भरोसा-विधायक अशोक कुमार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। उत्तर प्रदेश की 60 वर्ष एवं उससे अधिक आयु की महिलाओं को निःशुल्क बस यात्रा की सुविधा प्रदान करने वाली 'लोकमाता अहिल्याबाई मातृशक्ति यात्रा' योजना का शुभारंभ मा0 मुख्यमंत्री उ0प्र0 योगी आदित्यनाथ जी द्वारा लखनऊ से किया गया। इस अवसर पर विशेष बसों को फ्लैग-ऑफ किया गया। साथ ही, रक्षाबंधन के पावन अवसर पर प्रदेश सरकार द्वारा माताओं, बहनों एवं बेटियों को उनके एक सहयात्री सहित निःशुल्क बस यात्रा की सुविधा का भी शुभारंभ किया गया। इसी क्रम में जनपद रायबरेली में जनपद स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन सामुदायिक केन्द्र, रतापुर में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मा0 राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार तथा कृषि निर्यात उ0प्र0 दिनेश प्रताप सिंह ने प्रतिभाग किया, कार्यक्रम में मा0 विधायक सलोन अशोक कुमार, जिलाध्यक्ष बुद्धिलाल पासी, मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता एवं अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ उपस्थित रहे। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं आमजन द्वारा लखनऊ में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम का सजीव प्रसारण देखा गया तथा मा0 मुख्यमंत्री जी के उद्बोधन को सुना गया। कार्यक्रम में प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा एवं सशक्तिकरण के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं तथा विशेष रूप से मातृशक्ति को सुगम एवं सुरक्षित परिवहन सुविधा उपलब्ध कराने की पहल की सराहना की गई। कार्यक्रम में विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को हितलाभ के अंतर्गत बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग की प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र एवं महिला कल्याण विभाग की पात्र बच्चियों को मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के अंतर्गत प्रमाण पत्र तथा स्वास्थ्य विभाग की जननी सुरक्षा योजना के लाभार्थियों को 1400 रुपए के डमी चेक वितरित किए गये, इसके साथ ही उपस्थित सभी लाभार्थियों को साड़ी व मिष्ठान दिया गया। इस अवसर पर उद्यान मंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा एवं स्वावलंबन को प्राथमिकता देते हुए निरंतर महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। 'लोकमाता अहिल्याबाई मातृशक्ति यात्रा' योजना वरिष्ठ महिलाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण एवं जनकल्याणकारी पहल है। उन्होंने कहा कि 60 वर्ष एवं उससे अधिक आयु की माताओं को निःशुल्क बस यात्रा की सुविधा मिलने से उन्हें आवागमन में सुविधा होगी और वे अपने परिजनों एवं धार्मिक स्थलों तक सुगमता से पहुंच सकेंगी। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन के अवसर पर माताओं, बहनों एवं बेटियों को सहयात्री सहित निःशुल्क यात्रा की सुविधा प्रदान करना प्रदेश सरकार की मातृशक्ति के प्रति संवेदनशीलता एवं सम्मान की भावना को दर्शाता है। विधायक सलोन ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं को निःशुल्क यात्रा की सुविधा उपलब्ध कराना सराहनीय एवं ऐतिहासिक कदम है। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन के पावन पर्व पर यह सुविधा माताओं और बहनों के लिए विशेष उपहार है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं आत्मनिर्भरता के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है और विभिन्न योजनाओं का लाभ सीधे पात्र लाभार्थियों तक पहुंचाया जा रहा है। जिलाध्यक्ष बुद्धिलाल पासी ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा मातृशक्ति के सम्मान एवं सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है।उन्होंने कहा कि 'लोकमाता अहिल्याबाई मातृशक्ति यात्रा' योजना के माध्यम से वरिष्ठ महिलाओं को निःशुल्क यात्रा की सुविधा मिलना सरकार की जनकल्याणकारी सोच का परिणाम है। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन के अवसर पर माताओं, बहनों एवं बेटियों को सहयात्री सहित निःशुल्क बस यात्रा की सुविधा प्रदान कर सरकार ने महिला सम्मान की भावना को और मजबूत किया है। मंच का संचालन एस एस पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जिला विकास अधिकारी वर्षा सिंह, जिला प्रोबेशन अधिकारी शक्ति त्रिपाठी, जिला कार्यक्रम अधिकारी सुरेन्द्र कुमार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

नेफोमा उपाध्यक्ष अविनाश सिंह के भ्राता के असामयिक निधन पर शोक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। ग्रेटर नोएडा वेस्ट नेफोमा

उपाध्यक्ष अविनाश सिंह के भाई अजीत सिंह का संतोष मेडिकल कॉलेज, गाजियाबाद में इलाज के दौरान असामयिक निधन हो गया। उनके निधन का समाचार अत्यंत दुःखद एवं हृदयविदारक है। इस कठिन समय में नेफोमा परिवार शोकाकुल परिवार के साथ खड़ा है और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। नेफोमा अध्यक्ष अन्नू खान एवं संगठन मंत्री श्री कृष्णा नन्द ने अजीत सिंह के निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें तथा शोकाकुल परिवार को इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

'हर घर बिजली' के दौर में 20 साल पुराने बुनियादी ढांचे और भारी-भरकम 'अफोर्डेबल शुल्क' की मार झेल रहा नोएडा

जनप्रतिनिधियों की खामोशी भी इस अव्यवस्था की जिम्मेदार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) ?नोएडा। उत्तर प्रदेश की आर्थिक रीढ़ और प्रदेश की तिजोरी में

सबसे ज्यादा राजस्व का योगदान देने वाला हाइटेक शहर नोएडा आज बिजली विभाग की घोर उपेक्षा और अव्यवस्था का शिकार है। एक तरफ सरकार द्वारा 'हर घर बिजली' पहुंचाने के बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ नोएडा में जमीनी हकीकत यह है कि अंतरराष्ट्रीय कंपनियों और विदेशी निवेश को आकर्षित करने वाले इस शहर का बिजली आपूर्ति ढांचा आज भी बीसियों वर्ष पुराना बना हुआ है। आधुनिक तकनीक से लैस होने की बजाय यह शहर लगातार तेज वोल्टेज के उतार-चढ़ाव (विद्युत विभवांतर) और घंटों की अनिश्चित बिजली कटौती की दोहरी मार झेल रहा है। बिजली विभाग का उत्पीड़न यहीं खत्म नहीं होता; नया कनेक्शन लेने वाले आम नागरिकों और नए उपभोक्ताओं की जेब पर डाका डालते हुए उन पर जबरन 'अफोर्डेबल चार्ज' के नाम पर भारी-भरकम शुल्क थोप दिया गया है। नया विधुत कनेक्शन लेने वाले उपभोक्ताओं के लिए यह अनपेक्षित वित्तीय बोझ किसी आर्थिक उत्पीड़न से कम नहीं है। एक तरफ जर्जर इंफ्रास्ट्रक्चर के कारण निर्बाध बिजली नहीं मिलती, और दूसरी तरफ नए कनेक्शन पर इस तरह के अनुचित शुल्क वसूल कर आम जनता का शोषण किया जा रहा है। ?इस पूरे प्रकरण में सबसे निराशाजनक पहलू यह है कि जनता द्वारा चुने गए हमारे जनप्रतिनिधियों की खामोशी भी इस अव्यवस्था की उतनी ही जिम्मेदार है। लाखों नागरिकों और व्यापारियों को प्रभावित करने वाले इस गंभीर बिजली संकट पर जनप्रतिनिधियों द्वारा साधी गई चुप्पी और उनकी बेरुखी के कारण ही विभाग के हौसले बुलंद हैं और उपभोक्ताओं की समस्याएं अनदेखी रह जाती हैं। इसके साथ ही, पूरे जिले में बिजली विभाग के पास मैनपावर की भीषण कमी है। पर्याप्त कर्मचारी और तकनीशियन न होने के कारण मामूली फॉल्ट आने पर भी उसे ठीक करने में घंटों का समय लग जाता है, जिससे आम जनता को प्रचंड अव्यवस्था के बीच तड़पना पड़ता है। इस पर तुर्रा यह कि उपभोक्ता केंद्रित व्यवस्था के बजाय विभाग ने शहर में केंद्रीकृत उत्पीड़न का मॉडल बना रखा है। अगर किसी उपभोक्ता के बिल में कोई गड़बड़ी हो जाए, तो पूरे जिले के निवासियों को सेक्टर-18 स्थित विद्युत घर के चक्कर काटने पड़ते हैं। इसी तरह, पूरे शहर के लिए मीटर संबंधी समस्याओं का केवल एक ही केंद्र बनाया गया है, जहां लोगों को सुबह से शाम तक कतारों में खड़ा होना पड़ता है। ?आरडब्ल्यूए सेक्टर 105 नोएडा के अध्यक्ष दिव्य कृष्णात्रेय ने इस बदहाली पर कड़ा आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि 'हर घर बिजली' का वास्तविक लाभ जनता को तभी मिलेगा जब निर्बाध आपूर्ति, पारदर्शी शुल्क संरचना और सुलभ सेवाएं उपलब्ध होंगी। उन्होंने शासन और उच्च अधिकारियों से मांग की है कि 20 साल पुराने जर्जर बिजली ढांचे को तुरंत आधुनिक तकनीक से बदला जाए, नए कनेक्शनों पर लगाए जा रहे अनुचित 'अफोर्डेबल चार्ज' को तत्काल वापस लिया जाए, विभाग में पर्याप्त मैनपावर की भर्ती की जाए और बिल या मीटर सुधार जैसी सुविधाओं को सेक्टर-वार और अंचल-वार विकेंद्रीकृत किया जाए ताकि आम उपभोक्ताओं को राहत मिल सके।

समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर ने धूमधाम से मनाई सामाजिक न्याय के पुरोधा बी.पी. मंडल जी की जयंती

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर संगठन द्वारा मंगलवार

को नोएडा सेक्टर-53 स्थित सपा नोएडा महानगर कैंप कार्यालय, कंचनजंगा मार्केट में सामाजिक न्याय के पुरोधा एवं मंडल आयोग के अध्यक्ष बाबू बिंदेश्वरी प्रसाद मंडल जी की जयंती श्रद्धापूर्वक एवं धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सपा नोएडा महानगर अध्यक्ष डॉ. आश्रय गुप्ता ने की, जबकि संचालन महानगर महासचिव विकास यादव ने किया।कार्यक्रम में उपस्थित समाजवादी पार्टी के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने बी.पी. मंडल जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा उनके द्वारा सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिए किए गए संघर्ष को याद किया। सपा नोएडा महानगर अध्यक्ष डॉ. आश्रय गुप्ता ने कहा कि 'बी.पी. मंडल जी का पूरा जीवन सामाजिक न्याय और वंचित एवं पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिए समर्पित रहा। मंडल आयोग की सिफारिशों ने देश में सामाजिक न्याय की दिशा को नई मजबूती दी। समाजवादी पार्टी हमेशा डॉ. राम मनोहर लोहिया और नेताजी मुलायम सिंह यादव के विचारों को आगे बढ़ाते हुए सामाजिक न्याय, समानता और लोकतांत्रिक अधिकारों की लड़ाई लड़ती रही है। आज आवश्यकता है कि हम बी.पी. मंडल जी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाएं और समाज के अंतिम व्यक्ति को उसका अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष करें।' महानगर उपाध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी गौरव कुमार यादव ने कहा कि 'बी.पी. मंडल जी सामाजिक न्याय की उस विचारधारा के मजबूत स्तंभ थे, जिसने देश के करोड़ों पिछड़े और वंचित लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उनका संघर्ष केवल किसी एक वर्ग के लिए नहीं, बल्कि समान अवसर और सम्मान की लड़ाई थी। समाजवादी पार्टी उनके विचारों और सामाजिक न्याय की लड़ाई को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।' महानगर महासचिव विकास यादव ने कहा कि 'बी.पी. मंडल जी ने अपना पूरा जीवन समाज के कमजोर और पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए समर्पित किया। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। सामाजिक न्याय तभी मजबूत होगा जब समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा, सम्मान, रोजगार और समान अवसर प्राप्त होगा।

समाजवादी पार्टी उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का काम करेगी।

' कार्यक्रम में महकार तंवर, बाबूलाल बंसल, लोकेश यादव, राणा मुखर्जी, बबली शर्मा, राम सहेली, लोकपाल यादव, कृपा शंकर यादव, रंजन कुमार, रेणुका मेथी, नकुल चौहान, बाबू प्रधान, विश्वास, शशि कुमार सहित बड़ी संख्या में पार्टी के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।कार्यक्रम के अंत में सभी कार्यकर्ताओं ने सामाजिक न्याय, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने का संकल्प लिया।

सेक्टर 105 की सांसों पर 'मैक्स स्टेट' का डाकाः ग्रीन बेल्ट पर अवैध कब्जों और पर्यावरण विनाश के खिलाफ आरडब्ल्यूए का शंखनाद। सीईओ से कड़ी कार्रवाई की गुहार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। नोएडा के सेक्टर 105 स्थित डी-ब्लॉक की प्राकृतिक धरोहर और निवासियों की तरह बाधित कर दी गई है। आरडब्ल्यूए अध्यक्ष श्री दिव्य कृष्णात्रेय ने मैक्स स्टेट की इस अवैध गतिविधि की तीखी

जीवनदायिनी ग्रीन बेल्ट को बचाने के लिए रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) ने एकजुट होकर बिगुल फूंक दिया है। बिल्डर कंपनी 'मैक्स स्टेट' ने अपने व्यावसायिक फायदों और आगामी निर्माण कार्य की आड़ में तमाम कानून-कायदों को ताक पर रखकर सार्वजनिक हरियाली पर सरेआम अवैध कब्जा जमा लिया है। इस तानाशाही रवैये के तहत ग्रीन बेल्ट की हरित भूमि पर भारी-भरकम वातानुकूलित (एसी) कंटेनर रखकर दफ्तर सजा दिए गए हैं, पेड़ों को काटकर नष्ट किया गया है तथा प्राकृतिक भूमि को रौंदते हुए अवैध रूप से पक्की सड़क बनाने का दुस्साहस किया जा रहा है। इतना ही नहीं, बिल्डर द्वारा सरकारी संपत्ति को क्षति पहुंचाते हुए सुरक्षा प्रदान करने वाली बाउंड्री वॉल को भी जगह-जगह से तोड़ दिया गया है। हरियाली और जनहित पर हुए इस सीधे हमले से पूरे सेक्टर वासियों में गहरा आक्रोश व्याप्त है। बिल्डर की मनमानी इस कदर बढ़ चुकी है कि जिस सार्वजनिक पार्क और ग्रीन बेल्ट में रोजाना बुजुर्ग, महिलाएं और बच्चे ताजी हवा लेने आते हैं, उसके मुख्य द्वारों पर अपने ताले ठोककर आम नागरिकों की आवाजाही पूरी भर्त्सना करते हुए स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी है कि सेक्टर वासियों के प्राकृतिक अधिकारों और साझी सांसों पर डाका डालने वाली किसी भी संस्था की इस तरह की मनमानी और अराजकता को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। आरडब्ल्यूए अध्यक्ष श्री दिव्य कृष्णात्रेय ने पूरे सेक्टर वासियों की ओर से नोएडा प्राधिकरण के माननीय मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) से इस गंभीर विषय पर तत्काल संज्ञान लेने की भावुक अपील की है। उन्होंने मांग की है कि पर्यावरण विनाश में लिप्त मैक्स स्टेट के तमाम अनाधिकृत एसी कंटेनरों को तुरंत जब्त कर बुलडोजर कार्रवाई से हटाया जाए, ग्रीन बेल्ट के भीतर अवैध सड़क निर्माण पर फौरन रोक लगाई जाए, तोड़ी गई चारदीवारी व नष्ट किए गए पेड़ों के एवज में कंपनी पर भारी-भरकम आर्थिक दंड लगाया जाए और अवैध तालों को तुड़वाकर नागरिकों के टहलने का अधिकार तुरंत बहाल किया जाए। सेक्टर वासियों को पूर्ण विश्वास है कि नोएडा प्राधिकरण के माननीय सीईओ जनहित, कानून व्यवस्था और पर्यावरण संरक्षण के पक्ष में त्वरित व मिसाली दंडात्मक कदम उठाएंगे।

सांठगांठ कर परिवार के उत्पीड़न का आरोप, न्याय न मिलने पर सीएम कार्यालय पर धरने की चेतावनी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। भाजपा के पूर्व मंडल

अध्यक्ष एवं नयागांव निवासी रवि प्रधान खारी की धर्मपत्नी श्रीमती बबीता खारी ने कुछ दबंग लोगों द्वारा सांठगांठ कर उनके परिवार का उत्पीड़न करने का आरोप लगाया है। उन्होंने बुधवार को नोएडा मीडिया क्लब में पत्रकार वार्ता कर मामले में निष्पक्ष जांच और कार्रवाई की मांग की। बबीता खारी ने आरोप लगाया कि हबीबपुर गांव निवासी शिवराम शर्मा पुलिस के साथ मिलकर गेझा-भंगेल स्थित उनके मार्केट पर अवैध कब्जा करने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने दावा किया कि शिवराम शर्मा पुलिसकर्मियों के साथ मार्केट पहुंचकर दुकानदारों को धमकाता है और उनके परिवार को जान से मारने की धमकी भी देता है। उन्होंने आरोप लगाया कि स्थानीय पुलिस से सांठगांठ कर उनके पति रवि प्रधान खारी और बच्चों के खिलाफ फेस-2 थाने में फर्जी मुकदमे दर्ज कराए गए हैं। इससे उनका पूरा परिवार मानसिक रूप से परेशान और भयभीत है। बबीता खारी के अनुसार, मार्केट से संबंधित मामला गौतमबुद्धनगर जिला न्यायालय में विचाराधीन है और न्यायालय ने 21 अगस्त 2023 को उनके पक्ष में स्टे ऑर्डर भी जारी किया था। उनका आरोप है कि मामला अदालत में विचाराधीन होने और स्टे आदेश के बावजूद शिवराम शर्मा पुलिस के सहयोग से मार्केट पर कब्जा करने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने जिला पुलिस और प्रशासन से मामले की निष्पक्ष जांच कराकर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई तथा अपने परिवार को सुरक्षा उपलब्ध कराने की मांग की। बबीता खारी ने चेतावनी दी कि यदि उन्हें न्याय नहीं मिला और आरोपी शिवराम शर्मा के खिलाफ कार्रवाई नहीं की गई तो वह लखनऊ स्थित मुख्यमंत्री कार्यालय पर धरना देने को मजबूर होंगी। हालांकि, लगाए गए आरोपों पर दूसरे पक्ष और पुलिस की प्रतिक्रिया इस खबर के लिए उपलब्ध नहीं हो सकी है।

नोएडा में जन्मदिन की पार्टी के बहाने नाबालिग आयुष की हत्या दोस्त असद पर आरोप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। शहर में थाना सेक्टर-24 क्षेत्र के चौड़ा गांव में नाबालिग छात्र आयुष शुक्ला की हत्या की घटना से सनसनी फैल गई है। आरोप है कि असद नाम का युवक जन्मदिन की पार्टी देने के बहाने आयुष को उसके घर से बुलाकर ले गया और बाद में चाकू से हमला कर उसकी हत्या कर दी। घटना के बाद से आरोपी के फरार होने की बात सामने आ रही है नोएडा और पुलिस की कई टीमें उसकी तलाश में जुटी हैं। इस वारदात के सामने आने के बाद चौड़ा गांव और आसपास के इलाके में दहशत का माहौल है। सबसे ज्यादा सदमा आयुष के परिवार को लगा है। बेटे की मौत की खबर के बाद उसकी मां का रो-रोकर बुरा हाल है। परिजनों के मुताबिक आयुष को घर से बुलाकर ले जाने वाला युवक असद था और इसके कुछ समय बाद ही आयुष की हत्या की खबर सामने आई। मां से कहा- खाना बनाकर रखना, दो मिनट में आयुष के साथ लौटूंगा- परिजनों के अनुसार घटना से पहले असद आयुष के घर पहुंचा था। आयुष की मां के मुताबिक उसने उनसे कहा था कि वह आयुष को अपने साथ लेकर जा रहा है और थोड़ी देर में वापस आ जाएगा। मां के अनुसार असद ने कथित तौर पर कहा था–'आंटी खाना बनाकर रखना, दो मिनट में आयुष के साथ वापस आता हूं।' मां को शायद यह अंदाजा भी नहीं था कि घर से बाहर जाते समय बेटे के साथ क्या होने वाला है। आयुष असद के साथ घर से निकला, लेकिन फिर वापस नहीं आया। आरोप है कि असद ने आयुष को जन्मदिन की पार्टी के नाम पर घर से बाहर बुलाया था। इसके बाद किसी स्थान पर दोनों के बीच क्या हुआ, इसे लेकर पुलिस जांच कर रही है। परिजनों का आरोप है कि असद ने आयुष पर चाकू से हमला किया और उसे मौत के घाट उतार दिया। वारदात की जानकारी सामने आने के बाद पुलिस ने आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। दोस्तों के सामने हत्या की बात कहने का आरोप-इस मामले में सबसे गंभीर आरोप यह है कि असद ने कथित तौर पर अपने दोस्तों के सामने आयुष की हत्या करने की बात कही। परिजनों की ओर से दावा किया जा रहा है कि आरोपी ने खुद कहा था कि उसने आयुष को मार डाला है। हालांकि, इस कथित कबूलनामे की स्वतंत्र और आधिकारिक पुष्टि अभी पुलिस की ओर से नहीं की गई है। पुलिस आरोपी की गिरफ्तारी के बाद उससे पूछताछ कर पूरे घटनाक्रम की कड़ियां जोड़ने का

प्रयास करेगी। परिजनों के अनुसार आयुष केंद्रीय विद्यालय का छात्र था। वह अभी नाबालिग था। परिवार के लिए उसकी हत्या किसी सदमे से कम नहीं है। आयुष की मौत की खबर जैसे ही परिवार और आसपास के लोगों तक पहुंची, लोग बड़ी संख्या में उसके घर पहुंचने लगे। परिवार का कहना है कि उनका बच्चा घर से सामान्य तरीके से निकला था, लेकिन कुछ ही समय बाद उसकी जिंदगी खत्म हो गई। इस मामले में उपलब्ध शुरुआती जानकारी में आयुष की उम्र को लेकर अलग-अलग दावे सामने आए हैं। कुछ विवरणों में उसकी उम्र 14 वर्ष, जबकि अन्य जानकारी में 17 वर्ष बताई जा रही है। ऐसे में पुलिस के आधिकारिक रिकॉर्ड और दस्तावेजों से उसकी सही उम्र की पुष्टि होना महत्वपूर्ण है। चूंकि आयुष नाबालिग था, इसलिए उसकी पहचान और व्यक्तिगत विवरण प्रकाशित करते समय भी कानूनी एवं पत्रकारिता संबंधी सावधानियों का पालन किया जाना जरूरी है। घटना के बाद थाना सेक्टर-24 पुलिस ने आरोपी असद की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस की टीमें संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही हैं। पुलिस यह भी पता लगाने में जुटी है कि आरोपी वारदात के बाद कहां गया और उसके साथ कोई अन्य व्यक्ति भी था या नहीं। नोएडा पुलिस की जांच में पुलिस के सामने कई अहम सवाल हैं। इन सवालों के जवाब नोएडा पुलिस तलाश कर रही है। आयुष को किस स्थान पर ले जाया गया था? हत्या की वजह क्या थी? क्या हत्या से पहले आयुष और असद के बीच कोई विवाद हुआ था? वारदात में कितने लोग शामिल थे? क्या हत्या पूर्व नियोजित थी? आरोपी ने कथित तौर पर दोस्तों के सामने हत्या की बात क्यों कही? घटना के बाद आरोपी कहां फरार हुआ। इस पूरी घटना में सबसे बड़ा सवाल हत्या की वजह को लेकर है। जन्मदिन की पार्टी के बहाने आयुष को घर से बुलाने और उसके बाद उसकी हत्या किए जाने के आरोपों ने मामले को बेहद गंभीर बना दिया है। अगर पुलिस जांच में यह साबित होता है कि आयुष को पहले से तय योजना के तहत घर से बुलाया गया था, तो मामला और गंभीर हो सकता है। गाजियाबाद के खोड़ा क्षेत्र में नाबालिग से जुड़ी हत्या की घटना के बाद नोएडा के चौड़ा गांव में नाबालिग की हत्या की खबर ने इलाके में चिंता बढ़ा दी है। दोनों घटनाओं का आपस में कोई संबंध है, ऐसा फिलहाल कोई तथ्य सामने नहीं आया है, लेकिन लगातार सामने आ रही ऐसी घटनाएं बच्चों और किशोरों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े करती हैं। नोएडा जैसे तेजी से विकसित हो रहे शहर में बड़ी संख्या में परिवार और युवा आबादी रहती है। ऐसे में नाबालिगों की सुरक्षा, उनकी संगत और सोशल सर्कल को लेकर अभिभावकों की चिंता स्वाभाविक है। आयुष की मौत के बाद परिवार अब पुलिस से आरोपी की जल्द गिरफ्तारी और मामले की निष्पक्ष जांच की मांग कर रहा है। मां अपने बेटे को याद कर लगातार रो रही हैं। जिस बच्चे को कुछ देर पहले जन्मदिन की पार्टी के लिए घर से जाते हुए देखा गया था, उसके वापस न लौटने की घटना ने पूरे परिवार को तोड़ दिया है। नोएडा कमिश्नरी पुलिस ने इस मामले में दी यह जानकारी-नोएडा कमिश्नरी पुलिस ने इस मामले में जानकारी देते हुए बताया कि थाना सेक्टर-24 नोएडा क्षेत्रांतर्गत दिनांक 25.08.2026 को वादिया द्वारा तहरीर दी गई कि उनका 13 वर्षीय पुत्र हैप्पी उर्फ आयुष शुक्ला घर से खेलने के लिए अपने दोस्तो के घर गया था, जिसके बाद वापस नहीं आया। वादिया की तहरीर पर सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीकृत है। मुख्य बाल अपचारी को पुलिस संरक्षण में लिया गया है। मुख्य बाल अपचारी व मृतक आयुष शुक्ला एक ही समुदाय से है तथा शेष की गिरफ्तारी हेतु पुलिस टीम गठित की गई है। उल्लेखनीय है कि पीएम रिपोर्ट में मृतक के शरीर पर कोई जाहिरा चोट परिलक्षित नही होना, अंकित है। प्रकरण में अग्रिम वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

आईएमएस नोएडा में एमबीए छात्रों के ओरिएंटेशन का समापन,उद्योग जगत के दिग्गजों ने विद्यार्थियों को नेतृत्व, कैरियर एवं उभरती तकनीकों के दिए मंत्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर-62 स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (आईएमएस) नोएडा में एमबीए विद्यार्थियों के लिए आयोजित 5 दिवसीय ओरिएंटेशन का सफलतापूर्वक समापन हुआ। सेक्टर 62 स्थित संस्थान परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों एवं उद्योग जगत के अनुभवी विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों, नेतृत्व क्षमता, टीमवर्क, करियर नियोजन, प्रभावी संचार तथा उद्योग जगत में उभरते रुझानों से परिचित कराना था। आईएमएस नोएडा के वाइस प्रेसिडेंट चिराग गुप्ता ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि उच्च शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है। उन्होंने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धी और तेजी से बदलते दौर में केवल शैक्षणिक योग्यता पर्याप्त नहीं है। नेतृत्व क्षमता, रचनात्मक सोच, प्रभावी संचार, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे गुण भी सफलता के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने तथा निरंतर सीखने की भावना बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। आईएमएस के सलाहकार प्रोफेसर डॉ. जेके शर्मा ने कहा कि ज्ञान केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसका उपयोग वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में भी किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक चुनौती को सीखने और स्वयं के विकास के अवसर के रूप में देखना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत विकास से जुड़ी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने का आह्वान किया, ताकि वे भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास और दक्षता के साथ सामना कर सकें। वहीं संस्थान की डीन सीआरसी एवं मैनेजमेंट डॉ. वर्तिका चतुर्वेदी ने बताया कि इस सप्ताहिक कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों के लिए विभिन्न कार्यशालाओं, अतिथि व्याख्यानों, समूह चर्चाओं, केस स्टडी और इंटरैक्टिव इंडस्ट्री सेशन का आयोजन किया गया। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को कक्षा में प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक परिस्थितियों से जोड़ने तथा भविष्य की पेशेवर चुनौतियों के लिए तैयार होने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि 5 दिवस तक चले इस विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 15 उद्योग विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों के साथ संवाद किया। विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को वर्तमान औद्योगिक रुझानों एवं तकनीकी प्रगति की जानकारी देने के साथ-साथ आवश्यक कौशल, नवाचार और भविष्य की चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने की रणनीतियों पर भी मार्गदर्शन प्रदान किया।

यूपी में बुजुर्ग महिलाओं को रोडवेज बसों में यात्रा फ्री,25 लाख स्टूडेंट को मिलेंगे टैबलेट

लखनऊ। योगी सरकार ने मंगलवार को कैबिनेट बैठक में जेन-जी और महिलाओं पर फोकस किया। इंटर्नशिप भत्ता बढ़ाने को लेकर आंदोलन कर रहे एमबीबीएस और बीडीएस स्टूडेंट्स का भत्ता 12 हजार से बढ़ाकर 25 हजार रुपए महीने कर दिया। ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन और कौशल विकास से जुड़े 25 लाख विद्यार्थियों को टैबलेट देने का प्रस्ताव भी मंजूर किया है। सरकार ने 3.57 लाख एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक छात्रों की अटकी स्कॉलरशिप देने के लिए पोर्टल खोलने और बजट जारी करने की मंजूरी दी है। करीब 95 लाख जिला समन्वयक, ब्लॉक समन्वयक और शिक्षा प्रेरकों के बकाया मानदेय का भुगतान कर उनकी नाराजगी दूर करने की भी कोशिश की। सरकार ने प्रदेश की करीब एक करोड़ बुजुर्ग महिलाओं को बड़ा तोहफा दिया। कैबिनेट ने लोकमाता अहिल्याबाई मातृशक्ति योजना को मंजूरी दी है।

जिलाध्यक्ष शशांक मिश्रा-देश का युवा और नौजवान खुद को भाजपा सरकार से लगातार ठगा हुआ महसूस कर रहा है

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सोनभद्र कचहरी तिराहे पर आज भारतीय युवा कांग्रेस के जिलाध्यक्ष शशांक मिश्रा के नेतृत्व में युवाओं के भविष्य, शिक्षा, रोजगार और छात्रों के लोकतांत्रिक अधिकारों के सवाल के मद्देनजर पेपर लीक, व दिल्ली में छात्रों पर लाठीचार्ज-पैलेट गन इस्तेमाल से लेकर व बिहार में एके-47 के फायरिंग आदेश तक–हर दमन पर अब जवाबदेही तय होगी सोनभद्र में युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने 20 जुलाई को छात्रों पर हुई लाठीचार्ज की कार्रवाई और पैलेट गन के इस्तेमाल को लेकर सवाल उठाते हुए पूरे मामले में जवाबदेही और निष्पक्ष जांच के साथ साथ अमित शाह के इस्तीफे की मांग को लेकर किया धरना प्रदर्शन आगे और उग्र आंदोलन की चेतावनी। जिलाध्यक्ष शशांक मिश्रा ने कहा कि आज देश का युवा और नौजवान खुद को भाजपा सरकार से लगातार ठगा हुआ महसूस कर रहा है। रोजगार, शिक्षा और बेहतर भविष्य की उम्मीद लगाए बैठे युवाओं की आवाज सुनने के बजाय यदि उनके सवालों के जवाब लाठी, गोली और बल प्रयोग से दिए जा रहे, तो यह लोकतंत्र के लिए गंभीर चिंता का विषय है सरकार को छात्रों की आवाज दबाने के बजाय उनकी समस्याओं को सुनना और संवाद के माध्यम से समाधान निकालना चाहिए। युवा कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष अभिषेक चौबे ने कहा

कि जिस देश की युवा शक्ति अपने भविष्य को लेकर सवाल पूछती है, उसके सवालों का जवाब लाठी और गोली से नहीं दिया जा सकता। सरकार को युवाओं की आवाज सुननी होगी और उनके अधिकारों का सम्मान करना होगा। युवा कांग्रेस के पूर्व प्रदेश महासचिव युवा कांग्रेस धीरज पाण्डेय ने कहा कि लगातार बढ़ती बेरोजगारी और युवाओं में बढ़ता असंतोष सरकार की नीतियों पर गंभीर सवाल खड़े करता है देश का नौजवान अपने भविष्य को लेकर जवाब मांग रहा है और सरकार को इन सवालों का जवाब देना चाहिए अन्यथा देश का युवा अब चुप नही बैठेगा सरकार को जिम्मेदारी और जवाबदेही तय करनी होगी, जिला महासचिव युवा कांग्रेस रोहिल मिश्रा ने कहा कि भाजपा सरकार को अपने अहंकार से बाहर निकलकर छात्रों और युवाओं की समस्याओं को समझना चाहिए लोकतंत्र में असहमति को दबाना किसी भी रूप में उचित नहीं है। शहर अध्यक्ष अनुपम द्विवेदी ने कहा कि आज देश का नौजवान अपने अधिकारों और बेहतर भविष्य के लिए संघर्ष कर रहा है। युवा कांग्रेस छात्रों और नौजवानों की आवाज को मजबूती से उठाती रहेगी। शहर कांग्रेस महासचिव प्रांजल श्रीवास्तव ने कहा कि युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। सरकार को छात्रों की आवाज सुननी चाहिए और उनके सवालों का जवाब देना चाहिए। प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार और संबंधित प्रशासन से छात्रों से जुड़े मामलों में पारदर्शिता, जवाबदेही और निष्पक्ष जांच की मांग की।धरना प्रदर्शन के दौरान वक्ताओं ने कहा कि छात्रों और युवाओं से जुड़े सवालों का समाधान लोकतांत्रिक संवाद के माध्यम से होना चाहिए, बल प्रयोग के माध्यम से नहीं युवा कांग्रेस नेताओं ने कहा कि छात्रों के अधिकार, रोजगार, शिक्षा, लोकतंत्र और जवाबदेही के मुद्दे पर संघर्ष लगातार जारी रहेगा अमित शाह को पैलेट गन का जवाब देना होगा भागने से काम नही चलेगा नही तो आने वाले चुनाव में युवा अपने मताधिकार के माध्यम से अपने सवालों और मुद्दों पर अपना जनादेश अवश्य देगा। इस मौके पर युवा कांग्रेस शहर उपाध्यक्ष मोहम्मद साद अंसारी, शहर महासचिव कनिष्क भार्गव, पूर्व कांग्रेस नेता सत्येंद्र दुबे तथा युवा कांग्रेस कार्यकर्ता सूर्य प्रकाश, रोहित पाण्डेय, एडवोकेट रवि शंकर उपाध्याय, मोहित कुशवाहा, पुनीत कुमार सहित अन्य कार्यकर्ता प्रदर्शन में शामिल हो कर आवाज़ बुलंद किए। भारतीय युवा कांग्रेस-सोनभद्र।

अकीदत और शान-ओ-शौकत के साथ मनाया गया 1501वां ईद-ए-मिलादुन्नबी का जश्न, शहर में निकले पुरअसर जुलूस

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) के 1501वें मिलाद-उन-नबी का जश्न

आज शहर में पूरे अकीदत, एहतराम और शान-ओ-शौकत के साथ मनाया गया। नबी की विलादत की मुबारक घड़ियों और 'सुबह-ए-बहारां' का इस्तकबाल करने के लिए भोर में नई मस्जिद से पहला जुलूस निकाला गया, जो शहर के विभिन्न हिस्सों में गश्त करने के बाद पुनः नई मस्जिद पहुंचकर संपन्न हुआ। दोपहर बाद ज़ोहर की नमाज़ के उपरांत ईद-ए-मिलादुन्नबी का मुख्य जुलूस जामा मस्जिद से रवाना हुआ। यह जुलूस नई मस्जिद होते हुए पूरे शहर में गश्त करने के पश्चात पूरब महाल में जाकर समाप्त हुआ। जुलूस में बच्चे, बूढ़े और नौजवान हाथों में परचम लिए अपने आका की आमद के नारे और नात-ए-पाक गुनगुनाते हुए शामिल हुए। फिजा में 'निसार तेरी चहल पहल पे हजारों ईदे रबीउल अव्वल... सिवाय इब्लीस के जहां में सभी तो खुशियां मना रहे हैं' का तराना गूंजता रहा। ?प्रशासन की ओर से सुरक्षा और कानून व्यवस्था के कड़े इंतज़ाम रहे। सीओ सदर रणधीर मिश्रा की देखरेख में पुलिस बल मुस्तैद रहा और जुलूस शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ।इस मुबारक मौके पर अंजुमन इस्लामिया के सदर जनाब मुश्ताक खान, अंजुमन फैज़ान-ए-मिलाद के सदर जनाब हिदायत उल्ला खान, अजहर खान, मौलाना खुर्शीद, हाफिज जावेद, नियाज़ सोनभद्री, इमरान बख्शी, तौसीफ अहमद और सैफी खान समेत बड़ी संख्या में उलेमा और अकीदतमंद मौजूद रहे।

राज्य महिला आयोग की सदस्य गीता विश्वकर्मा ने जिला कारागार एवं बाल गृह बालिका का किया निरीक्षण

महिला बंदियों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं एवं खान-पान व्यवस्था का लिया जायजा,बाल गृह बालिका में बालिकाओं की सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं की समीक्षा कर दिए आवश्यक निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य श्रीमती गीता विश्वकर्मा ने आज जनपद में जिला कारागार का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने महिला बंदियों को उपलब्ध कराई जा रही विभिन्न सुविधाओं, खान-पान, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने महिला बंदियों से संवाद कर उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इसके उपरांत राज्य महिला आयोग की सदस्य ने बाल गृह बालिका का भी निरीक्षण किया। उन्होंने बाल गृह में निवासरत बालिकाओं को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं, भोजन, रहन-सहन, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सुरक्षा संबंधी व्यवस्थाओं की जानकारी ली। उन्होंने बालिकाओं से संवाद कर उनकी

समस्याओं एवं आवश्यकताओं के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि महिला बंदियों एवं बाल गृह में निवासरत बालिकाओं को शासन द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। साफ-सफाई, गुणवत्तापूर्ण भोजन, स्वास्थ्य सेवाओं एवं सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाए तथा किसी भी प्रकार की समस्या पाए जाने पर तत्काल उसका समाधान सुनिश्चित किया जाए। राज्य महिला आयोग की सदस्य ने कहा कि महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण सुनिश्चित करना शासन की प्राथमिकता है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि व्यवस्थाओं की नियमित निगरानी करते हुए संवेदनशीलता के साथ कार्य किया जाए।

बीजपुर पुलिस द्वारा वांछित आरोपी गिरफ्तार,सिरसोती मंदिर के पास से पकड़ा

सोनभद्र। सोनभद्र के बीजपुर में पुलिस ने एक वांछित आरोपी को गिरफ्तार किया है। बुधवार सुबह सिरसोती मंदिर के पास से सोनू कुमार नामक व्यक्ति को पकड़ा गया, जो धारा 80(2)85 बी एन एस 3/4डी पी एक्ट के तहत फरार चल रहा था।

उच्चाधिकारियों के निर्देश पर वांछितों और वारंटियों की गिरफ्तारी के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। थानाध्यक्ष राजेश कुमार सिंह के नेतृत्व में उप निरीक्षक कमला कांत पाण्डेय, प्रधान आरक्षी भानु प्रताप यादव और आरक्षी के के गुप्ता की टीम क्षेत्र में गश्त कर रही थी। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि वांछित अभियुक्त सिरसोती मंदिर के पास खड़ा है। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस की गाड़ी देखते ही संदिग्ध भागने लगा, लेकिन पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए उसे धर दबोचा। संबंधित मुकदमा में वांछित-थाने लाकर पूछताछ करने पर आरोपी ने अपना नाम सोनू कुमार पुत्र स्वर्गीय रामलाल, निवासी सिरसोती बताया। वह संबंधित मुकदमे में वांछित था। बुधवार सुबह 5:45 बजे गिरफ्तारी के बाद, आरोपी के खिलाफ विधिक कार्रवाई पूरी कर उसे न्यायालय में पेश किया गया।

सोनभद्र में ईद मिलादुन्नबी के अवसर पर निकला जुलूस,अकीदतमंदों ने पैगंबर मोहम्मद के जन्मदिन पर दिया भाईचारे का संदेश

सोनभद्र। बुधवार को बारावफात (ईद-मिलादुन्नबी) का पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के जन्मदिन पर मुस्लिम समुदाय द्वारा भव्य जुलूस निकाला गया। अकीदतमंदों ने इस दौरान भाईचारे और अमन-चैन का संदेश दिया। मुख्यालय सहित दुद्धी, बभनी, म्योरपुर, रेणुकूट, अनपरा, शक्तिनगर, ओबरा, घोरावल और करमा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भी जुलूस निकाले गए। रॉबर्ट्सगंज में जुलूस की शुरुआत जामा मस्जिद से जोहर की नमाज के बाद हुई, जो मेन मार्केट होते हुए नई मस्जिद पहुंचा उसके बाद जुलूस जुलूस विभिन्न चौराहे से होते हुए वापस नई मस्जिद पर पहुंच कर समापन हो गया- नई मस्जिद के पेश इमाम मौलाना खुर्शीद साहब ने लोगों को संबोधित करते हुए देश में अमन-चैन, आपसी भाईचारे, सद्भाव और मोहब्बत का पैगाम दिया। जुलूस में शामिल अकीदतमंदों ने पैगंबर की शान में धार्मिक नारे लगाए और उनकी पैदाइश की खुशी मनाई। जुलूस के दौरान पूरब महाल के युवाओं द्वारा तैयार की गई काबा और मदीना की झांकी लोगों के आकर्षण का मुख्य केंद्र रही। इस झांकी को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग उमड़े। बच्चों और युवाओं ने इसे आकर्षक ढंग से सजाने में विशेष उत्साह दिखाया। जुलूस में शामिल लोगों ने धार्मिक नारों के साथ अमन, शांति और भाईचारे का संदेश दिया। मार्ग में जगह-जगह लोगों ने जुलूस का स्वागत किया, जिससे कार्यक्रम को लेकर युवाओं और बच्चों में भी खासा उत्साह देखने को मिला। मौलानाओं ने हजरत मोहम्मद साहब की जिंदगी, उनके संघर्ष और उनकी शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पैगंबर ने कठिनाइयों का सामना करते हुए लोगों को अल्लाह की इबादत, इंसानियत, अमन और भाईचारे का संदेश दिया। मौलानाओं ने अकीदतमंदों से उनके बताए मार्ग पर चलने और समाज में शांति कायम रखने का आह्वान किया। जुलूस के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए सीओ सिटी रणधीर मिश्रा के नेतृत्व में रॉबर्ट्सगंज कोतवाली प्रभारी धर्मेंद्र सिंह, रॉबर्ट्सगंज चौकी इंचार्ज सहित भारी पुलिस बल मौजूद रहा। कार्यक्रम के समापन पर देश में अमन-चैन, खुशहाली और आपसी भाईचारे के लिए विशेष दुआएं की गईं।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

स्पोर्ट्स

नुक्सान से पहले कराएं वाटरप्रूफिंग, क्या नए घर में भी कराना जरूरी, जानें सही तरीका और जरूरी सावधानियां

लखनऊ। मानसून जल्द ही केरल में दस्तक देने वाला है। लगभग 20 दिन बाद मध्य-उत्तर भारत में भी पहुंच जाएगा। अगर मानसून से पहले घर की देखभाल न करने पर छोटी दरारें, सीलन और लीकेज भी बड़ी समस्या बन सकती हैं। इसलिए घर की सुरक्षा के लिए समय रहते वाटरप्रूफिंग जरूरी है। कुछ लोग मानते हैं कि नए घरों में वाटरप्रूफिंग की जरूरत नहीं होती। लेकिन एक्सपट्र्स के अनुसार, इससे छत, दीवार और बेसमेंट सुरक्षित रहते हैं। साथ ही घर की लाइफ भी बढ़ती है। इसलिए 'जरूरत की खबर' में आज वाटरप्रूफिंग की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- कैसे समझें कि घर में वाटरप्रूफिंग की जरूरत है? इस दौरान किन बातों का ध्यान रखें? इन्ही चीज़ो को समझेंगे एक्सपर्टः दिनेश कुमार, सिविल इंजीनियर, लखनऊ जी के साथ सवाल जवाब के माधयम से। बारिश के कारण छोटे क्रैक्स और नमी बड़े लीकेज में बदल सकते हैं। समय पर की गई वाटरप्रूफिंग घर को लंबे समय तक सुरक्षित रखती है और मरम्मत का खर्च कम करती है। इससे घर को नुकसान होता है और उसकी लाइफ कम होती है। सवाल- क्या नए घरों में भी वाटरप्रूफिंग जरूरी है? जवाब- हां, इसे 'प्रिवेंटिव वाटरप्रूफिंग' कहते हैं। इससे भविष्य की समस्याओं से बचाव होता है। नया घर बनने के बाद कंक्रीट और प्लास्टर में हल्की दरारें आ सकती हैं, जिनसे पानी अंदर जा सकता है। समय पर वाटरप्रूफिंग कराने से छत टपकने, सीलन और पेंट खराब होने का रिस्क कम होता है। इससे सरिया और कंक्रीट सुरक्षित रहते हैं और घर मजबूत बना रहता है। निर्माण के समय वाटरप्रूफिंग कराना बाद में रिपेयर कराने की तुलना में सस्ता और आसान पड़ता है। सवाल- वाटरप्रूफिंग कराने का सही समय क्या है? जवाब- इसका सबसे सही समय मानसून से पहले है। सूखी सतह पर सामग्री बेहतर काम करती है। कोटिंग और केमिकल्स को सूखने का पूरा समय मिलता है। गर्म और सूखे मौसम में क्रैक्स व लीकेज आसानी से दिख जाते हैं और उन्हें ठीक किया जा सकता है।पहले से कराया गया काम बारिश के दौरान मरम्मत कराने से ज्यादा किफायती होता है। सवाल- मानसून शुरू होने से कितने दिन पहले वाटरप्रूफिंग करा लेनी चाहिए? जवाब- मानसून शुरू होने से कम-से-कम 25-30 दिन पहले वाटरप्रूफिंग करा लेनी चाहिए। इससे मरम्मत, कोटिंग और सूखने (क्योरिंग) के लिए पर्याप्त समय मिलता है। सवाल- वाटरप्रूफिंग का काम कौन करता है? अपने शहर में सही कॉन्ट्रैक्टर कैसे ढूंढें? जवाब- वाटरप्रूफिंग का काम आमतौर पर स्पेशलाइज्ड वाटरप्रूफिंग कॉन्ट्रैक्टर, सिविल रिपेयर कंपनियां या बिल्डिंग मेंटेनेंस सर्विस प्रोवाइडर करते हैं। ये लोग छत, बाथरूम, दीवार, बेसमेंट और पानी की टंकी जैसी जगहों पर लीकेज रोकने के लिए अलग-अलग टेक्नीक और केमिकल इस्तेमाल करते हैं।

वाटरप्रूफिंग कॉन्ट्रैक्टर ढूंढ रहे हैं, तो इन बातों का ध्यान रखें- पहले उनकी पुरानी साइट्स या काम की फोटो देखें। कॉन्ट्रैक्टर से लिखित वारंटी जरूर लें। कौन-सा मटेरियल इस्तेमाल होगा, यह स्पष्ट पूछें। सिर्फ सस्ता कोटेशन देखकर फैसला न लें। गूगल रिव्यूज और लोकल रेफरेंस जरूर चेक करें। ऐसे कॉन्ट्रैक्टर चुनें, जो पहले साइट इंस्पेक्शन करे, फिर समाधान बताएं। काम शुरू होने से पहले एरिया, लेयर और टाइमलाइन लिखित में तय करें। सवाल- वाटरप्रूफिंग कितने प्रकार की होती है? कौन-सी टेक्नीक सबसे टिकाऊ मानी जाती है? जवाब- घर में जरूरत के हिसाब से कई तरह की वाटरप्रूफिंग टेक्नीक इस्तेमाल की जाती हैं। हर टेक्नीक का उपयोग अलग जगह और समस्या के अनुसार होता है। सवाल- छत की वाटरप्रूफिंग में कितना खर्च आता है? खर्च कैसे कैलकुलेट करें? जवाब- खर्च आमतौर पर प्रति वर्गफुट तय होता है। टेक्नीक, मटेरियल और लीकेज की स्थिति पर लागत निर्भर करती है। साधारण कोटिंग सस्ती होती है, जबकि PU (पॉलीयुरेथेन) और मेम्ब्रेन सिस्टम महंगे होते हैं। क्रैक्स रिपेयर और लेबर चार्ज अलग जुड़ सकते हैं। इसलिए पहले साइट की माप और कॉन्ट्रैक्टर के साथ निरीक्षण जरूरी है। सवाल- क्या छत और दीवारों के लिए अलग-अलग वाटरप्रूफिंग टेक्नीक होती है? जवाब- हां, दोनों के लिए अलग टेक्नीक इस्तेमाल होती है। छत पर पानी ज्यादा रुकता है, इसलिए मजबूत मेम्ब्रेन या पीयू कोटिंग लगती है। बाहरी दीवारों में एंटी-सीपेज और युवी-रेजिस्टेंट कोटिंग कारगर रहती है। बाथरूम और बेसमेंट के लिए अलग सिस्टम चुने जाते हैं। सवाल- एक बार वाटरप्रूफिंग कराने के बाद यह कितने साल तक चलती है? जवाब- वाटरप्रूफिंग की लाइफ टेक्नीक और केयर पर निर्भर करती है। सामान्य सीमेंट बेस्ड सिस्टम 5-7 साल चल सकते हैं। पीयू और मेम्ब्रेन सिस्टम 10-15 साल तक चल सकते हैं। खराब ड्रेनेज, दरारें और तेज धूप इसकी लाइफ घटा सकते हैं। इसलिए समय-समय पर निरीक्षण जरूरी है। सवाल- वाटरप्रूफिंग कराते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? जवाब- वाटरप्रूफिंग कराते समय कुछ बातों का ख्याल जरूर रखें-लीकेज और दरारों की जांच कराएं। सतह साफ और सूखी होनी चाहिए। जरूरत के मुतबिक वाटरप्रूफिंग चुनें। क्वालिटी मटेरियल का इस्तेमाल करें। अनुभवी कॉन्ट्रैक्टर से काम कराएं। ड्रेनेज सिस्टम की जांच करवाएं। काम के बाद निरीक्षण कराते रहें। वाटरप्रूफिंग से जुड़े जरूरी सवाल-जवाबः- सवाल- क्या पुरानी छत पर दोबारा वाटरप्रूफिंग कराई जा सकती है?जवाब- हां, पुरानी छत पर दोबारा वाटरप्रूफिंग कराई जा सकती है। पहले पुरानी लेयर, क्रैक्स और लीकेज की जांच जरूरी होती है। जरूरत पड़ने पर सतह रिपेयर की जाती है। उसके बाद नई कोटिंग या मेम्ब्रेन लगाई जाती है। सही रिपेयर से छत की लाइफ बढ़ सकती है। सवाल- क्या वाटरप्रूफिंग कराने के बाद भी रेगुलर मेंटेनेंस जरूरी होता है? जवाब- हां, रेगुलर मेंटेनेंस जरूरी है। इसके लिए- छत पर पानी जमा न होने दें। क्रैक्स और ड्रेनेज समय-समय पर चेक करें।गटर और पाइप साफ रखें। छोटी खराबी तुरंत ठीक कराएं। रेगुलर निरीक्षण से वाटरप्रूफिंग ज्यादा समय तक टिकती है। सवाल- क्या वाटरप्रूफिंग पर कंपनी वारंटी या गारंटी देती है? जवाब- हां, कई कंपनियां और कॉन्ट्रैक्टर वारंटी देते हैं।वारंटी टेन्योर टेक्नीक और मटेरियल पर निर्भर करती है। सामान्य तौर पर 5-10 साल तक की वारंटी मिल सकती है। शर्तें पहले लिखित में जरूर लें। वारंटी में रिपेयर, लीकेज और सर्विस कवरेज समझना जरूरी है। सवाल-वाटरप्रूफिंग और डैम्प-प्रूफिंग में क्या अंतर है? जवाब-वाटरप्रूफिंग पानी के लीकेज को पूरी तरह रोकती है। डैम्प-प्रूफिंग सिर्फ नमी और सीलन कम करने के लिए होती है।वाटरप्रूफिंग छत, बेसमेंट और टैंक में ज्यादा उपयोग होती है। डैम्प-प्रूफिंग दीवारों और फर्श में नमी रोकने के लिए इस्तेमाल होती है। वाटरप्रूफिंग ज्यादा मजबूत और टिकाऊ समाधान माना जाता है।

इंटरनेशनल शूटर के डॉग को होटल में नहीं मिला रूम, दार्जिलिंग में 8 घंटे भटके, ट्रैवल एजेंसी पर रु1.08 लाख का जुर्माना

रोहतक। रोहतक की रहने वाली इंटरनेशनल शूटर काजल सैनी के डॉग जोनी को टूर पैकेज में शामिल होने के बावजूद दार्जिलिंग के होटल में कमरा देने से मना कर दिया गया। इसे लेकर काफी विवाद भी हुआ, लेकिन होटल मैनेजमेंट अपने फैसले पर कायम रहा। बाद में ट्रैवल एजेंसी के कहने पर किसी तरह जोनी को होटल में रखने की व्यवस्था की गई। ऐसी ही स्थिति सिक्किम में भी सामने आई। नाथू ला दर्रा घूमकर लौटने के बाद उनका होटल बदलकर 30 किलोमीटर दूर कर दिया गया। वहां भी जोनी को लेकर परेशानी हुई। इसके चलते पूरी फैमिली करीब आठ घंटे तक इधर-उधर भटकती रही। टूर के दौरान सामने आई इन परेशानियों को लेकर शूटर के पिता ने ट्रैवल एजेंसी के खिलाफ कंज्यूमर कोर्ट में केस दर्ज कराया। डेढ़ साल चली सुनवाई के बाद कोर्ट ने ट्रैवल एजेंसी को सेवा में कमी का दोषी मानते हुए 1 लाख 8 हजार रुपए का जुर्माना लगाया। इसमें 9फीसदी ब्याज, 10 हजार रुपए मानसिक परेशानी का मुआवजा और 5 हजार रुपए केस खर्च भी शामिल हैं। एक न्यूज़ पोर्टल ने शूटर काजल सैनी के पिता विजय सैनी से इस पूरे मामले में बातचीत की। विजय सैनी बिजनेसमैन हैं। वह शूटिंग एकेडमी भी चलाते हैं और रोहतक के एक शिक्षण संस्थान के लगातार तीन बार प्रधान रह चुके हैं। उन्होंने मई 2024 में टूर पैकेज बुक करने से लेकर अब तक कोर्ट के फैसले तक की पूरी कहानी बताई। 16 मई 2024 को टूर पैकेज बुक कियाः विजय सैनी ने बताया कि उन्होंने परिवार के लिए 16 मई 2024 को सीमा टूर्स एंड ट्रैवल्स से 6 दिन-5 रात का सिक्किम, गंगटोक, नाथू ला चाइना बॉर्डर और दार्जिलिंग टूर पैकेज बुक किया था। पैकेज में होटल, ब्रेकफास्ट, डिनर और टैक्सी

शामिल थी। परिवार के साथ डॉग जोनी भी था, जिसके ठहरने के लिए एजेंसी ने पैकेज में अलग से राशि ली थी।डॉग की वजह से ट्रेन से किया सफरः विजय सैनी ने बताया कि करीब 4 साल पहले जोनी को डेढ़ महीने की उम्र में परिवार में लाया गया था। बेटी काजल सैनी को उससे खास लगाव है। पहले उन्होंने टूर के लिए हवाई जहाज से सिक्किम जाने की टिकट बुक की थी, लेकिन डॉग को कार्गो में पिंजरे में ले जाने की जानकारी मिलने के बाद टिकट कैंसिल कर दी। इसके बाद परिवार ट्रेन की फर्स्ट क्लास कूपे से सिक्किम गया। टैक्सी चालक ने डॉग को बैठाने से मना कियाः ट्रेन से लंबा सफर करके परिवार सिक्किम पहुंचा। वहां टैक्सी चालक ने डॉग जोनी को गाड़ी में बैठाने से मना कर दिया। ट्रैवल एजेंसी से बात करने के बाद डॉग को टैक्सी में बैठाया गया। इसके बाद होटल पहुंचने पर जोनी को कमरे में रखने से मना कर दिया गया। एक बार फिर एजेंसी से बात करने के बाद होटल प्रबंधन डॉग को रखने के लिए तैयार हुआ। दार्जिलिंग में फिर विरोध, होटल बदल दियाः सिक्किम से दार्जिलिंग पहुंचने पर होटल संचालक ने जोनी को ठहराने से इनकार कर दिया। काफी देर बहस और एजेंसी से बातचीत के बाद होटल में डॉग को रखने की अनुमति मिली। मगर, जब परिवार नाथू ला चाइना बॉर्डर घूमकर वापस लौटा तो पता चला कि उनका होटल बदल दिया गया है। 30 किमी दूर दूसरा होटल, 8 घंटे भटकना पड़ाः विजय सैनी के मुताबिक, परिवार को करीब 30 किलोमीटर दूर दूसरे होटल में भेज दिया गया। वहां भी जोनी को लेकर परेशानी हुई। इस पूरी प्रक्रिया में परिवार को करीब 8 घंटे तक इधर-उधर भटकना पड़ा। किसी तरह परिवार ने 6 दिन-5 रात का टूर पूरा किया और वापस लौट आया। 14 जनवरी 2025 को केस दर्ज कराया: विजय सैनी के मुताबिक, टूर के दौरान हुई परेशानियों को लेकर फैमिली काफी खफा थी। कारण था कि जब एजेंसी ने डॉग सहित पूरे पैकेज की रकम ली, तो सुविधाएं भी देनी चाहिए थी या पहले ही मना किया जा सकता था। इन्हीं सब बातों को देखते हुए उन्होंने उपभोक्ता फोरम में सीमा टूर्स एंड ट्रैवल्स के खिलाफ केस दर्ज कराया। वॉट्सएप चैट बनी सबूतः विजय सैनी ने केस में ट्रैवल एजेंसी पर पैकेज में डॉग को शामिल करने के बावजूद सुविधाएं नहीं देने का आरोप लगाया। एजेंसी के साथ हुई बातचीत की वॉट्सएप चैट उपभोक्ता फोरम में पेश की।

चमत्कारी फल है सी-बकथॉर्न, जानिए इसके उपयोग और औषधीय लाभ के बारे में

हिमाचल। सी-बकथॉर्न एक चमत्कारी, अमृत तुल्य आयुर्वेदिक फल है। यह एक

झाड़ी होती है जो नारंगी-पीले रंग के खाने योग्य बेरों का उत्पादन करती है। यह बहुत ऊंचाई पर उत्पन्न होने वाला एक पादप है। इसे हिमालयन बेरो भी कहते हैं। औषधि बनाने के लिए इसकी पत्तियों, फूलों और फलों का उपयोग किया जाता है। यह पौधा मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के ऊंचाई वाले पहाड़ी इलाकों में पाया जाता है। सो बकथॉनं बेरी को वंडर बेरी, लेह बेरी और लाख गोल्ड के नाम से भी जाना जाता है। इस फल में ऐसे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो बाकी फलों और सब्जियों में नहीं मिलते हैं। इसमें प्रो- विटामिन जैसे ए, बी-2 और सी के अलावा ओमेगा ऑयल भी होता है। यह फल 43 डिग्री तापमान से लेकर ῀40 डिग्री के तापमान पर विकास कर लेता है। इसी अनोखे गुण से हम इसे ठंडे रेगिस्तान का फल कहते हैं। यह पर्यावरण में नाइट्रोजन गैस सन्तुलन को स्थिर रखता है और पहाड़ी क्षेत्र में भूमि क्षरण को रोकता है। सी -बकथॉन एक ऐसा आयुर्वेदिक फल है जिसमें हमारे शरीर की हर जरूरी पोषक तत्व की भरपूर मात्रा होती है; जैसे कि ओमेगा फैटी एसिड 3, 6, 7 और 9 आदि इसमें पर्याप्त मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स पाया जाता है। इसके अलावा इसमें विटामिन - सी, ई, अमीनो अम्ल, लिपिड, बीटा कैरोटीन, लाइकोपिन के अलावा प्रो-विटामिन, खनिज और बॉयोलॉजिकल एक्टिव तत्व पाए जाते हैं। यह इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए एक उत्तम फल है। डीआरडीओ भी कर रहा है शोध-वर्ष 2010 में पर्यावरण मंत्रालय और डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (डीआरडीओ) ने एक विशाल राष्ट्रीय पहल की शुरुआत की थी। हिमाचल प्रदेश के स्पीति गांव के लोग भारी बर्फबारी की वजह से पूरे छह माह तक बाहरी दुनिया से कटे रहते हैं। ऐसे में उन्हें एक ऐसे विकल्प की तलाश थी जो उन्हें मुश्किल समय के साथ नियमित तौर पर रोजगार मुहैया करवाता रहे। शोध संस्थानों द्वारा एक ऐसी पद्धति की खोज की गई है जिसके द्वारा एसिडिक एसिड की सबसे ज्यादा मात्रा वाले इस फल का जूस तैयार किया गया। इस फल का जूस सियाचिन या द्रास या फिर कारगिल जैसे इलाकों में जमता नहीं है। इस पेटेंट टेक्नोलॉजी को सहायता ग्रुप, कुछ एनजीओ और स्थानीय उद्यमियों को ट्रांसफर किया गया। इसके बाद कुछ और उत्पाद जैसे- हर्बल टी, एंटी-ऑक्सीडेंट सप्लीमेंट, सीप्रिकॉट जूस, जैम, जैली, सी-बकथोर्न ऑयल सॉफ्ट जैल कैप्सूल, यूवी प्रोटेक्टिव ऑयल, बेकरी प्रॉडक्ट्स और जानवरों का चारा तैयार किया गया। सी-बकथॉर्न का उपयोग, सी-बकथॉर्न ड्राई बेरीज, सी-बकथॉर्न एक्स्ट्रेक्ट सॉफ्ट जैल, कैप्सूल, सी-बकथॉर्न इम्यूनिटी बूस्टर जूस, सी-बकथॉर्न ब्यूटी केयर प्रॉडक्टस, सी-बकथॉर्न का ऑयल लिक्विड एक्स्ट्रेक्ट, एनर्जी ड्रिंक, सीप्रिकॉट जूस, जैम, जैली, सी-बकथॉर्न के औषधीय लाभ-सी-बकथॉर्न की चाय में विटामिन डी, एंटीऑक्सीडेंट, प्रोटीन, अमीनो अम्ल, फैटी एसिड और मिनरल्स आदि पोषक तत्व होते हैं और यह ब्लड प्रेशर के मरीजों के लिए फायदेमंद होती है। यह चाय ब्लड कॉलेस्ट्रॉल कम करती है और इम्यूनिटी को बढ़ाने के लिए बहुत फायदेमंद है। इसका सेवन करने से यह शरीर की वृद्धि, विकास और शरीर को स्वस्थ रहता है। अन्य कोशिकीय संरचनाओं के लिए निर्माण ब्लॉक के रूप में काम करता है। ठंडे शरीर में इंसुलेशन देता है। सी-बकथॉन की पत्तियों और फूलों का उपयोग गठिया, गाउट, स्किन समस्या, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल अल्सर जैसी बीमारियों के उपचार में किया जाता है।यह एथलीट को बेहतर प्रदर्शन में भी मदद करता है। एथलीटों की सहनशक्ति बढ़ाने के साथ-साथ प्रतियोगिता के बाद उन्हें दोबारा स्वस्थ रखता है।शोधकर्ताओं के अनुसार, इसमें मौजूद फॉस्फेटिडाइलेसेरिन (पीएस) शरीर के ऊतकों को टूटने से बचाता है। मानसिक तनाव को दूर करता है। कैंसर में फायदेमंद। डायबिटीज में लाभप्रद। मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। थायरॉइड को कंट्रोल करता है। लीवर को हृष्टपुष्ट रखता है। इसमें पाया जाने वाला एंटीऑक्सीडेंट ब्रेन ट्यूमर के विकास को रोकता है। रेडियोप्रोटेक्टिव गुण होने के कारण शरीर को विकिरण से बचाता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। वजन नियंत्रण करने में सहायक। बाल, नाखून और स्किन को स्वस्थ रखता है। आंखों को स्वस्थ रखता है। एल्जाइमर से निजात दिलाने में मददगार है। सिरोसिस, एक्जिमा, झाइयां और मुहांसों में भी फायदेमंद है।

आधी उम्र के बाद हड्डियां होतीं हैं कमजोर,शरीर के इशारों को न करें इग्नोर, डॉक्टर से जानें हड्डियां मजबूत बनाने के टिप्स

नयी दिल्ली। 40 की उम्र के बाद हड्डियों में कमजोरी एक 'साइलेंट' प्रॉब्लम है, जो धीरे-धीरे

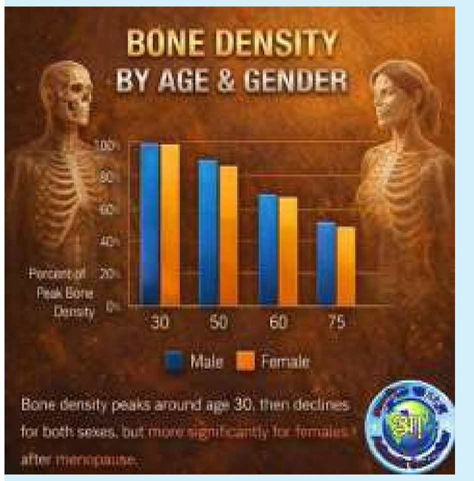

बढ़ती है। यह अक्सर तब सामने आती है, जब फ्रैक्चर या दर्द होता है। दरअसल उम्र बढ़ने के साथ शरीर में कैल्शियम का अवशोषण कम हो जाता है और बोन डेंसिटी घटने लगती है। महिलाओं में मेनोपॉज के बाद यह प्रक्रिया और तेज हो जाती है। खराब लाइफस्टाइल, विटामिन डी की कमी, एक्सरसाइज की कमी और गलत खानपान इस खतरे को बढ़ा सकते हैं। परेशानी की बात यह है कि शुरुआत में इसके लक्षण बहुत स्पष्ट नहीं होते। इसलिए लोग इसे नजरअंदाज कर देते हैं। अगर समय रहते इस पर ध्यान दिया जाए तो बोन लॉस की प्रक्रिया को थोड़ा स्लो किया जा सकता है। आज 'जरूरत की खबर' में बोन हेल्थ पर बात करेंगे। साथ ही जानेंगे-हड्डियों की कमजोरी के क्या संकेत हैं? स्ट्रॉन्ग बोन हेल्थ के लिए लाइफस्टाइल कैसी होनी चाहिए? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अभिषेक कुमार मिश्रा, सीनियर कंसल्टेंट, ऑर्थोपेडिक्स एंड स्पाइन, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। कैल्शियम की कमी-उम्र बढ़ने के साथ शरीर में कैल्शियम का अवशोषण कम हो जाता है। अगर डाइट से पर्याप्त कैल्शियम नहीं मिलता तो शरीर हड्डियों से कैल्शियम लेने लगता है। इससे हड्डियां कमजोर होने लगती हैं। विटामिन डी की कमी-विटामिन डी कैल्शियम को शरीर में एब्जॉर्ब करने में मदद करता है। धूप में कम समय बिताने और खराब लाइफस्टाइल के कारण इसकी कमी हो जाती है। इससे हड्डियां कमजोर होती हैं। हॉर्मोनल बदलाव (खासकर महिलाओं में) महिलाओं में मेनोपॉज के बाद एस्ट्रोजेन हॉर्मोन तेजी से घटता है। यह हॉर्मोन हड्डियों को मजबूत रखने में मदद करता है। इसकी कमी से बोन लॉस बढ़ सकता है। बोन रिमॉडलिंग इंबैलेंस-हमारी हड्डियां लगातार टूटती और बनती रहती हैं। 30-35 साल की उम्र तक ये अपनी पीक स्ट्रेंथ पर होती हैं। 40 के बाद हड्डियां घिसने की प्रक्रिया तेज और बनने की प्रक्रिया स्लो हो जाती है.इसके कारण हड्डियां धीरे-धीरे पतली और कमजोर होने लगती हैं। लो फिजिकल एक्टिविटी-40 के बाद ज्यादातर लोग एक्टिव नहीं रहते हैं। हड्डियों की मजबूती के लिए फिजिकल एक्टिविटी जरूरी है। इसकी कमी से हड्डियां कमजोर पड़ती हैं। खराब लाइफस्टाइल-ज्यादा नमक, जंक फूड, कैफीन, शराब और स्मोकिंग हड्डियों से कैल्शियम कम करती हैं और बोन डेंसिटी घटाती हैं। कुछ बीमारियां और दवाएं-थायरॉइड, किडनी डिजीज जैसी बीमारियां हड्डियों को कमजोर बना सकती हैं। लंबे समय तक स्टेरॉयड लेने से भी हड्डियां कमजोर हो सकती हैं। सवाल- हड्डियों की कमजोरी के क्या संकेत हैं? जवाब- हड्डियों की कमजोरी के शुरुआती संकेत बहुत हल्के होते हैं। इसलिए लोग इसे नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन समय रहते ये लक्षण पहचान लिए जाएं तो बड़ी समस्या से बचा जा सकता है। सवाल- 40῀ एज में किन लोगों को बोन लॉस का रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- कुछ लोगों को इसका रिस्क ज्यादा होता है। इसके पीछे शरीर, लाइफस्टाइल और मेडिकल फैक्टर्स जिम्मेदार हैं। पॉइंटर्स में देखिए किन्हें ज्यादा रिस्क है- जिन्हें कैल्शियम/विटामिन डी की कमी है। जो फिजिकली कम एक्टिव रहते हैं। जो स्मोकिंग/ड्रिंकिंग करते हैं। जिनका बीएमआई बहुत कम है। जिनकी बोन डिजीज की फैमिली हिस्ट्री है। जिन्हें थायरॉइड है। जिन्हें किडनी डिजीज है। जिन्हें रूमेटाइड आर्थराइटिस है। जो मेडिकेशन पर हैं। जिनका सनलाइट एक्सपोजर कम है। जिनकी लाइफस्टाल खराब है। जिनकी उम्र 50 से ऊपर है। जिन महिलाओं को मेनोपॉज हो चुका है। सवाल- हड्डियां कमजोर होने से किन बीमारियों का रिस्क बढ़ता है? जवाब- कमजोर हड्डियां दर्द या थकान के साथ कई गंभीर बीमारियों का रिस्क बढ़ा सकती हैं। 40+ उम्र में यह रिस्क और ज्यादा हो जाता है। सवाल- बोन हेल्थ का पता कैसे लगाया जाता है? जवाब- बोन हेल्थ का सही आकलन सिर्फ लक्षणों से नहीं लगाया जा सकता है। इसके साथ टेस्ट और मेडिकल एसेसमेंट की भी जरूरत होती है।जैसेकि-बीएमडी (बोन मिनरल डेंसिटी) टेस्ट इसमें हड्डियों की डेंसिटी मापी जाती है। डुअल-एनर्जी एक्स-रे एब्जॉर्प्टियोमेट्री स्कैन किया जाता है। इससे पता चलता है कि हड्डियां नॉर्मल हैं, कमजोर हैं या ऑस्टियोपोरोसिस (हड्डियां पतली या कमजोर होना) है। एक्स-रे-इससे हड्डियों के स्ट्रक्चर और फ्रैक्चर का पता चलता है। हालांकि शुरुआती बोन लॉस इसमें नहीं दिखता है। ब्लड टेस्ट-कैल्शियम और विटामिन डी का लेवल जांचा जाता है। थायरॉइड या अन्य समस्याओं का भी पता चलता है। इससे हड्डियों की कमजोरी की वजह समझने में मदद मिलती है। फ्रैक्चर रिस्क एसेसमेंट टूल स्कोर यह एक कैलकुलेशन टूल है। यह उम्र, वजन, लाइफस्टाइल और मेडिकल हिस्ट्री के आधार पर फ्रैक्चर रिस्क बताता है। शारीरिक संकेतडॉक्टर कुछ लक्षणों के आधार पर अंदाजा लगाते हैं। जैसे- बार-बार फ्रैक्चर लगातार हड्डियों में दर्द - लाइफस्टाइल (डाइट, एक्सरसाइज) मेडिकल हिस्ट्री सवाल- लाइफस्टाइल का बोन हेल्थ पर क्या प्रभाव पड़ता है? जवाब- संतुलित डाइट, रेगुलर एक्सरसाइज और पर्याप्त धूप लेने से हड्डियां मजबूत होती हैं। जबकि खराब खानपान, लो फिजिकल एक्टिविटी, स्मोकिंग और ड्रिंकिंग हड्डियों को कमजोर करते हैं। गलत आदतें धीरे-धीरे बोन डेंसिटी कम करती हैं और समय के साथ ऑस्टियोपोरोसिस का रिस्क बढ़ा सकती हैं। सवाल- स्ट्रॉन्ग बोन हेल्थ के लिए लाइफस्टाइल कैसी होनी चाहिए? जवाब- हेल्दी लाइफस्टाइल और सही आदतें बोन हेल्थ को स्ट्रॉन्ग बनाने में मदद करती हैं। बोन हेल्थ से जुड़े कॉमन सवाल और जवाब-सवाल- क्या बिना टेस्ट के भी बोन हेल्थ का पता चल सकता है? जवाब- नहीं, केवल लक्षणों से सटीक पता नहीं चलता।सही आकलन के लिए टेस्ट जरूरी होते हैं। सवाल- क्या बोन लॉस को पूरी तरह रोका जा सकता है? जवाब- पूरी तरह तो नहीं, लेकिन सही डाइट, रेगुलर एक्सरसाइज और हेल्दी लाइफस्टाइल से इसे काफी हद तक धीमा किया जा सकता है। सवाल- क्या हर व्यक्ति को 40 के बाद बोन डेंसिटी टेस्ट कराना चाहिए? जवाब- हां, लेकिन जिन्हें ज्यादा रिस्क है, उन्हें जरूर कराना चाहिए। जैसेकि-मेनोपॉज होने पर। जिन्हें पहले फ्रैक्चर हो चुका हो। जिन्हें कैल्शियम/विटामिन फ्रैक्चर रिस्क एसेसमेंट टूल की कमी है। जो लंबे समय से स्टेरॉयड ले रहे हैं। सवाल- क्या सिर्फ सप्लीमेंट लेने से हड्डियां मजबूत हो सकती हैं? जवाब- नहीं, सप्लीमेंट के साथ संतुलित डाइट और हेल्दी लाइफस्टाइल भी जरूरी है।सवाल-किन स्थितियों में डॉक्टर की सलाह लेना जरूरी है? जवाब- इन स्थितियों में डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है- किसी खास कारण के बिना लगातार हड्डियों में दर्द बना रहे।मामूली झटके में हड्डी टूट जाए। चलने-फिरने में दिक्कत या बैलेंस खराब हो। कमजोरी, थकान या मसल्स में दर्द हो। अगर बोन डिजीज की फैमिली हिस्ट्री हो। लंबे समय से स्टेरॉयड या अन्य दवाएं ले रहे हों। 50 साल से ज्यादा उम्र हो। सवाल- 40 की उम्र के बाद हड्डियां कमजोर क्यों होने लगती हैं? जवाब- 40 की उम्र के बाद हड्डियों का कमजोर होना एक सामान्य प्रक्रिया है, लेकिन यह अचानक नहीं होता। इसके पीछे कई कारण हैं।

आपस में सुनने की आदत एक ब्रेकडाउन को ब्रेकथ्रू बनाती है

कई दशक पहले की बात है, मेरे कजिन की शादी थी। हमारी पीढ़ी में यह पहली शादी थी। हम सब कजिन इतने उत्साहित थे कि मद्रास (अब चेन्नई) में इकट्ठा हुए और तैयारियों में जुट गए। लेकिन हमेशा हंसने और खुश रहने वाली कजिन, जिसकी पांच दिन बाद शादी थी, वह अचानक हमें अवॉइड करने लगी। वह हमेशा अपने टेलीफोन वाले कमरे में बंद रहती। हम उसे सताने लगे कि उसे प्रेम हो गया है। वह गुस्से और शर्म की मिलीजुली-सी प्रतिक्रिया देती। लेकिन जब नानाजी ने आकर हमें एक अलग कहानी बताई तो लगा कि हम गलत समझ रहे थे। उन्होंने कहा कि 'वह पीड़ा में है, उसे परेशान मत करो। वह स्कूल की पुरानी ट्रॉफियां और फोटो एलबम छांट रही है। नए घर के लिए चंद सूटकेसों में उन्हें समेट नहीं पा रही। तुम्हें उसे परेशान नहीं करना चाहिए। जाओ और पैकिंग में उसकी मदद करो। इसके अलावा वह पैरेंट्स का साथ छूटने और एक नया पार्टनर पाने के बीच असमंजस में भी है।' उस दिन नानाजी ने कमान संभाली। चूंकि मैं भाई-बहनों में सबसे बड़ा था तो उन्होंने मुझसे साथ आने को कहा और उसके कमरे में जाकर उससे एक घंटे बातचीत की। उन्होंने खूबसूरती से समझाया कि वह अब अपने परिवार के दायरे में नए लोगों को शामिल करने वाली है।उन्होंने कहा कि 'किसी नए इंसान से शादी का मतलब माता-पिता को खोना नहीं, बल्कि एक प्रोटेक्टेड बेटी की भूमिका से बढ़कर ऐसी पार्टनर बनना है- जो दोनों परिवारों की देखभाल कर सके।' उनकी आखिरी लाइन मैं कभी नहीं भूलूंगा। उन्होंने कहा कि 'शादी ?महज नए इंसान को पाना ही नहीं, बल्कि किसी पुराने इंसान को छोड़ना भी है। जैसे कि मैं, कोई और चीज या स्कूल के पुराने एलबम भी।' वह उनसे लिपट कर रो पड़ी। उन्होंने पांच मिनट तक उसे खुलकर रोने दिया। उसी दिन मैंने अचानक-से उसमें बदलाव देखा। उसका सामान अब महज दो सूटकेसों में सिमट गया। उसी शाम हंसती, खिलखिलाती वो वापस आ गई थी। यकीन मानिए, दशकों बाद नानाजी की वो गहरी सलाह मेरे काम आई, जब मैंने अपनी बेटी को उसी स्थिति में देखा। जब वह अपना ब्राइडल ट्रूजो चुन नहीं पा रही थी, तो मैंने उससे वही बात कही। वह अकसर अपनी मां के साथ बूटीक जाती, खूबसूरत लहंगे देखती और यह कहते हुए खाली हाथ लौट आती कि उसे ब्लू का सही शेड नहीं मिल रहा। मुझे यह घटना तब याद आई, जब मैंने 10 फरवरी को ही जारी हुई किताब 'लव्स लेबर : हाउ टु ब्रेक एंड मेक द बॉन्ड्स ऑफ लव' में एक अच्छी शादी को लेकर बेहतरीन समझ को पढ़ा। इसमें प्रसिद्ध साइकोएनालिस्ट और लेखक स्टीफन ग्रोज ने 'सोफी' नाम के केन्द्रीय किरदार के इर्द-गिर्द प्यार, शादी, समझ और मिसअंडरस्टैंडिंग के अलग-अलग भावों पर बात की है। 40 से अधिक वर्षों तक मरीजों से हुई बातचीत के आधार पर वे यह बताते हैं कि जब हम सुनना सीखते हैं तो हमारी रिलेशनशिप हमें क्या सिखा सकती है। चूंकि वे पश्चिमी दुनिया से हैं, जहां शादियां अस्थिरताओं से गुजर कर तलाक तक पहुंच जाती हैं, तो वे बताते हैं कि जब हम अपने पार्टनर को सुनना सीख जाते हैं तो रिलेशनशिप हमें क्या सिखाती है। मसलन, अचानक से जब पति को उसका काम आनंद देने लगे तो कपल्स के बीच फ्रिक्शन शुरू हो सकता है। उनकी सलाह है कि काम के प्रति इस नए प्यार पर झगड़ने के बजाय दोनों को बात करनी चाहिए, क्योंकि 'रोमांस भी एक कार्य है और दोनों को इस पर भी कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।' फंडा यह है कि लेबर ऑफ लव जीवन भर का काम है। जब हम एक-दूसरे को ज्यादा सुनते हैं, तो इसका फल और भी मीठा हो जाता है। कभी-कभी कमियां भी सुननी चाहिए, क्योंकि इससे कई बार नया रास्ता भी निकल आता है।एन. रघुरामन

अमेरिका समर्थक और विरोधी गुटों में संतुलन की चुनौती बड़ी

सोमवार को विदेश मंत्री एस. जयशंकर इंटर-गवर्नमेंटल कमीशन की बैठक के लिए मॉस्को में थे। उन्होंने पुतिन से भी मुलाकात की। इसी दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल चीन के विदेश मंत्री वांग यी के साथ भारत-चीन सीमा विवाद के समाधान को लेकर विशेष प्रतिनिधियों की वार्ता के 25वें दौर में शामिल होने बीजिंग जा रहे थे। हालांकि जयशंकर और डोभाल की मुख्य जिम्मेदारी द्विपक्षीय संबंधों के विशिष्ट क्षेत्रों से जुड़ी है, लेकिन उन्हें 12-13 सितंबर को नई दिल्ली में होने वाली ब्रिक्स समिट की जमीन तैयार करने का दायित्व भी सौंपा गया है। यह बैठक महज औपचारिक नहीं होगी। वैश्विक अस्थिरता के दौर में ब्रिक्स देशों के सामने एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि अमेरिका ईरान के खिलाफ आर्थिक युद्ध की शुरुआत कर रहा है और ईरान ब्रिक्स का सदस्य है। अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट द्वारा सामने रखी योजना का उद्देश्य ईरान की बची-खुची वित्तीय-लाइफलाइन को काट देना है। विदेशी बैंकों, कंपनियों और सरकारों से कहा गया है कि यदि वे ईरान से व्यापारिक-मौद्रिक संबंध बनाए रखते हैं, तो अमेरिकी सिस्टम तक उनकी पहुंच खत्म कर दी जाएगी। ईरान पहले ही गत 45 वर्षों से अमेरिकी प्रतिबंधों का सामना कर रहा है। उसने चेतावनी दी है कि आर्थिक युद्ध जारी रहने पर ईरान होर्मुज के जरिए तेल निर्यात को पूरी तरह रोकने के लिए मजबूर हो सकता है। अब तक ईरान के साथ भारत का काफी व्यापार यूएई के रास्ते होता रहा है, लेकिन यूएई भी अमेरिकी प्रयास में शामिल होगा। इससे ईरान को भारत के चावल, चाय और दवाओं के निर्यात पर असर पड़ सकता है। भारत ईरान के पांच सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में रहा है, हालांकि 2018-19 के बाद से दोनों देशों के बीच व्यापार में 90 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई है और अब भारत का निर्यात मुख्यतः उन वस्तुओं तक सीमित है, जिन्हें प्रतिबंधों से छूट मिली हुई है। अमेरिकी पाबंदियों का सबसे बड़ा असर चीन पर पड़ सकता है, जो ईरान के समुद्री रास्ते से होने वाले तेल निर्यात का लगभग 80-90 प्रतिशत खरीदता है। कुछ मायनों में बीजिंग ही अमेरिकी कार्रवाई का मुख्य निशाना होगा।लेकिन अगर अमेरिका छोटी कंपनियों के बजाय चीन के बड़े वित्तीय संस्थानों पर प्रतिबंध लगाता है, तो दोनों देशों के बीच आपसी टकराव की स्थिति पैदा हो सकती है। भारत के विपरीत चीन के पास अमेरिका के खिलाफ जवाबी कार्रवाई के साधन हैं। पिछले साल भी चीन ने रणनीतिक खनिजों के निर्यात पर रोक लगा दी थी, जिसके बाद अमेरिका को उसके साथ समझौते की ओर बढ़ना पड़ा था। अन्य ब्रिक्स देशों को भी अमेरिकी कार्रवाई का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि इसका निशाना ऐसे किसी भी देश या मध्यस्थ को बनाया जा रहा है, जो ईरान को वस्तुओं का व्यापार करने या वित्तीय प्रतिबंधों से बचने में मदद

करता है। इस लिहाज से यह कदम अमेरिका और चीन-रूस के नेतृत्व वाले समूह के बीच टकराव को और गहरा करता है।

समस्या यह है कि ब्रिक्स अब धीरे-धीरे वैचारिक समूह की बजाय अलग-अलग और कभी-कभी परस्पर प्रतिस्पर्धी हितों वाले देशों के मंच में बदल गया है। यदि समूह ऐसा दस्तावेज जारी करता है, जिसमें अमेरिकी प्रतिबंधों की आलोचना की जाए और डॉलर से दूरी बनाने की बात कही जाए, तो भारत असहज स्थिति में पड़ सकता है।

जयशंकर और डोभाल के सामने इसलिए बड़ी जिम्मेदारी है। मॉस्को और बीजिंग में उनकी बातचीत महज द्विपक्षीय कवायद नहीं है; यह ऐसे समय में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की कूटनीतिक तैयारियों का भी हिस्सा है, जब वैश्विक हालात बेहद अस्थिर हैं।

ब्रिक्स में चीन, रूस, ईरान जैसे अमेरिका-विरोधी देश शामिल हैं तो सऊदी अरब, मिस्र और यूएई भी हैं, जिनके अमेरिका से करीबी संबंध हैं। लेकिन भारत खुद को अमेरिका-विरोधी खेमे में दिखाना नहीं चाहेगा। (ये लेखक के अपने विचार हैं,मनोज जोशी)

पार्टी की चर्चाओं में गर्मजोशी लानी है तो अपने पास हैरतअंगेज जानकारी रखिए

आपने कई ईवनिंग पार्टियों में देखा होगा कि कुछ लोग सबका ध्यान खींचते हैं। ऐसा नहीं कि वे सेलेब्रिटी या बहुत अमीर लोग हों, जो अपना फैशन दिखा रहे हों, बल्कि वे वहां इकट्ठे लोगों को कुछ अनसुनी कहानियां सुना रहे होते हैं और इसीलिए पार्टी की जान बन जाते हैं। दूसरों के बारे में मैं नहीं जानता, लेकिन मैं तो मेहमानों की लिस्ट और उनकी संभावित रुचि के आधार पर प्लान कर लेता हूं कि उस शाम कौन-सी कहानियां शेयर करनी हैं। सोच रहे हैं कि यह कैसे प्लान होगा? यहां छोटा-सा सुझाव पेश है। अगर आप 14-16 मार्च, 2026 के दौरान किसी सोशल इवेंट या गेट-टुगेदर में शामिल हो रहे हैं तो यकीन मानिए 'ऑस्कर 2026' वहां मेहमानों के बीच चर्चा का विषय रहेगा। क्योंकि उस समय पूरी मीडिया इंडस्ट्री इसी के बारे में लिख और बोल रही होगी। इसी कारण यह उन चुनिंदा दिनों में बेहद हॉट टॉपिक होगा। मुंबई में तो वर्षों से यही रुझान रहा है। तो यहां कुछ चौंका देने वाली जानकारियां हैं, जो आपकी पार्टी की चर्चा में चमक बिखेर देंगी। इसे एकेडमी अवॉर्ड के नाम से जाना जाता है। इसका समारोह 15 मार्च, 2026 को लॉस एंजेलिस में हॉलीवुड के डॉल्बी थिएटर में होगा। इसे आप 16 मार्च 2026 को भारतीय समयानुसार सुबह 4.30 बजे अपने टीवी पर देख सकते हैं। थिएटर में लगभग 3,400 सीटें हैं, जो नॉमिनेटेड कलाकारों, उनके परिवारों, प्रजेंटर्स, ब्रॉडकास्ट क्रू, प्रमुख स्पॉन्सर्स और परफॉर्मर्स के लिए आरक्षित रहती हैं। ऑस्कर 2026 में इस बार 'बेस्ट कास्टिंग' के लिए भी एक नया अवॉर्ड दिया जाएगा, जिससे कुल कैटेगरीज अब 24 हो जाएंगी। ऑस्कर के जिन अनमोल स्टैचुएट्स को हर विजेता घर ले जाएगा, उनके भी बड़े रोचक तथ्य हैं। हर मूर्ति 13.5 इंच लंबी और 3.86-3.9 किलोग्राम वजनी होती है, यानी लगभग एक लैपटॉप के वजन के बराबर। हर विजेता को एक्सेप्टेंस स्पीच देते हुए इसे हाथ में थामना होता है।

ठोस कांस्य से बनी इस ट्रॉफी पर 24 कैरेट सोने की परत होती है। मेरे जैसा सामान्य व्यक्ति सोच सकता है कि ऑस्कर ट्रॉफियां बड़े पैमाने पर बनाई जाती होंगी। लेकिन आपको हैरानी होगी कि हर स्टेच्यू को 20 कारीगरों का एक समूह हाथों से बनाता है और हर साल निर्माण की इस प्रक्रिया में छह महीने लगते हैं। हर ऑस्कर अपने आप में एक मूर्ति है, जिसमें सबसे पहले वैक्स फिगर बनाया जाता है। इसके चारों ओर कठोर और हीट रेजिस्टेंट आवरण बनाने के लिए उसे सिरेमिक स्लरी और सिलिका सैंड में डुबोया जाता है। फिर मोम को पिघलाकर उसकी जगह पिघला कांस्य भरा जाता है। ठंडा होने पर सिरेमिक खोल तोड़ते हैं और उसमें रही किसी भी कमी को ठीक करने के लिए घिसाई और पॉलिश की जाती है। मूर्ति कई चरणों से गुजरती है और सबसे कठिन हिस्सा इसके होंठ बनाना होता है, क्योंकि वे बहुत छोटे होते हैं। अंतिम चरण में उस पर सोने की परत चढ़ाई जाती है। परत चढ़ाने की प्रक्रिया इतनी हाई-टेक होती है कि एकेडमी उसी एप्नर टेक्नोलॉजी कंपनी की सेवाएं लेती है, जो नासा के उपकरणों की प्लेटिंग करती है।

सोने की परत इलेक्ट्रोप्लेटिंग से चढ़ाई जाती है। मूर्ति को रासायनिक घोल में डुबोकर इलेक्ट्रिक करंट के जरिए सोने के कणों की निकल प्लेटेड कांस्य से बॉन्डिंग कराई जाती है। इससे सोना कभी उखड़ता नहीं है, हालांकि विजेताओं को आगाह किया जाता है कि इंसान के हाथों का तेल लगने से इसकी चमक कम हो सकती है। एक आखिरी बात। ऑस्कर की घोषणा से पहले अकाउंटिंग फर्म प्राइसवॉटरहाउसकूपर्स (पीडब्ल्यूसी) के केवल दो पार्टनरों को ही परिणाम की जानकारी होती है। समारोह के दौरान वे मंच के किनारों पर खड़े होते हैं, ताकि प्रजेन्टर्स को सही लिफाफे दे सकें। फंडा यह है कि अगर आप एक ऐसे स्टोरीटेलर हैं, जो अपनी कहानियों पर ज्ञान की नई परत चढ़ा सकते हैं तो मैं शर्तिया कह सकता हूं कि आप ही सब को आकर्षित करने वाली 'क्वीन हनी-बी' बनेंगे। एन. रघुरामन

हमारी जिंदगी में 'ह्यूमनॉइड्स' का 'तड़का' लगने लगा है

हमारी जिंदगी में ह्यूमनॉइड्स का भरपूर 'तड़का' हमारी सोच से भी जल्दी लगने वाला है। यह पहले से लग भी रहा है। चीनी ह्यूमनॉइड रोबोट अब सिर्फ फैक्ट्रियों, वेयरहाउस या लैब्स तक सीमित नहीं हैं। वे अब खेल जैसे क्षेत्र में भी कदम रख रहे हैं, जिसमें निर्विवाद रूप से इंसानों की बढ़त रही है। इस हफ्ते बीजिंग में हुए वर्ल्ड ह्यूमनॉइड रोबोट गेम्स के दूसरे संस्करण में 2 हजार से ज्यादा ह्यूमनॉइड रोबोटों ने हिस्सा लिया। पांच दिनों तक चले इस आयोजन में 51 इवेंट हुए, जिनमें टेबल टेनिस, फुटबॉल और एथलेटिक्स शामिल थे। इसकी अहमियत का कारण रोबोटों का आपसी मुकाबला नहीं, बल्कि वो गति है, जिससे वो इंसानी शारीरिक क्षमताओं की नकल करने लगे हैं। इवेंट की रिपोर्टों में यह तक बताया गया कि ह्यूमनॉइड इंसानों के एथलेटिक रिकॉर्ड को चुनौती दे रहे हैं। इसमें उसेन बोल्ट का 100 मीटर स्प्रिंट रिकॉर्ड भी शामिल है। इस दौड़ को ह्यूमनॉइड रोबोट ने 9.39 सेकंड में पूरा कर जमैका के बोल्ट द्वारा 2009 में बनाया गया 9.58 सेकंड का रिकॉर्ड तोड़ दिया। एक्स-ह्यूमनॉइड कंपनी के रोबोट ने 14.5 मीटर प्रति सेकंड की अधिकतम रफ्तार हासिल की। रोबोट गेम्स से तीन दिन पहले वित्तीय जगत ने भी एक और संकेत दिया कि यह तकनीक किस दिशा में जा रही है। चीनी ह्यूमनॉइड रोबोट निर्माता 'यूनिट्री रोबोटिक्स' ने शंघाई ट्रेडिंग डेब्यू में 460फीसदी की छलांग लगाई और कंपनी का बाजार मूल्य करीब 51 अरब डॉलर पहुंच गया। कंपनी के इस शानदार डेब्यू में ह्यूमनॉइड रोबोटिक्स को लेकर बड़ी उम्मीदें और इस क्षेत्र में चीन के ग्लोबल लीडर बनने की महत्वाकांक्षा प्रतिबिम्बित होती है। यूनिट्री के इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग के लिए सर्वाधिक ओवर-सब्स्क्रिप्शन हुआ। डेब्यू के दौरान कंपनी में हिस्सेदारी लेने के लिए 98 लाख निवेशकों ने आवेदन किया, लेकिन 5 हजार में से 1 से भी कम निवेशक ही सफल हो पाए। 'युशु टेक्नोलॉजी' के आधिकारिक नाम वाली इस कंपनी का नेतृत्व 36 वर्षीय मैकेनिकल इंजीनियर वांग शिंगशिंग कर रहे हैं। इन दोनों घटनाओं को साथ रखें तो संदेश को नजरअंदाज करना मुश्किल है- ह्यूमनॉइड अब फैक्ट्री फ्लोर से हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में आ रहे हैं। कई वर्षों तक मोटे तौर पर चर्चा यही थी कि रोबोट दोहराए जाने वाले कामों में इंसानों की जगह ले सकते हैं। हम रोबोट को कारें असेंबल करते, डिब्बे इधर-उधर ले जाते, फर्श साफ करते या खाना परोसते हुए देखते थे। लेकिन अगला चरण कहीं ज्यादा व्यापक हो सकता है। ह्यूमनॉइड्स अस्पतालों, घरों, होटलों, रिटेल स्टोर्स और ऑफिसों का हिस्सा बन सकते हैं। वे बुजुर्गों की मदद, खतरनाक काम, बच्चों की पढ़ाई, मेहमानों का मनोरंजन और इंसानों की सहायता जैसे काम कर सकते हैं। अब खेल में भी एक नई संभावना दिख रही है- मनोरंजन का क्षेत्र भी मशीनों के लिए प्लेग्राउंड बन सकता है। ऐसे भविष्य की कल्पना कीजिए, जिसमें ह्यूमनॉइड फुटबॉल लीग, रोबोट मैराथन या रोबोट बॉक्सिंग लोगों का प्राइम-टाइम एंटरटेनमेंट बन जाए। स्टेडियम मानव और मशीन का नहीं, बल्कि मशीनों का मशीनों से मुकाबला देखने के लिए भर सकते हैं, जिसमें इंसान अपने पसंदीदा रोबोट के लिए चीयर करें। आज यह साइंस फिक्शन लग सकता है। लेकिन बीजिंग गेम्स बताते हैं कि यह साइंस फिक्शन कितनी जल्दी दर्शकों का खेल बन सकता है। इसलिए असली बदलाव सिर्फ यह नहीं कि ह्यूमनॉइड बेहतर रोबोट बन रहे हैं, बल्कि यह है कि वे उन जगहों पर पहुंचने लगे हैं, जिन्हें हम खासकर इंसानों की मानते थे। और यहीं हमारे सामने एक बड़ा सवाल आता है- जैसे-जैसे मशीनें इंसानों जैसी होती जाएंगी, क्या इंसान भी मशीनों जैसे हो जाएंगे? पहले ही हम खुद को स्पीड, इफिशियंसी, प्रोडक्टिविटी और परफॉर्मेंस के पैमाने पर माप रहे हैं और इन खूबियों में मशीनें तेजी से हमसे बेहतर हो रही हैं। असली चुनौती शायद ह्यूमनॉइड्स से उनके क्षेत्र में मुकाबले की नहीं, बल्कि उन मूल्यों को बचाने की है, जो हमें इंसान बनाते हैं- एम्पैथी, इमेजिनेशन, ह्यूमर, कम्पैशन, क्यूरोसिटी और बदले में कुछ मिलने की अपेक्षा के बिना केयर करने की क्षमता। जैसे-जैसे ह्यूमनॉइड चलना, दौड़ना, खेलना और एंटरटेन करना सीखते जाएंगे, हमें तय करना पड़ सकता है कि भविष्य में हमें मशीनों जैसा बनना है या जानबूझकर ज्यादा इंसान बने रहना है। फंडा यह है कि ह्यूमनॉइड्स का 'तड़का' अब लगने वाला नहीं है, बल्कि पहले ही लग चुका है। मॉर्गन स्टेनली का अनुमान है कि इस साल चीन का ह्यूमनॉइड्स शिपमेंट 50 हजार का होगा, जो 2030 तक बढ़कर 4.40 लाख से ज्यादा हो जाएगा। एन. रघुरामन

गुलामी के प्रतीकों को हटाने का हमें स्वागत करना चाहिए

यूं तो मैं नई दिल्ली की सड़कों, प्रतिमाओं और इमारतों में सरकार द्वारा किए गए हर परिवर्तन का समर्थन नहीं करता हूं। मिसाल के तौर पर, मुझे समझ नहीं आता कि राजपथ का नाम बदलकर कर्तव्य पथ क्यों किया गया। न ही मैं यह समझ पाया हूं कि मुगल गार्डन्स का नाम बदलकर अमृत उद्यान क्यों किया गया, क्योंकि वह उद्यान मुगल शैली में ही निर्मित है। लेकिन इस महीने जब राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन में एडविन लुटियन्स की प्रतिमा के स्थान पर सी. राजगोपालाचारी की प्रतिमा का अनावरण किया, तो इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। लुटियन्स बेशक एक प्रतिभाशाली आर्किटेक्ट रहे होंगे, लेकिन वे असंदिग्ध नस्लवादी थे। भारतीयों के प्रति उनके मन में गहरी अवमानना की भावना थी, जिसे उन्होंने कभी नहीं छिपाया। इसका अकाट्य प्रमाण 1985 में प्रकाशित पुस्तक 'द लेटर्स ऑफ एडविन लुटियन्स टु हिज वाइफ लेडी एमिली' में मिलता है। भारत का कुछ भी लुटियन्स को प्रभावित नहीं कर सका था- न वास्तुकला, न दर्शन, न संस्कृति और यहां के लोगों की चमड़ी का रंग तो हरगिज नहीं। इंदौर के डेली कॉलेज में उन्होंने छात्रों को एक नस्लवादी शब्द से सम्बोधित किया था। बनारस में उन्होंने पाया कि यहां 'हर तरह के काले लोग, हर तरह का काम करते' हैं। मद्रास के लोगों के लिए तो उन्होंने और अभद्र टिप्पणी की।एक अन्य प्रसंग में उन्होंने लिखा कि 'भारत के लोगों से कोई उम्मीद नहीं की जा सकती'। भारतीय धर्मों में उन्हें कोई बौद्धिकता नजर नहीं आई। अपने निजी स्टाफ के नामों पर भी वे फब्ती कसने से नहीं चूके। उन्होंने कहा, 'ये लोग वो तमाम हरकतें करते हैं, जो किसी भी गोरे साहब को ऊबा सकती हैं।'भारतीय वास्तुकला भी उन्हें प्रभावित नहीं कर पाई। बनारस के घाटों के किनारे स्थित मंदिर उन्हें 'बच्चों के खिलौने वाले पेड़ों' जैसे प्रतीत हुए। कुतुब मीनार की गढ़न उनके अनुसार बेपरवाह और बेढंगी थी। मुम्बई में होलकर का महल उन्हें अभद्र और उदयपुर का राजप्रासाद उन्हें आदिम लगा था। ताजमहल को भी उन्होंने खारिज करते हुए कह दिया कि वह यूनानियों और रोमनों की कृतियों के आसपास भी नहीं ठहरता। उनके साथ काम करने वाले भारतीय शिल्पकारों के बारे में उनकी टिप्पणी थी कि 'इन्हें भद्दे पैटर्न्स और अनगढ़ देवप्रतिमाएं बनाने के सिवा कुछ नहीं आता'। एक निर्माण के अंतिम चरणों में काम का निरीक्षण करते हुए उन्होंने लिखा कि 'लापरवाह भारतीय हमेशा की तरह चीजें बरबाद कर रहे थे और बेतरतीबी फैला रहे थे'। वे अपनी पत्नी के लिए बुद्ध प्रतिमा खरीदना चाहते थे, पर उन्हें कुछ भी मानक के अनुरूप नहीं लगा। उन्होंने लिखा- 'हे भगवान, यहां सबकुछ कितना कुरूप है।' यहां तक कि राष्ट्रपति भवन के भव्य गुम्बद को भी लुटियन्स ने इस प्रकार कल्पित किया था कि वह 'ब्रिटिश सैनिक, अधिकारी, मिशनरी या वायसराय के टोपीधारी सिर की छवि' उत्पन्न करे, जबकि इसे लुटियन्स के समर्थक भारतीय वास्तुकला से प्रेरित बताते हैं। इन तमाम उद्धरणों से स्पष्ट है कि हम भारतीयों और हमारी महान सभ्यता के प्रति लुटियन्स का रवैया एक कुपढ़, बददिमाग और नस्लवादी व्यक्ति का था। ऐसे में स्वयं राष्ट्रपति भवन में लुटियन्स की प्रतिमा का होना हमारी औपनिवेशिक विस्मृति का दयनीय प्रतीक था। यह पूर्णतः उपयुक्त है कि अब लुटियन्स की प्रतिमा को हटाकर उन चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की प्रतिमा को स्थापित किया गया है, जो स्वतंत्र भारत के प्रथम और एकमात्र गवर्नर-जनरल थे। राजाजी एक सच्चे गांधीवादी और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्हें मद्रास प्रेसिडेंसी के प्रीमियर, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल और केंद्रीय गृह मंत्री के रूप में व्यापक राजनीतिक-प्रशासनिक अनुभव प्राप्त था। वे चिंतक और लेखक भी थे। उनका साहित्यिक योगदान- जिसमें रामायण और महाभारत के अनुवादों से लेकर संस्कृति और राजनीति पर चिंतनपरक निबंध तक शामिल हैं- भारतीय बौद्धिक परम्परा को और समृद्ध बनाते हैं। हम ऐसे गणराज्य हैं, जो अपनी सार्वजनिक स्मृति को अपनी ही मिट्टी में रोपना चाहता है। हमें सरकार को इस निर्णय के लिए बधाई देनी चाहिए, जो औपनिवेशिक इमारतें बनाने वाले के बजाय राष्ट्र की अंतश्चेतना के निर्माण में योगदान देने वाले व्यक्ति की स्मृति को समर्पित है।

अब बातें करनी हों तो फोन उठाइए नहीं, उसे एक तरफ रख दीजिए

क्या आपको भी ऐसा लगता है कि कई बार आपसे बात करते वक्त सामने वाला व्यक्ति आपसे ज्यादा अपने फोन को देखता रहता है? घर में भी कोई व्यक्ति आपसे बात करते-करते ही अपने मोबाइल फोन में व्यस्त हो जाता है। इसके लिए एक शब्द ईजाद कर लिया गया है- 'फबिंग'। यह फोन और स्नबिंग (नजरअंदाज करना) से मिलकर बना है और यह आजकल सामाजिक रिश्तों और सम्प्रेषण पर गहरा असर छोड़ रहा है। शारीरिक रूप से मौजूद होकर भी भावनात्मक रूप से दूर रहने की यह प्रवृत्ति क्या बताती है? स्क्रॉल करती हुई उंगलियां और स्क्रीन में डूबी हुई आंखें यह यकीन नहीं कर पातीं कि उनके पास कोई और भी बैठा है, जो उनसे बात कर रहा है और उनका ध्यान चाहता है। आपके समक्ष ही किसी का अपने फोन में गुम हो जाना या बार-बार फोन देखते रहना यह बताता है कि यह छोटा-सा यंत्र अब सभी वार्तालापों और मुलाकातों पर हावी हो रहा है। फोन और एआई ने मिल-जुलकर हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल तो दिया ही है। नहीं तो यह किसने सोचा था कि घर, ऑफिस या क्लासरूम में भी फोन की उपस्थिति सभी पर भारी पड़ सकती है। हमें तो यह सिखाया जाता है कि जब कोई बात करे तो उस व्यक्ति को ध्यान और सम्मान से सुनना एक बुनियादी शिष्टाचार है। लेकिन यह भी सच है कि 'फबिंग' के दौर में कोई नहीं सोचता कि उसका यह व्यवहार किसी को हर्ट कर सकता है। और जब यह आदत घर से लेकर संस्थाओं तक आम हो जाए तो फिर समाज में व्यक्ति और उसके संबंध के भावनात्मक पहलू पर गहरी चोट लगती है। 'फबिंग' वस्तु नहीं व्यक्ति की अनदेखी कर एक 'न्यू नॉर्मल' सामाजिक व्यवहार बना देता है। हर व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई कहानियां जरूर होती हैं और रिश्तों में बातचीत उन कहानियों का ही हिस्सा होती है। चूंकि अपनी बात कहते वक्त कोई व्यक्ति पूर्ण रूप से खो जाता है तो वह यह भी चाहता है कि सामने वाला व्यक्ति भी उसके भावों और शब्दों पर इतनी ही तवज्जो दे, उसका ध्यान इधर-उधर न भटके। आपने भी घरों में महसूस किया होगा कि बच्चे कई बार माता-पिता को सुनते वक्त अपना अधिकतर ध्यान फोन पर उस गतिविधि में लगाए रहते हैं, जो प्रायः बिल्कुल अनावश्यक होती है। तो क्या 'फबिंग' हमारी भावनात्मक कहानियों को भी बेजान कर देगा? शायद हां। हाल ही में एक अध्ययन हुआ, जिसमें पढ़ने वालों को छह लघु कहानियां दी गईं। उसमें से तीन कहानियां इंसानों ने लिखीं और तीन चैटजीपीटी की बनाई हुई थीं। एआई के द्वारा लिखी गई कहानियों की थीम भी इंसानों वाली कहानियों जैसी ही थी। लेकिन जब पाठकों को रोचकता के आधार पर उन कहानियों को रेट करने को कहा गया तो एआई से बनी कहानियों को ज्यादा रेटिंग मिली। यह पैटर्न बताता है कि सामाजिक सम्प्रेषण में 'फबिंग' के आ जाने ने रिश्तों और उनकी कहानियों के भावनात्मक पक्ष को कमजोर कर दिया है। और यह भी कि हमारे पूर्वजों ने गर्दन को सीधी करके ही सभ्यताओं के विकास की कहानी को अंजाम दिया था। लेकिन हमारे दो आजाद हाथ अब फिर से बंध चुके हैं और सीधी गर्दन फोन को निहारती हुई फिर से झुक चुकी है। आजाद कराने की कोशिश कीजिए खुद को और उनको जो इस फेर में सबकुछ को नजरअंदाज कर परतंत्र बने हुए हैं। अगर कोई फोन में व्यस्त होकर आपको नजरअंदाज कर भी रहा हो तो उनके प्रति कोई 'फबिंग' का भाव न रखिए। उनसे बातें करने की कोशिश करते रहिए। तभी घरों में, संस्थाओं में फोन से रिहा आंखें, कान और मन मनुष्यत्ता को 'फबिंग' के ग्रहण से बचाएंगे। (ये लेखक के अपने विचार हैं,नंदितेश निलय)

इमरान के बेटे का दावा-पाकिस्तान तानाशाही की ओर बढ़ रहा

पिता के साथ जेल में बुरे बर्ताव का आरोप लगाया, कहा- सेना की इसमें बड़ी भूमिका

इस्लामाबाद। वह आज भी अपने सिद्धांतों पर मजबूती से कायम हैं, लेकिन अब इसकी कीमत उनका शरीर चुका रहा है।' वकील का आरोप- जनरल मुनीर मनमाना शासन चला रहे- इमरान खान के अंतरराष्ट्रीय वकील जेरेड जेनसर ने पाकिस्तान में लोकतंत्र की स्थिति पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने देश के सैन्य नेतृत्व को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया और सेना प्रमुख असीम मुनीर पर 'ऑथॉरिटेरियनिज्म' यानी दमनकारी शासन का आरोप लगाया। जेनसर ने कहाः- 'इमरान खान और उनकी पत्नी के खिलाफ जिस तरह कार्रवाई हो रही है, वह किसी लोकतांत्रिक सरकार के तरीके जैसी नहीं है।' उन्होंने दावा किया कि इमरान खान के खिलाफ सैकड़ों मामले मनगढ़ंत आरोपों के आधार पर दर्ज किए गए हैं। यह मामला अब सिर्फ उनकी जेल तक सीमित नहीं है। जेनसर के मुताबिक, उनकी गिरफ्तारी उन लोगों के लिए भी एक चेतावनी है, जो पाकिस्तान में सत्ता को चुनौती देने की कोशिश कर सकते हैं। जेनसर ने आगे कहाः-'उन्हें जेल में रखकर शासन पाकिस्तान के लोगों को साफ संदेश देने की कोशिश कर रहा है कि उन्हें सत्ता के खिलाफ खड़ा होने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।' जेनसर ने कहा, 'कल्पना कीजिए कि अगर हम इमरान खान के साथ ऐसा कर सकते हैं, जिन्हें पूरी दुनिया जानती है, तो उस व्यक्ति के साथ क्या किया जा सकता है, जिसे दुनिया नहीं जानती?' इमरान खान के इलाज को लेकर भी विवाद- 'इमरान खान की सेहत और जेल में उनके इलाज को लेकर भी विवाद बना हुआ है।' 18 अगस्त को पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों की पीठ ने अधिकारियों को निर्देश दिया था कि इमरान खान को इलाज के लिए 48 घंटे के भीतर अदियाला जेल से इस्लामाबाद के शिफा इंटरनेशनल अस्पताल ले जाया जाए। अदालत ने यह भी निर्देश दिया था कि इमरान खान की जांच एक स्वतंत्र मेडिकल पैनल करे। इसमें हृदय रोग विशेषज्ञ, आंखों के डॉक्टर, सामान्य चिकित्सक और उनके निजी डॉक्टर डॉ. फैसल सुल्तान को शामिल किया जाना था। हालांकि, 20 अगस्त को अधिकारियों ने इमरान खान को शिफा इंटरनेशनल अस्पताल ले जाने के बजाय पाकिस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) पहुंचाया। वहां कई घंटों तक उनकी मेडिकल जांच की गई। इसके बाद उन्हें चिकित्सकीय रूप से फिट घोषित कर वापस अदियाला जेल भेज दिया गया।

इमरान खान की टीम का आरोप है कि जेल से शिफा अस्पताल की दिशा में एक 'डमी काफिला' भेजा गया, ताकि ऐसा लगे कि इमरान खान को वहां ले जाया जा रहा है। टीम ने यह भी दावा किया कि उनके निजी डॉक्टर डॉ. फैसल सुल्तान शिफा अस्पताल में उनका इंतजार कर रहे थे, लेकिन उन्हें इमरान खान की जांच करने का मौका नहीं दिया गया। इमरान से फिर मिलीं बहन नूरीन नियाजीइमरान खान की बहन नूरीन नियाजी ने मंगलवार को अदियाला जेल में उनसे मुलाकात की। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद यह लगातार दूसरे हफ्ते है, जब नूरीन ने अपने भाई से मुलाकात की है। सुप्रीम कोर्ट ने 18 अगस्त को आदेश दिया था कि कैदी इमरान खान की उनके परिवार के सदस्यों से सप्ताह में एक बार मुलाकात कराई जाए। अदालत ने यह भी निर्देश दिया था कि सरकार उनके बेटों से सप्ताह में दो बार फोन पर बात कराने की व्यवस्था करे। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद इमरान खान के परिवार ने अदालत को भरोसा दिलाया था कि वे मीडिया से बात नहीं करेंगे। पीटीआई के वकील अवैस यूनुस चौधरी के मुताबिक, मंगलवार को नूरीन नियाजी की इमरान खान से मुलाकात करीब 45 मिनट चली। उन्होंने कहा कि इमरान की दो और बहनें भी जेल के बाहर गाड़ी में इंतजार कर रही थीं। नूरीन नियाजी के जेल से बाहर आने के बाद तीनों बहनें बिना मीडिया से बात किए वहां से चली गईं।

'लेक ओंटारियो' का नाम 'लेक अमेरिका' करने की सोच रहा-ट्रम्प, कनाडा से जुड़ी झील का नाम बदल सकते हैं

वॉशिंगटन डीसी।इसी से कनाडा के ओंटारियो राज्य का नाम भी पड़ा। यूरोपीय मानचित्रों में यह नाम 17वीं सदी से दिखाई देने लगा था। यानी 'ओंटारियो' नाम नया नहीं है, बल्कि सदियों पुराना है। एक दिलचस्प बात यह भी है कि लेक ओंटारियो ग्रेट लेक्स में सबसे छोटी झील है, लेकिन इसका आर्थिक महत्व बहुत बड़ा है। क्या अमेरिका अकेले नाम बदल सकता है? अमेरिकी सरकार अपने आधिकारिक दस्तावेजों, सरकारी नक्शों और रिकॉर्ड में किसी जगह के लिए नया नाम इस्तेमाल करने का फैसला कर सकती है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि दूसरे देश भी उस नाम को स्वीकार करने के लिए बाध्य होंगे। लेक ओंटारियो अमेरिका और कनाडा दोनों से जुड़ी है। इसलिए अगर अमेरिकी सरकार अपने दस्तावेजों में इसे 'लेक अमेरिका' कहना शुरू भी कर दे, तो कनाडा अपने सरकारी रिकॉर्ड में 'लेक ओंटारियो' नाम जारी रख सकता है। दूसरे देश और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भी अमेरिकी नाम को अपने आप अपनाने के लिए बाध्य नहीं होंगी। यानी नाम बदलने से झील का मालिकाना हक नहीं बदल जाएगा। 'लेक अमेरिका' नाम इस्तेमाल करने से झील का कनाडाई हिस्सा अमेरिकी क्षेत्र नहीं बन जाएगा। 'गल्फ ऑफ मेक्सिको' का नाम बदल चुके हैं ट्रम्पः- ट्रम्प के लिए किसी जगह का नाम बदलना नया नहीं है। जनवरी 2025 में उन्होंने 'गल्फ ऑफ मेक्सिको' को अमेरिकी सरकारी इस्तेमाल के लिए 'गल्फ ऑफ अमेरिका' करने का आदेश दिया था। इसके बाद अमेरिकी

एजेंसियों ने अपने रिकॉर्ड और नक्शों में नया नाम इस्तेमाल करना शुरू किया, लेकिन मेक्सिको ने इसे स्वीकार नहीं किया। तब मेक्सिको ने अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून का हवाला देते हुए कहा था कि अमेरिका अपने अधिकार क्षेत्र के आधार पर पूरे गल्फ का नाम अकेले नहीं बदल सकता। हालांकि, लेक ओंटारियो और गल्फ ऑफ मेक्सिको की कानूनी स्थिति अलग है। गल्फ समुद्री क्षेत्र है, जबकि लेक ओंटारियो अमेरिका और कनाडा के बीच साझा झील है। अमेरिका-कनाडा के बीच विवाद की 5 बड़ी वजहें- 1. टैरिफ की नई लड़ाई-सबसे बड़ा विवाद टैरिफ को लेकर है। अमेरिका ने कनाडा के करीब 20 अरब डॉलर के सामान पर 50फीसदी तक अतिरिक्त शुल्क लगाया है। इसमें शराब, डेयरी, फर्नीचर, हॉकी उपकरण और कई दूसरे सामान शामिल हैं। बातचीत टूटने के बाद कनाडा ने भी डॉलर-फॉर-डॉलर जवाबी टैरिफ लगाने का फैसला किया है। 2. कनाडा को 51वां राज्य कहना-ट्रम्प कई बार कनाडा को अमेरिका का 51वां राज्य बनाने की बात कह चुके हैं। ट्रम्प का कहना है कि अमेरिका व्यापार के मामले में कनाडा को अरबों डॉलर का फायदा पहुंचाता है। यदि कनाडा अमेरिका का हिस्सा बन जाता है, तो यह व्यापारिक असमानता और टैरिफ से जुड़े विवाद अपने आप खत्म हो जाएंगे। 3. ट्रूडो को कनाडा का गवर्नर कहना-ट्रम्प ने कई बार कनाडा के तत्कालीन प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को तंजिया लहजे में 'गवर्नर' कहकर संबोधित किया था। कनाडाई नेताओं और जनता ने इसे अपनी संप्रभुता का अपमान माना। 4. सीमा सुरक्षा, अवैध घुसपैठ और फेंटानिल तस्करी-अमेरिका और कनाडा के बीच बढ़ती सीमा सुरक्षा चिंताएं भी बड़े विवाद का कारण बनी हैं। ट्रम्प प्रशासन का आरोप रहा है कि कनाडा की उत्तरी सीमा से अवैध प्रवासियों की घुसपैठ और खतरनाक नशीली दवाओं (विशेषकर फेंटानिल) की तस्करी अमेरिका में बढ़ रही है। अमेरिका ने कनाडा से अपनी सीमाओं पर सख्त निगरानी और सख्त आव्रजन नीतियां लागू करने की मांग की है। 5. डेयरी और कृषि विवाद-अमेरिका लंबे समय से कनाडा की 'सप्लाई मैनेजमेंट' सिस्टम का विरोध करता रहा है, जो कनाडाई डेयरी और पोल्ट्री (मुर्गी पालन) मार्केट को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाती है। अमेरिका चाहता है कि कनाडा अपने डेयरी बाजार को अमेरिकी किसानों के लिए पूरी तरह खोले।

अमेरिका के मोंटाना में परिवार के 8 लोगों की हत्या-मृतकों में 4 बच्चे, आरोपी ने सबको गोली मारी और फिर खुद को भी शूट किया

बिलिंग्स।पड़ोसी ने सुनी पटाखों जैसी आवाज- घर से तीन मकान दूर रहने वाले डेविड हिलर ने बताया कि रविवार शाम 6 बजे के बाद उन्हें पटाखों जैसी आवाज सुनाई दी। बाद में एक पड़ोसी ने फोन कर इलाके में गोलीबारी की जानकारी दी। हिलर ने बाहर निकलकर देखा तो पुलिसकर्मी हथियारों के साथ गाड़ियों की आड़ में खड़े थे और घर से काला धुआं उठ रहा था। हत्या की वजह अभी सामने नहीं आई- पुलिस के मुताबिक, संदिग्ध व्यक्ति मृतकों को जानता था, लेकिन हत्या के पीछे की वजह अभी सामने नहीं आई है। आग कैसे लगी, इसकी भी जांच की जा रही है। अधिकारियों ने कहा है कि जांच पूरी होने तक मामले से जुड़ी कुछ जानकारियां सार्वजनिक नहीं की जाएंगी। अमेरिका में मास शूटिंग की हाल की घटनाएं-22 अगस्तः ओरेगन के फॉरेस्ट ग्रोव में एक घर में 5 लोगों की हत्या हुई। मृतकों में आरोपी की पार्टनर, उसकी मां और दादी समेत पांच लोग शामिल थे। संदिग्ध बाद में वॉशिंगटन में मृत मिला। 14 अगस्तः मिशिगन के मिसॉकी काउंटी में हुई गोलीबारी में 6 लोगों की मौत हो गई। मृतकों में संदिग्ध शूटर भी शामिल है। घटना में एक 13 साल की बच्ची भी घायल हुई, जिसे चार गोलियां लगी थीं।15 अगस्तः वर्जीनिया स्टेट यूनिवर्सिटी के कैंपस के पास हुई गोलीबारी में 5 लोग घायल हुए। पुलिस ने 19 वर्षीय संदिग्ध को गिरफ्तार किया।

अमेरिकी इंटेलिजेंस एजेंसी के चीफ की रूस में अचानक सीक्रेट लैंडिंग, ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट से पहुंचे

मॉस्को।अमेरिकी सैन्य विमान के इस रास्ते से उड़ान भरने के लिए रूसी अधिकारियों की मंजूरी जरूरी होती है। हालांकि, रूसी अधिकारियों ने कहा है कि उन्हें इस विमान की मॉस्को यात्रा की जानकारी नहीं थी। रूस से बातचीत अटकी, इसी बीच मॉस्को पहुंचे रैटक्लिफ;- रिपोर्ट के मुताबिक, रैटक्लिफ मॉस्को में बैठकों के लिए गए हैं। हालांकि, वह किन रूसी अधिकारियों से मिल रहे हैं और किन मुद्दों पर बातचीत हो रही है, इसकी जानकारी अभी सामने नहीं आई है। उनका दौरा ऐसे समय हुआ है जब अमेरिका और रूस के बीच यूक्रेन युद्ध खत्म कराने की कोशिशें फिलहाल आगे नहीं बढ़ रही हैं। दोनों देशों के बीच युद्ध खत्म करने को लेकर कई दौर की बातचीत हो चुकी है, लेकिन अब तक कोई अंतिम समझौता नहीं हो पाया है। ऐसे में सीआईए चीफ का सीधे मॉस्को पहुंचना और रूसी अधिकारियों से बैठक करना अहम माना जा रहा है। हालांकि, अभी यह साफ नहीं है कि इन बैठकों में यूक्रेन युद्ध को लेकर कोई बातचीत हो रही है या नहीं। इससे पहले मॉस्को जाने वाले आखिरी ज्ञात सीआईए डायरेक्टर विलियम बर्न्स थे। उन्होंने नवंबर 2021 में रूस का दौरा किया था। इसके कुछ महीने बाद ही रूस ने यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर सैन्य हमला शुरू किया था। रैटक्लिफ के मॉस्को पहुंचने से पहले क्या हुआ? रैटक्लिफ की यात्रा की पुष्टि से पहले सी-17 की मॉस्को उड़ान ही सबसे बड़ा सवाल बनी हुई थी। विमान 23 अगस्त को वॉशिंगटन डीसी के पास मौजूद जॉइंट बेस एंड्रयूज से लातविया पहुंचा था। यह वही अमेरिकी सैन्य अड्डा है जहां राष्ट्रपति के विमान रहते हैं। इनमें एयर फोर्स वन भी शामिल है। इसके बाद विमान रीगा से मॉस्को पहुंचा। उस समय यह पता नहीं था कि विमान को रूस की राजधानी क्यों भेजा गया है और उसमें कौन सवार है। अब अमेरिकी मीडिया की रिपोर्ट से पता चला है कि सीआईए चीफ जॉन रैटक्लिफ इसी विमान से मॉस्को पहुंचे थे। सी-17 ग्लोबमास्टरः टैंक से सैनिकों तक इस्तेमाल- सी17-ग्लोबमास्टर अमेरिकी वायुसेना का भारी सैन्य परिवहन विमान है। इसका इस्तेमाल सैनिकों, टैंकों, सैन्य वाहनों और भारी सामान को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने के लिए किया जाता है। इसके अलावा इसका इस्तेमाल हवा से सामान गिराने, घायल सैनिकों को निकालने और आपदा के समय राहत सामग्री पहुंचाने में भी किया जाता है। यह लड़ाकू विमान या बॉम्बर नहीं है। इसकी रफ्तार करीब 834 किमी/घंटा है और यह करीब 3,500 फीट लंबी रनवे से भी उड़ान भर सकता है। इसकी एक खासियत यह भी है कि यह पीछे की ओर चल सकता है। भारत के पास भी 11 सी-17 ग्लोबमास्टर- भारत के पास सी-17 ग्लोबमास्टर के 11 प्लेन हैं। भारत ने 2011 में अमेरिका से 10 सी-17 ग्लोबमास्टर घ्घ्घ खरीदने का करीब 4.1 अरब डॉलर का सौदा किया था। पहला प्लेन जून 2013 में भारत पहुंचा और बाकी 9 विमानों की डिलीवरी 2014 तक पूरी हो गई। इसके बाद भारत को 2019 में 11वां सी-17 मिला। खास बात यह है कि यह प्लेन पहले से बना हुआ था और बोइंग के पास बिना किसी खरीदार के रखा था। भारत ने इसे अपनी जरूरत के मुताबिक तैयार करवाकर हासिल किया। भारत के सभी 11 सी-17 ग्लोबमास्टर भारतीय वायुसेना की 81 स्क्वाड्रन 'स्काई लॉर्ड्स' का हिस्सा हैं। इस यूनिट का बेस हिंडन एयरबेस में है। यमन से लेकर लद्दाख तक दिखा चुका है ताकत-यमन, 2015ः युद्ध के बीच सी-17 ने 2,096 लोगों को भारत पहुंचाने में मदद की। सूडान, 2023ः गृहयुद्ध के बीच करीब 24 घंटे चले रेस्क्यू मिशन में इसका इस्तेमाल हुआ। एक मिशन में 192 लोगों को निकाला गया। चीन सीमा के पासः 2018 में सी-17 ने अरुणाचल प्रदेश की टूटिंग एयरस्ट्रिप पर लैंड किया। यह जगह चीन की सीमा से करीब 30 किलोमीटर दूर है। प्लेन वहां करीब 18 टन सामान लेकर पहुंचा था। लद्दाखः ऊंचाई वाले इलाकों में सैनिकों और भारी सैन्य सामान को तेजी से पहुंचाने में सी-17 की अहम भूमिका रही है।

भागवत अमेरिका में, 29 को मेडिसन स्क्वेयर में कार्यक्रम, न्यूयॉर्क मेयर ममदानी बोले- आरएसएस की रैली को समर्थन नहीं

न्यूयॉर्क।इसमें सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी होंगी। अलग-अलग धर्मों और समुदायों से जुड़े लोग भी शामिल होंगे। न्यूयॉर्क मेयर ममदानी बोले- किसी को बाहर रखने वाली विचारधारा के खिलाफ-भागवत के कार्यक्रम से पहले न्यूयॉर्क के मेयर जोहरान ममदानी ने कहा कि वह आरएसएस की इस रैली का समर्थन नहीं करते।

जब ममदानी से पूछा गया कि क्या आरएसएस का कार्यक्रम रद्द किया जाना चाहिए, तो उन्होंने कहा- मुझे नहीं पता कि किसी निजी कार्यक्रम को रद्द करने का अधिकार शहर के पास है या नहीं।

ममदानी ने कहा- मैं न्यूयॉर्क का पहला भारतीय-अमेरिकी मेयर हूं। मेरे परिवार ने मुझे बहुलवादी और धर्मनिरपेक्ष भारत की तस्वीर दिखाई, जहां हर व्यक्ति के लिए जगह है।

किसी को बाहर रखने वाली विचारधारा का मैं विरोध करता हूं। न्यूयॉर्क भी हर रंग, धर्म और पृष्ठभूमि के व्यक्ति को बराबर जगह देने में विश्वास करता है। जोहरान ममदानी न्यूयॉर्क मेः- 'लोगों को अलग करने वाली सोच का बढ़ना बेहद चिंता की बात है। मैं ऐसी सोच का पूरी तरह विरोध करता हूं।'

अमेरिकी आयोग ने आरएसएस पर बैन की मांग की थी-भागवत के अमेरिका दौरे से पहले अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (यु.एस.सी.आई.आर.एफ़) ने आरएसएस पर बैन लगाने की मांग की है।

आयोग ने 19 अगस्त को अमेरिकी सरकार से आरएसएस नेताओं को हाई लेवल राजनयिक सुविधाएं नहीं देने और उनसे आधिकारिक मुलाकात नहीं करने की अपील भी की।

भारत ने यु.एस.सी.आई.आर.एफ़ की इन टिप्पणियों पर आपत्ति जताई।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने 20 अगस्त को आयोग को 'पक्षपाती संस्था' बताया था। उन्होंने कहा कि यु.एस.सी.आई.आर.एफ़ लंबे समय से भारत को लेकर गलत और भड़काऊ बयान देता रहा है, इसलिए उसकी बातों को गंभीरता से लेने की जरूरत नहीं है। रणधीर जायसवाल प्रवक्ता, विदेश मंत्रालयः- 'हम सभी जानते हैं कि यु.एस.सी.आई.आर.एफ़ एक पक्षपाती संस्था है। यह कई सालों से भारत के बारे में गलत और भड़काऊ बयान देती रही है। हमें ऐसी संस्थाओं को नजरअंदाज करना चाहिए, क्योंकि उनका अपना एजेंडा है और उनकी विश्वसनीयता नहीं है।'

तेलंगाना में बस और ट्रक की टक्कर, 6 की मौत, इनमें 5 महिलाएं, 12 घायल, ट्रक में रखे लोहे के पिलर बस में घुसे

सूर्यापेट। तेलंगाना के सूर्यापेट जिले में बुधवार सुबह एक इलेक्ट्रिक बस ने पीछे से ट्रक को टक्कर मार दी। हादसे में 6 लोगों की मौत हो गई, जिनमें 5 महिलाएं हैं। वहीं 12 लोग घायल हैं। बस में 43 यात्री सवार थे और यह हैदराबाद से आंध्रप्रदेश के एलुरु जा रही थी। हादसा सुबह करीब 5:15 बजे हैदराबाद-विजयवाड़ा नेशनल हाईवे पर कोडाड मंडल में हुआ। पुलिस ने बताया कि ट्रक में लोहे के भारी पिलर लदे थे। बस के ट्रक से टकराते ही पिलर को बांधकर रखने वाली चेन टूट गई।इसके बाद पिलर बस की दाईं तरफ जा घुसे। पुलिस के मुताबिक, बस के आगे बैठे लोगों की इसी वजह से मौत हुई। ट्रक के डिवाइडर से टकराने की आशंका- हादसे की वजह तेज रफ्तार होने की आशंका जताई है। बस की टक्कर से पहले ट्रक के सड़क के डिवाइडर से टकराने की भी आशंका है। पुलिस ने बताया कि घायलों में से दो की हालत गंभीर है। उन्हें बेहतर इलाज के लिए आंध्रप्रदेश के विजयवाड़ा के एक अस्पताल में भेजा गया है। तेलंगाना के सीएम रेवंत रेड्डी ने हादसे पर दुख जताया। उन्होंने मुख्य सचिव को घायलों को बेहतर चिकित्सा सुविधा देने के लिए जरूरी कदम उठाने का निर्देश दिया है।

लोकसभा सचिवालय ने 20 बागी टीएमसी सांसदों को नोटिस भेजा- 7 दिन में मांगा जवाब

नयी दिल्ली। लोकसभा सचिवालय ने बुधवार को तृणमूल कांग्रेस के 20 बागी सांसदों को नोटिस भेजे हैं। सांसदों से टीएमसी नेता अभिषेक बनर्जी की अयोग्यता याचिका पर 7 दिन में जवाब मांगा गया है। यह याचिका दल-बदल कानून के तहत दाखिल की गई है। नोटिस 25 अगस्त को जारी किए गए और इनमें बनर्जी की 18 जून की याचिका की कॉपी भी भेजी गई है। यह कार्रवाई सुप्रीम कोर्ट के बनर्जी की याचिका पर सुनवाई के लिए तैयार होने के एक दिन बाद हुई है। कोर्ट ने मंगलवार को 20 बागी सांसदों को नोटिस जारी किया था, लेकिन लोकसभा स्पीकर के कार्यालय और सदन के महासचिव को नोटिस जारी नहीं किया। याचिका में इन 20 सांसदों के नाम- अभिषेक बनर्जी ने पहले 20 सांसदों के खिलाफ अलग-अलग अयोग्यता याचिकाएं दाखिल की थीं। इसके बाद उन्होंने कार्यवाही जल्द पूरी करने की मांग की थी। बनर्जी की याचिका में शामिल सांसदों के नाम हैं- काकोली घोष दस्तीदार, सुदीप बंद्योपाध्याय, शताब्दी रॉय, प्रसून बनर्जी, रचना बनर्जी, जगदीश चंद्र बरमा बासुनिया, पार्थ भौमिक, अरूप चक्रवर्ती, अधिकारी दीपक देव, सयानी घोष, बापी हलदर, एमडी अबू ताहेर खान, कालीपद सारेन खेरवाल, असीत कुमार मल, जून मलियाह, मिताली बैग, खलीलुर रहमान, माला रॉय, शर्मिला सरकार और यूसुफ पठान। बनर्जी ने इस मुद्दे पर 12 अगस्त को लोकसभा स्पीकर से मुलाकात भी की थी। इससे पहले उन्होंने 27 जुलाई को स्पीकर को लिखित याद दिलाई थी। 20 सांसदों के एनसीपीआई में शामिल होने बाद शुरू हुआ विवाद-बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के 28 सांसदों में से 20 बागी सांसदों का गुट त्रिपुरा की नेशनलिस्ट सिटिजंस पार्टी (एनसीपीआई) में विलय हो चुका है। बागी गुट की नेता काकोली घोष दस्तीदार ने 17 जून 2026 को लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को पत्र सौंपने के बाद इसका ऐलान किया। उन्होंने कहा- हम पीएम मोदी के नेतृत्व में एनडीए के साथ काम करेंगे। बागी सांसद अलग गुट की मान्यता चाहते हैं-बागी सांसदों के समूह ने लोकसभा में अलग गुट के तौर पर मान्यता मांगी है। टीएमसी का कहना है कि ये सांसद उसके चुनाव चिह्न पर चुने गए थे। पार्टी के मुताबिक, किसी दूसरे राजनीतिक संगठन में शामिल होने का उनका फैसला दल-बदल कानून के प्रावधानों के तहत आता है।

डायरेक्टर कुकू कोहली पंचतत्व में विलीन, बेटी ने कंधा दिया, पत्नी अरुणा ईरानी को गजेंद्र चौहान ने संभाला, कई सेलेब्स पहुंचे

मुंबई। फिल्ममेकर कुकू कोहली का आज अंतिम संस्कार ओशिवारा श्मशान घाट में हुआ। जिसमें कई सेलेब्स पहुंचे। इस

दौरान गजेंद्र चौहान ने कुकू की पत्नी अरुणा ईरानी को संभाला। जो बहुत ज्यादा इमोशनल थीं। अंतिम संस्कार में विक्की कौशल, कटरीना कैफ, रोहित शेट्टी, राजपाल यादव, जावेद अख्तर और शबाना आजमी भी पहुंचे। कुकू कोहली का मंगलवार को 77 साल की उम्र में निधन हुआ था। उन्होंने मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल में आखिरी सांस ली। उन्हें हार्ट अटैक आया था। राज कपूर के साथ काम करके करियर शुरू किया-कुकू कोहली ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत राज कपूर की फिल्म बॉबी में असिस्टेंट के तौर पर काम करके की थी। उन्होंने कई साल उनके साथ रहकर फिल्म बनाने की बारीकियां सीखीं। बाद में वह फिल्म बेताब में सेकेंड यूनिट डायरेक्टर रहे। सनी देओल और अमृता सिंह स्टारर यह फिल्म हिट थी। इसके बाद उन्होंने अर्जुन में भी काम किया। 1991 में कुकू कोहली ने फूल और कांटे से बतौर डायरेक्टर शुरुआत की। फिल्म हिट रही और अजय देवगन को बॉलीवुड में पहचान मिली। इसके बाद उन्होंने कोहराम और सुहाग जैसी फिल्में बनाईं। सुहाग में अजय देवगन और अक्षय कुमार पहली बार साथ नजर आए थे। 1995 में उनकी फिल्म हकीकत रिलीज हुई। इसमें अजय देवगन और तब्बू थे। फिल्म को फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में सात कैटेगरी में नॉमिनेशन मिला। कुकू को बेस्ट डायरेक्टर के लिए भी नॉमिनेशन मिला। इसके बाद उन्होंने जुल्मी, अनाड़ी नंबर 1 और ये दिल आशिकाना जैसी फिल्में बनाईं। उनकी आखिरी फिल्म वो तेरा नाम था 2004 में रिलीज हुई थी। कुकू कोहली और अरुणा ईरानी ने गुपचुप शादी की थी-कुकू कोहली की दो शादियां हुई थीं। कुकू कोहली की पहली पत्नी का नाम रीता कोहली था। रीता कोहली और कुकू कोहली की दो बेटियां पूजा और करिश्मा थीं।वहीं, कुकू कोहली की दूसरी शादी एक्ट्रेस अरुणा ईरानी से हुई। दोनों की पहली मुलाकात फिल्म कोहराम के सेट पर हुई थी। शुरुआत में दोनों के बीच बिल्कुल नहीं बनती थी। हालांकि, काम के दौरान कुकू कोहली अरुणा का काफी ख्याल रखते थे। धीरे-धीरे उनकी दोस्ती बढ़ी और यही दोस्ती प्यार में बदल गई। जब अरुणा को कुकू से प्यार हुआ, तब उन्हें पता चला कि कुकू पहले से शादीशुदा हैं। उनकी पहली पत्नी रीता कोहली से दो बेटियां भी थीं। इसके बावजूद अरुणा ने कुकू के साथ रिश्ता आगे बढ़ाया। दोनों ने 1990 में शादी कर ली। हालांकि, उन्होंने कई साल तक अपनी शादी को सार्वजनिक नहीं किया। अरुणा ने बताया था कि वह कुकू की पहली पत्नी और उनके परिवार की परेशानियां नहीं बढ़ाना चाहती थीं। इसलिए उन्होंने अपने रिश्ते को निजी रखा।शादी के बाद अरुणा और कुकू ने बच्चे नहीं करने का फैसला लिया।

अरुणा ने कहा था कि उस समय उनकी उम्र और कुकू के पहले से बच्चों को देखते हुए उन्होंने यह फैसला लिया।

तिरंगा जैसे ड्रेस पर ट्रोलिंग के बाद उर्वशी रौतेला की सफाई, बोलीं- मैं देश को सिर्फ राष्ट्रीयता नहीं, अपनी पहचान के रूप में साथ रखती हूं

मुंबई। एक्ट्रेस उर्वशी रौतेला ने हाल ही में जयपुर में हुए मिस यूनिवर्स इंडिया 2026 के ग्रैंड फिनाले में पहने तिरंगा-प्रेरित गाउन पर उठे विवाद पर सफाई दी। उर्वशी ने कहा कि यह राष्ट्रीय ध्वज की हूबहू कॉपी नहीं थी, बल्कि तिरंगे से प्रेरित कॉउचर डिजाइन था। दरअसल, मिस यूनिवर्स इंडिया 2026 का ग्रैंड फिनाले 23 अगस्त को जयपुर के जी स्टूडियोज में

आयोजित हुआ। पूर्व मिस यूनिवर्स इंडिया उर्वशी रौतेला जजिंग पैनल का हिस्सा थीं। उनके साथ भारत की पहली मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन, मिस यूनिवर्स इंडिया 2024 रिया सिंघा, पर्यावरणविद और फिल्म प्रोड्यूसर प्रज्ञा कपूर और पूर्व मिस इंडिया यूनिवर्स व मिस यूनिवर्स रनर-अप सेलिना जेटली भी पैनल में थीं। कार्यक्रम के लिए उर्वशी ने तिरंगे से प्रेरित गाउन पहना था। इसके बाद सोशल मीडिया पर कुछ यूजर्स ने इसे लेकर आपत्ति जताई। एक यूजर ने लिखा कि भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को कपड़े के रूप में पहनना या ड्रेस मटेरियल पर सीधे प्रिंट करना फ्लैग कोड ऑफ इंडिया के तहत अनुमति नहीं है। अन्य यूजर्स ने भी इसे लेकर नाराजगी जताई। उर्वशी बोलीं- गाउन राष्ट्रीय ध्वज की हूबहू कॉपी नहीं- मामले को लेकर हिंदुस्तान टाइम्स के साथ बातचीत में उर्वशी ने कहा कि मैं अपने देश को सिर्फ अपनी राष्ट्रीयता के तौर पर नहीं, बल्कि अपनी पहचान के एक हिस्से के रूप में अपने साथ लेकर चलती हूं। मैं ऐसा कुछ पहनना चाहती थी, जो सिर्फ यह न बताए कि मैं कहां से हूं, बल्कि यह भी बताए कि मेरे लिए भारत का क्या मतलब है। इसी सोच से इस कॉउचर ड्रेस का आइडिया आया। उर्वशी ने कहा कि गाउन की सिल्हूट, रंगों की जगह, सजावट, डिटेलिंग और प्रोडक्शन को फैशन के तौर पर तैयार किया गया था। उनके मुताबिक, यह केवल तीन रंगों को ड्रेस पर लगाने के बारे में नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय भावना को कलात्मक अभिव्यक्ति में बदलने के बारे में था। विवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय ध्वज और इस गाउन में कई साफ अंतर हैं। उनके अनुसार, गाउन राष्ट्रीय ध्वज की हूबहू प्रतिकृति नहीं है, बल्कि तिरंगे से प्रेरित तत्वों का इस्तेमाल करके तैयार किया गया कॉउचर डिजाइन है। उन्होंने बताया कि इसमें कलर शेड्स, डायरेक्शन, प्रोपोर्शन, मटीरियल और सेंट्रल सिंबल में जान-बूझकर बदलाव किए गए थे। गाउन में तीन कलर और सर्कल जैसे सेंट्रल मोटिफ का इस्तेमाल किया गया है। उर्वशी के अनुसार, गाउन की हॉरिजॉन्टल कलर स्ट्राइप्स को वर्टिकल बनाया गया, एम्बलम को ज्वेलरी में बदला गया, और सीक्विन और फ्रिंज का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने कहा कि ऑरेंज असली केसरिया नहीं है, हरा एक अलग शेड है, और एम्बलम ऑफिशियल स्पेसिफिकेशन्स से अलग है। यह आउटफिट बेलारूसी डिजाइनर डारिया चेरमाशेंटसेवा के दशा फैशन कॉउचर ने डिजाइन किया था। भारतीय फ्लैग कोड-भारत सरकार का फ्लैग कोड ऑफ इंडिया, 2002 राष्ट्रीय ध्वज के इस्तेमाल से जुड़े नियम और प्रावधान बताता है। प्रिवेंशन ऑफ इंसल्ट्स टू नेशनल ऑनर एक्ट, 1971 के अनुसार, राष्ट्रीय ध्वज को किसी भी तरह की पोशाक या यूनिफॉर्म का हिस्सा नहीं बनाया जाना चाहिए और इसे कुशन, रूमाल, नैपकिन या किसी ड्रेस मटेरियल पर कढ़ाई या प्रिंट नहीं किया जाना चाहिए। कानून में यह भी कहा गया है कि राष्ट्रीय ध्वज को जानबूझकर जमीन, फर्श या पानी में छूने या घसीटने नहीं दिया जाना चाहिए।

मूवी रीव्यू

'टॉक्सिक':यश की फिल्म में स्टाइल, स्टारडम और एक्शन का पूरा ओवरडोज, लेकिन कहानी उलझी; तीन घंटे बाद सिरदर्द होता है

मुंबई। यश की फिल्म 'टॉक्सिक' में स्टाइल, स्टारडम और एक्शन का पूरा ओवरडोज है, लेकिन कहानी इतनी उलझी है कि तीन घंटे बाद सिरदर्द होता है। यश की 'टॉक्सिक' एक बड़े स्केल की गैंगस्टर फिल्म है, जिसमें ड्रग्स, परिवार, बदला, धोखा और खूब सारा एक्शन है। फिल्म का लुक शानदार है, यश का जलवा बरकरार है, लेकिन कहानी के मामले में फिल्म आपको पकड़ने के बजाय बार-बार उलझाती है। कहानी 1940 के दशक के गोवा की है, जहां ड्रग्स के कारोबार पर गैंग्स का कब्जा है। राया बने यश इसी दुनिया का बड़ा नाम है। परिवार में हुए धोखे और पुराने हिसाब-किताब के बाद कहानी उसके बेटे टिकट तक पहुंचती है, जहां बदले और गैंगवार का खेल शुरू होता है। आइडिया सुनने में दमदार है, लेकिन फिल्म इसे इतने किरदारों और इतनी तेजी से आगे बढ़ाती है कि कुछ देर बाद कहानी समझने से ज्यादा ये याद रखना मुश्किल हो जाता है कि कौन किसका आदमी है। फिल्म में एक्टिंग-यश इस फिल्म की सबसे बड़ी ताकत हैं। राया के किरदार में उनका स्वैग, लुक, बॉडी लैंग्वेज और स्क्रीन प्रेजेंस शानदार है। टिकट के रोल में भी उन्होंने अपने अंदाज को बदलने की कोशिश की है और कुछ सीन्स में उनकी परफॉर्मेंस वाकई असर छोड़ती है। नयनतारा, कियारा आडवाणी, हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया और रुक्मिणी वसंत जैसी बड़ी फीमेल स्टारकास्ट फिल्म में है, लेकिन

अफसोस कि इनके किरदार उतनी मजबूती से नहीं लिखे गए। इतने बड़े नाम होने के बावजूद ज्यादातर किरदार यश के आसपास ही घूमते रह जाते हैं। फिल्म में डायरेक्शन और स्क्रीनप्ले- गीतू मोहनदास ने फिल्म को छोटा सोचकर नहीं बनाया। सेट बड़े हैं, विजुअल्स रिच हैं और पूरी दुनिया को एक अलग अंदाज देने की कोशिश की गई है, लेकिन दिक्कत ये है कि डायरेक्टर ने कहानी से ज्यादा स्टाइल पर भरोसा कर लिया। स्क्रीनप्ले लगातार एक जगह से दूसरी जगह भागता है। किरदार आते हैं, गोली चलाते हैं, कोई मर जाता है और कहानी आगे बढ़ जाती है। लेकिन दर्शक के मन में एक ही सवाल घूमता रहता है ये हो क्यों रहा है? फिल्म की एडिटिंग-एडिटिंग भी काफी तेज है। एक्शन में इतने कट हैं कि रोमांच के बजाय कई जगह उलझन होने लगती है। फिल्म खूबसूरत जरूर दिखती है, लेकिन खूबसूरत दृश्य और अच्छी कहानी में फर्क होता है। फिल्म में सिनेमैटोग्राफी-यहां फिल्म को पूरे नंबर मिलते हैं। पुराने दौर का गोवा, शानदार सेट, कपड़े, रोशनी और एक्शन सीन मिलकर फिल्म को भव्य बनाते हैं। कई सीन ऐसे हैं, जिन्हें देखकर लगेगा कि फिल्म पर खूब पैसा खर्च हुआ है। लेकिन परेशानी वही है आंखों को फिल्म खूब पसंद आती है, दिमाग को कम। फिल्म में म्यूजिक- संगीत फिल्म की एक और कमजोर कड़ी है। रवि बसरूर का बैकग्राउंड स्कोर कई जगह माहौल बनाने के बजाय शोर पैदा करता है। हर बड़े सीन को भारी बनाने की कोशिश में संगीत इतना हावी हो जाता है कि कई बार सीन का असर ही दब जाता है। विशाल मिश्रा, रवि बसरूर और तनिष्क बागची जैसे नामों से उम्मीद काफी ज्यादा थी। गाने बुरे नहीं हैं, लेकिन उनमें भी लगातार शोर महसूस होता है। कुछ देर सुनने के बाद कान भी आराम मांगने लगते हैं-फिल्म को लेकर फाइनल वर्डिक्ट-'टॉक्सिक' में सब कुछ बड़ा है यश का स्टारडम, बजट, सेट, एक्शन और दृश्य। बस कहानी उस लेवल की नहीं है। फिल्म आपको बार-बार प्रभावित करने की कोशिश करती है, लेकिन मनोरंजन नहीं कर पाती। यश के कई पल शानदार हैं, मगर अकेला स्टारडम 3 घंटे 14 मिनट की फिल्म को नहीं खींच सकता।

कृति सेनन का राखी वाला विज्ञापन विवाद के बाद हटाया, राहुल गांधी ने एक्ट्रेस का समर्थन किया था

मुंबई। ज्वेलरी ब्रांड जीवा ने बुधवार को एक्ट्रेस कृति सेनन के विवादास्पद रक्षाबंधन विज्ञापन को हटा दिया है। विज्ञापन में कृति ब्रालेट-स्टाइल ब्लाउज, केप और ड्रेप्ड स्कर्ट पहने थीं। वे कुत्ते को भी राखी बांधती नजर आ रही थीं। इस पहनावे को लेकर कई लोगों ने आपत्ति जताई थी। एक्ट्रेस से सांसद बनीं कंगना रनोत ने भी कृति के पहनावे पर सवाल उठाए थे। जबकि, कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक्ट्रेस कृति का समर्थन किया था। जीवा ने विवाद बढ़ता देख आज कहा कि विज्ञापन हटा लिया गया है। यह फैसला भारतीय संस्कृति और परंपराओं के सम्मान में लिया गया है। जीवा ने कहा- हमारा इरादा भावनाएं आहत करना नहीं- जीवा ने कहा, 'एक ब्रांड के तौर पर हमारा हमेशा से मानना रहा है कि इन खुशी के पलों को पूरे परिवार के साथ मनाया जाए। इस बार उसका उद्देश्य पालतू जानवरों के साथ प्यार और जश्न को आगे बढ़ाना था। भावनाएं आहत करना हमारा इरादा नहीं था।' 'अगर हमारे हालिया विज्ञापन से समाज के कुछ हिस्सों की भावनाओं को अनजाने में ठेस पहुंची है, तो हमारा ऐसा कोई इरादा नहीं था। हमने उस विज्ञापन सभी मीडिया प्लेटफॉर्म से हटा लिया है।' ब्रांड ने त्योहार के मौके पर लोगों को प्यार और सकारात्मकता की शुभकामनाएं भी दीं।

उसे देख नहीं पाती तो बेचैनी होती हैं, और कोई अच्छा भी नहीं लगता, ये प्रेम तो नहीं या सिर्फ अट्रैक्शन

नोएडा। विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं बीएससी सेकेंड ईयर का स्टूडेंट हूं। मेरी क्लास की एक लड़की से मेरी काफी अच्छी दोस्ती है। हम साथ बैठकर पढ़ते हैं और अपनी पर्सनल बातें भी शेयर करते हैं। वीकेंड्स पर हम साथ घूमने भी जाते हैं। पिछले कुछ समय से मुझे महसूस हो रहा है कि मेरे मन में उसके लिए अलग तरह की फीलिंग्स आने लगी हैं। उसे देखते ही खुशी होती है, उससे बात न हो तो बेचैनी होने लगती है। मैं अक्सर उसके बारे में ही सोचता रहता हूं। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि ये सच में प्यार है या सिर्फ

अट्रैक्शन। मैं अपनी फीलिंग्स को कैसे समझूं और इस सिचुएशन में मुझे क्या करना चाहिए? जवाब- आप जीवन के उस पड़ाव पर हैं, जहां भावनाएं बहुत तीव्र होती हैं। इस उम्र में किसी की तरफ अट्रैक्ट होना, हर वक्त उसके बारे में सोचना, बेचैनी होना बहुत स्वाभाविक है। ये अच्छी बात है कि आप अपनी भावनाओं को लेकर अवेयर हैं और जल्दबाजी में किसी फैसले से पहले इसे समझना चाहते हैं। चलिए अब आपकी उलझन को सुलझाने की कोशिश करते हैं।प्यार और अट्रैक्शन में फर्क- प्यार और अट्रैक्शन के बीच

थिन लाइन होती है, दोनों पेट में तितलियों जैसा एहसास कराते हैं। हालांकि, इनके मायने थोड़े अलग हैं। अट्रैक्शन-यह आमतौर पर बाहरी चीजों पर निर्भर करता है। जैसे लुक, स्टाइल, बात करने का तरीका, हंसी या कोई खास टैलेंट। यह बहुत तेजी से होता है और कई बार बहुत तीव्र भी होता है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि टिकाऊ भी हो। प्यार- यह एक गहरा एहसास है, जो समय के साथ विकसित होता है। यह सिर्फ बाहरी सुंदरता पर निर्भर नहीं होता है। यह व्यक्ति के विचारों, उसके स्वभाव, उसकी अच्छाइयों-कमियों सबको स्वीकारने पर आता है। प्यार में स्थायित्व होता है और अक्सर लंबे समय तक टिका रहता है। ये प्यार है या आकर्षण? अपनी भावनाओं की गहराई नापने के लिए खुद से कुछ सवाल पूछें और ईमानदारी से उनके जवाब दें। यह कोई मनोवैज्ञानिक साइंटिफिक टेस्ट नहीं है। ये सवाल सिर्फ इसलिए है, ताकि आप खुद से पूछकर यह समझ सकें कि आप जो फील कर रहे हैं, वह प्यार है या आकर्षण। अगर सेक्शन 'ए' (प्यार) के ज्यादातर सवालों का जवाब 'हां' है तो इसका मतलब आप प्यार में हैं। अगर सेक्शन 'बी' (आकर्षण) के ज्यादातर सवालों का जवाब 'हां' है तो आपको आकर्षण है। यह वैल्यू जजमेंट की बात नहीं है। अगर प्यार है तो भी सुंदर है। अगर आकर्षण है तो भी उतना ही सुंदर है। अमूमन लोग अट्रैक्शन को 'कमतर' और प्यार को 'बड़ा' मानते हैं। लेकिन हकीकत यह है कि कई बार गहरे प्यार की शुरुआत एक छोटे से आकर्षण से ही होती है। इसलिए अपनी फीलिंग्स को जज न करें।नतीजे पर पहुंचने की जल्दी क्यों? इस वक्त में जो है, उसे महसूस करें- आपकी उम्र अभी सिर्फ 21 साल है। यह करियर बनाने और खुद को समझने का समय है। इतनी जल्दी किसी रिश्ते को 'प्यार' का नाम देकर खुद पर दबाव न डालें। इस वक्त जो है, उसे महसूस करें। दोस्ती बहुत अनमोल होती है। हो सकता है कि आप दोनों का यह तालमेल समय के साथ और गहरा हो जाए और स्वाभाविक रूप से प्यार में बदल जाए। ये भी हो सकता है कि यह रिश्ता सिर्फ एक अच्छी दोस्ती ही रहे। जो भी हो, उसे स्वाभाविक तरीके से होने दें। कुछ भी 'चेज' (पीछा) न करें या जबरदस्ती हासिल करने की कोशिश न करें। इसके साथ आपको यह भी समझने की जरूरत कि प्यार वो नहीं है, जो किताबों में अक्सर पढ़ने को मिलता है। प्यार वो नहीं, जो रोमांटिक किताबें हमें बताती हैं- फिल्मों और किताबों में प्यार को अक्सर विरह, तड़प, बेचैनी और पागलपन की तरह दिखाया जाता है। जबकि असल जिंदगी में प्यार का पैरामीटर बिल्कुल बुनियादी होना चाहिए। प्यार वो नहीं है, जो आपको कमजोर या असुरक्षित बनाए।

जब भी लगे प्यार है, खुद से पूछें ये सवाल-जिंदगी में जब भी ये कन्फ्यूजन हो कि ये प्यार है या नहीं, तो खुद से एक ही सवाल पूछें- 'जब मैं उसके साथ होता हूं, तो अपने बारे में कैसा महसूस करता हूं?' अगर किसी के साथ होकर आप खुद को ज्यादा बेहतर, ज्यादा आत्मविश्वास से भरे, ज्यादा सुरक्षित और खुश महसूस करते हैं, तो इसका मतलब कि वह एक हेल्दी रिश्ता है। अगर किसी के साथ आप खुद को इनसिक्योर, छोटा या परेशान महसूस करते हैं तो वह प्यार नहीं, बल्कि एक टॉक्सिक सिचुएशन हो सकती है।प्यार सिर्फ खुशी है, प्यार सुंदरता है, प्यार मौज है। प्यार दुख-दर्द, पीड़ा और बोझ नहीं है।अंतिम सलाह-अभी आप सिर्फ अपनी दोस्ती को एन्जॉय करें। एक-दूसरे को और बेहतर तरीके से जानें। वक्त को अपना काम करने दें। अगर यह सच्चा प्यार होगा तो यह समय की कसौटी पर खरा उतरेगा और आपको खुद-ब-खुद इसका जवाब मिल जाएगा। जल्दबाजी न करें, जर्नी का आनंद लें।

हसबैंड को दूसरी औरतें भी अच्छी लगती हैं, उन्हें ओपन रिलेशनशिप चाहिए, मुझे घुटन महसूस होती है, मैं क्या करूं

नयी दिल्ली। आज कल के परिवेश में रिश्तो का महत्व बहुत बदल गया हैं इसी तरह की समस्याएं अमूमन बहुत से घरो में देखने को मिलती हैं और इसी विषय को समझेंगे (एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर) जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मेरी उम्र 35 साल है। मैं बेंगलुरू में रहती हूं। मेरी शादी को तीन साल हो चुके हैं और पिछले दो साल से हम ओपन रिलेशनशिप में हैं। हमारी लव मैरिज थी, लेकिन हसबैंड इस बात को लेकर हमेशा ओपन थे कि उसे मेरे अलावा दूसरी महिलाएं भी अच्छी लग सकती हैं। पहले ये बात मुझे मजाक लगती थी, लेकिन फिर एक दिन उसने शादी को ओपन रिलेशनशिप की तरह ट्रीट करने की डिमांड कर दी। उसकी पर्सनैलिटी और चार्म ही ऐसा है कि वो हमेशा अपनी बातों से कन्विंस कर लेता है। मैं राजी तो हो गई, लेकिन वो सब कभी कर नहीं पाई, जो वो कर रहा है। ये उसका ही एकतरफा डिसिजन था, जो मुझ पर थोप दिया गया। अब मैं एक अजीब सी घुटन महसूस करती हूं। हमेशा स्ट्रेस में रहती हूं। मैं क्या करूं? एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर। सवाल पूछने के लिए आपका शुक्रिया। भारत में अधिकांश विवाह कमिटेड मोनोगैमी (एकनिष्ठ संबंध) ही समझे और माने जाते हैं। अगर शादी के बाद एक साथी ओपन रिलेशनशिप की डिमांड करे, तो यह केवल लाइफस्टाइल का मुद्दा नहीं रहता। यहां सहमति, पावर-बैलेंस और मेंटल हेल्थ जैसे बहुत से जरूरी और बुनियादी सवाल भी मौजूं हो जाते हैं। किसी भी स्वस्थ रिश्ते की बुनियाद आपसी सम्मान, अपनी स्वायत्तता और इच्छा से दी गई सहमति और फैसलों में बराबरी पर टिकी होती है। यदि इन चीजों में से कोई एक भी अनुपस्थित हो, तो रिश्तों में तनाव और असंतुलन पैदा हो सकता है। ऐसी परिस्थितियों की शुरुआत अक्सर हल्के-फुल्के मजाक के साथ होती है। एक पार्टनर मजाक में यह कह सकता है कि 'मुझे दूसरे लोग भी आकर्षक लगते हैं' या 'ओपन रिलेशनशिप का आइडिया भी कितना इंटरेस्टिंग हो सकता है।' साइकोलॉजी में इसे 'चेकिंग बाउंड्रीज' (सीमा चेक करना) कहा जाता है। मनोविज्ञान

में 'बाउंड्रीज चेक करने' का मतलब है, अपनी या दूसरे व्यक्ति की सीमाएं देखना, समझना, तय करना, उसे डिफाइन करना। कोई व्यक्ति पहले हंसी-मजाक में अपने विचार रखता है और दूसरे की प्रतिक्रिया देखता है। अगर दूसरा साथी इसे गंभीरता से नहीं लेता, तो धीरे-धीरे यही बात रीअल प्रपोजल में बदल सकती है। कई लोग बाद में सोचते हैं कि उन्होंने उस समय इस बात को गंभीरता से क्यों नहीं लिया। इसके पीछे कुछ सामान्य मनोवैज्ञानिक कारण हो सकते हैं। जैसेकि- कभी-कभी व्यक्ति रिश्ते को खोने से डरता है।कभी वह संघर्ष से बचना चाहता है। कभी उसे लगता है कि साथी को खुश रखना ज्यादा महत्वपूर्ण है। कई समाजों में यह भी सिखाया जाता है कि रिश्ते को बनाए रखने के लिए एडजस्टमेंट करना जरूरी होता है। परसुएशन या मैनिपुलेशनः एक बारीक रेखा- इसी तरह कई बार एक पार्टनर कहता है कि दूसरा पार्टनर हमेशा अपनी बातें मनवा लेता है। जैसाकि आपने भी अपने पार्टनर के लिए लिखा है, 'उसकी पर्सनैलिटी और चार्म ही ऐसा है कि वो हमेशा अपनी बातों से कन्विंस कर लेता है।' लेकिन यहां इस बात के गहरे निहितार्थ को समझना जरूरी है। इसका एक अर्थ यह हो सकता है कि पार्टनर का व्यक्तित्व बहुत प्रभावी है। लेकिन दूसरी संभावना यह भी हो सकती है कि वह इनडायरेक्ट तरीके से भावनात्मक दबाव बना रहा हो। या लगातार 'परसुएशन' कर रहा हो। परसुएशन का अर्थ है कि एक बात को अनेकों बार कहना, अनुनय-विनय, याचना करना और आखिरकार अपनी बात मनवा ही लेना। कई बार परसुएशन और मैनिपुलेशन के बीच की रेखा बहुत धुंधली होती है। व्यक्ति को बाद में यह महसूस होता है कि उसने सहमति तो दी थी, लेकिन यह सहमति वास्तव में उसकी अपनी मर्जी, खुशी और इच्छा से नहीं दी गई थी। जब कोई व्यक्ति कहता है कि निर्णय उस पर थोपा गया तो यह रिश्ते में पावर इंबैलेंस (शक्ति के असंतुलन) का संकेत हो सकता है। हेल्दी रिश्तों में महत्वपूर्ण फैसले बातचीत और आपसी सहमति से लिए जाते हैं। यदि किसी व्यक्ति को लगता है कि उसके पास सहमत होने के अलावा वास्तव में कोई दूसरा विकल्प नहीं है तो वह कई कारणों से पार्टनर के फैसले में हामी भर सकता है। जैसेकि- हो सकता है कि उसे रिश्ते के टूट जाने का डर हो। हो सकता है कि वह पार्टनर पर इमोशनली पूरी तरह डिपेंडेंट हों। हो सकता है कि उसमें आत्मविश्वास की कमी हो। हो सकता है कि वो खुद को बहुत कमजोर और वलनरेबल महसूस करता हो। ऐसी परिस्थितियों में लगातार घुटन और तनाव महसूस होना बहुत स्वाभाविक इमोशनल रिएक्शन है। अगर संबंधों में लंबे समय तक तनाव रहे तो इससे नींद की समस्या, एंग्जाइटी, इमोशनल फटीग, आत्मसम्मान में कमी जैसे अनुभव हो सकते हैं। ये सारे संकेत इस बात की ओर इशारा करते हैं कि व्यक्ति की भावनात्मक जरूरतें पूरी नहीं हो रही हैं। आपके सवाल ने बहुत से तथ्य साफ कर दिए हैं, लेकिन फिर भी आपकी स्थिति का मूल्यांकन आपसे बेहतर कोई नहीं कर सकता। आपको खुद से कुछ सवाल पूछने और अपना सेल्फ इवैल्यूएशन करने की जरूरत है। ये पहला कदम है। जब जमीनी स्थिति साफ समझ में आएगी तभी आप ये तय कर पाएंगी कि आगे आपको कौन-सा रास्ता चुनना चाहिए, कौन से फैसले करने चाहिए। तो आइए शुरू करते हैं।यहां पहला और सबसे जरूरी सवाल ये है कि आप अपनी मर्जी के खिलाफ जाकर ओपन रिलेशनशिप के लिए राजी क्यों हुईं। आपने हामी क्यों भरी। यह सवाल किसी तरह का आरोप नहीं है। यह अपने आत्म-मूल्यांकन का पहला सबसे जरूरी कदम है। मैंने सहमति दिए जाने के पीछे कुछ संभावित कारणों का ऊपर जिक्र किया है। लेकिन आपको अपना इवैल्यूएशन करके यह समझना है कि आपके फैसले के पीछे सबसे बड़ा और ठोस कारण क्या था। आपको सवालों को 1 से 10 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपको लगता है कि यह सबसे बड़ा और ठोस कारण था तो 10 नंबर दें और अगर आपको लगता है कि यह बहुत ही मामूली कारण था तो 1 नंबर दें। बहुत धैर्य और शांति से सोच-समझकर हर सवाल को नंबर दें और अंत में अपने स्कोर का मूल्यांकन करें। यदि आपका कुल स्कोर बहुत ज्यादा है तो यह इस बात का संकेत हो सकता है कि उस समय आपने जो निर्णय लिया, वह एक स्वतंत्र निर्णय नहीं था। वह अपनी मर्जी और खुशी से लिया गया फैसला नहीं था, बल्कि वह दूसरे व्यक्ति के डर या दबाव से प्रभावित फैसला था।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।